DCP No.: F2(H-4) PRESS/2014

राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

www.hellobhojpuri.com

हैलो भोजपुरी

HELLO BHOJPURI

माटी के महक

जुलाई, 2014

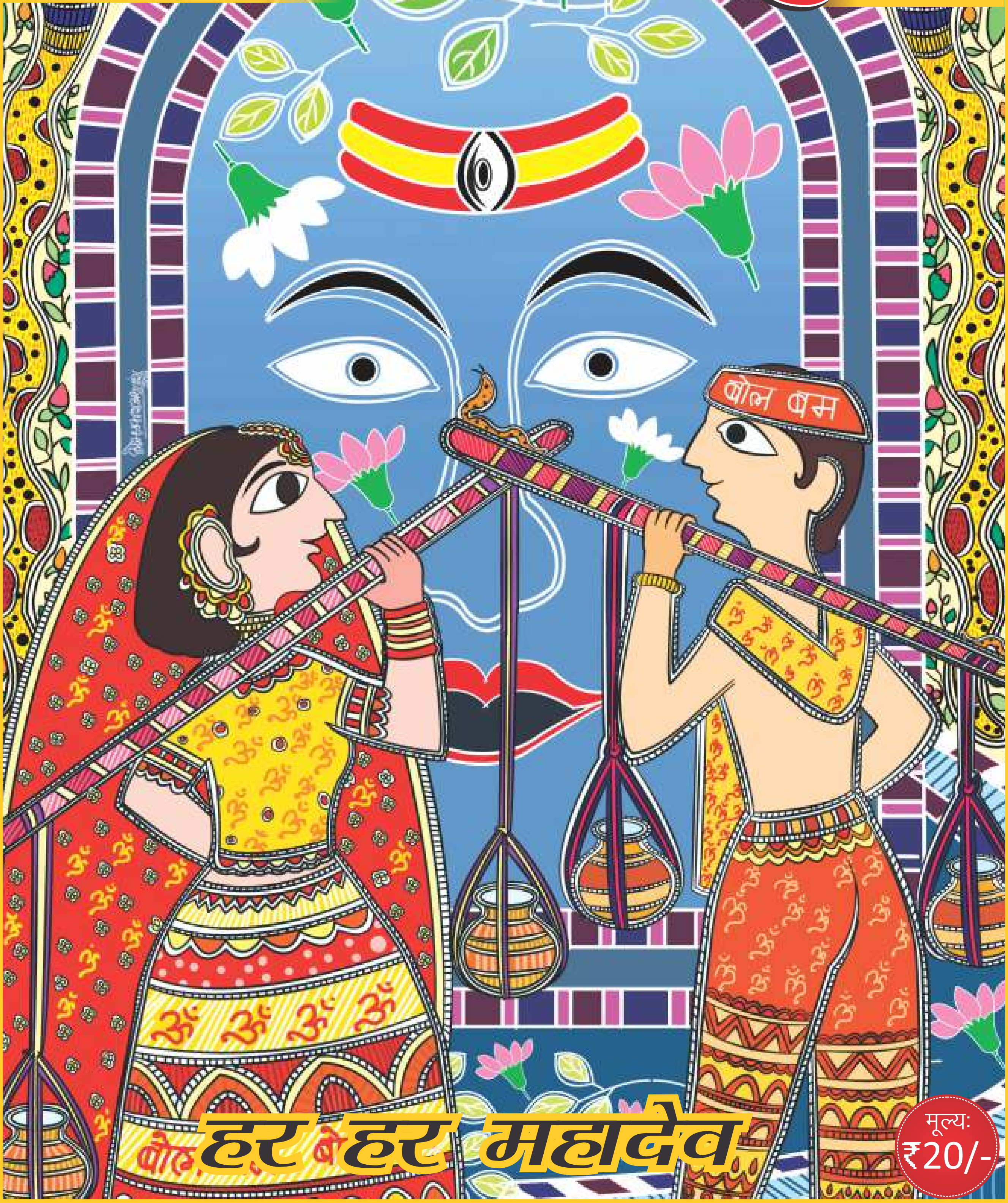

हर हर महादेव

मूल्य: ₹20/-

M A R K E T I N G

A Complete Solution of

★ Health ★ Skin Care ★ Hair Care

NATURAL • SAFE • EFFECTIVE

आहार ही उपचार है

ADVICE FOR HEALTHY LIFE

Regd. Off.: WZ-3, First Floor, Umdesh Bhawan, Palam Village, New Delhi--110045
Tel.: 91-9250006999, 91-9507171960, 7376680209
visit us at : www.abmmarketing.co.in E-mail : care@abmmarketing.co.in

*Customer Care Helpline : 91-9250006999

हेलो भोजपुरी
माटी के महक

प्रधान संपादक
राज कुमार प्रसाद
+91-78 3839 8788
hellobhojpuri@yahoo.com
***
परामर्श मंडल
प्रो. शत्रुघ्न कुमार , डॉ. रमाशंकर श्रीवास्तव
डॉ. राजेंद्र प्रसाद सिंह, डॉ. अलका सिंह
***
संपादक मंडल
नवल किशोर सिंह 'निशांत', राजेश कुमार मांझी
जय प्रकाश गिरी, राजेश भोजपुरिया
लवकान्त सिंह, अवधोश सिन्दुरिया
***
प्रबंध संपादक
शिवदास चतुर्वेदी
***
सेल्स एंड मार्केटिंग
अशोक मिश्रा
***
विशेष आभार
विपिन बहार
***
फीचर संपादक
आरिफ अंसारी , मनोज मजनूं
***
कानूनी सलाहकार
अशोक चैतन्या(अधिवक्ता सुप्रीम कोर्ट)
***
ग्राफिक्स
आर.के.राजपूत
***
आवरण कलाकृति
ओमप्रकाश अमृतांशु
***
क्षेत्रीय प्रतिनिधि
दिल्ली-श्याम कुमार मिश्रा, मुंबई-दिनेश सिंह, नासिक-प्रभाष मिश्रा, कोलकाता- प्रिंस ऋतुराज ,पटना- स्यंदन सुमन, उत्तर बिहार-कुंदन सिंह, वैशाली- अमित कुमार मिश्रा, प.चंपारण -मोहित दुबे, छपरा-सिवान-गोपालगंज - अभिनव कुमार ,एकमा-डॉ. एम.के.सिंह, सोनपुर- प्रभात कुमार- महाराजगंज- रमेश कुमार , जनता बाजार-सुरेश पंडित (लक्ष्मी आर्ट स्टूडियो), भगवानपुर हाट- गुरुचरण गुरु , बलिया- आनंद मोहन सिंह, आदित्य कुमार अंशु, गोरखपुर- अंगद यादव, पंजाब- सिमरनजीत सांडल
***
अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधि
मॉरीशस- कमला कुंजल,
बहरीन(खाड़ी देश)- परवेज लहरी,
सतेन्द्र कुमार सिंह
(उपरोक्त सभी पद अवैतनिक हैं)
***

प्रशासनिक कार्यालय
WZ-3, पहली मंजिल , उम्देश भवन, पालम गाँव, नई दिल्ली-११००४५
***
स्वामित्व, प्रकाशक व् मुद्रक राजकुमार प्रसाद की ओर से ए-3, विकासकुंज एक्स., मोहन गार्डन, उत्तम नगर,. नई दिल्ली-५९ से प्रकाशित एवं एशियन प्रिन्टवेल, २४० गाव नवादा न नजफगढ़ रोड, नई दिल्ली -५९ से मुद्रित

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री से प्रकाशक अथवा संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है. किसी भी वाद–विवाद के लिए न्यायिक क्षेत्र दिल्ली है।

अन्दर के पन्नों पर

निर्भया
निर्भया ज्योति ट्रस्ट ...08

आलेखः
लोक साहित्य में लोक संस्कृति .. 09

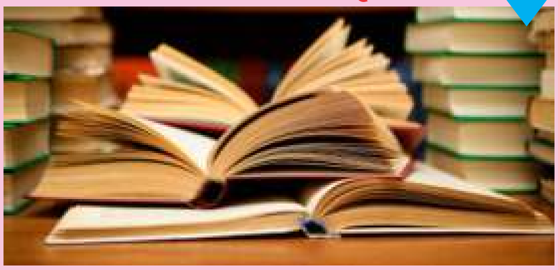

आवरण कथा
सावन में अमरनाथ धाम यात्रा..12

आमने–सामने
भोजपुरी में बढत अश्लीलता के जिम्मेवार .. 17

कहानी
बाबुजी चलीं ना .. 20

चोट
दहेजी दानव ..24

भोजपुरिया व्यंजन
आम के आचार ..40

यौन शिक्षा,कबो हं कबो नां...

> *“खासकर यौन शिक्षा स्कूल में एहसे ज्यादा जरुरी हो गईल बा की जब टेलीविजन, सिनेमा , इंटरनेट आदी के माध्यम से अश्लील आ भड़काऊ दृश्य आ संवाद लगातार परोसल जा रहल बा एहिसे एह जानकारी के माध्यम से नवजवान पीढ़ी के एह्सब कुप्रभाव से बचावे में सहायक साबित हो सकेला।”*

भारत के आत्मा गाँव में बसेला, आपन देश कृषि प्रधान देश ह एकरा संगे संगे इहो कहल जा सकेला की इहंवा आस्था हावी बा। एह देश में आजो कहीं डाईंन कहके सजा दिहल जाला त कहीं खाप पंचायत अपना बल प कानून के ठेंगा देखावे में पीछे ना हटेला। नालंदा विश्वविद्यालय के माध्यम से दुनिया भर के ज्ञान देवे वाला एह देश में आज एह बात खातिर बहस हो रहल बा की स्कुल में यौन शिक्षा दिहल जाव की ना देश के केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ.हर्षवर्धन के दिहल एगो बयान पर बवाल मच गईल की स्कुल में यौन शिक्षा ना दिहल जाव हालाँकि बाद में डॉ. हर्षवर्धन इहो सफाई देवे में देरी ना कईलन की उनकर ईशारा अश्लीलता के तरफ रहल ना की यौन शिक्षा पर।

यौन शिक्षा एगो बहुत संवेदनशील मुद्दा बा एहिसे सबसे पहिले त इ समझल जरुरी बा की आखिर यौन शिक्षा के मतलब का भईल। रउरा मालूम होखे के चाहीं की 2005 में केन्द्रीय माध्यमिक बोर्ड 'किशोरवय शिक्षा कार्यक्रम' शुरू कईलस। लेकिन राज्यन के इ छुट दिहल गईल की उ एकरा के अपनावे आ चाहे नकारे। नतीजा इ भईल की ज्यादातर राज्य एह कार्यक्रम के अपना किंहा लागू ना कईलन।

हालाँकि यौन शिक्षा के मतलब खाली यौन शिक्षा ना बल्कि एकरा सगे संगे मादक पदार्थ के कुप्रभाव , एड्स के खतरा , खतरनाक व्यवहार व जीवन के बेहतर बनावे के शिक्षा भी शामिल होला। चूँकि हमनी के परंपरागत समाज में सार्वजनिक रूप से यौन चर्चा वर्जित बा, एहिसे क्लास में अईसन चर्चा प केतना परिवार में असहज स्थिति पैदा हो जाला।

लेकिन इहो हो सकेला की सतर्कता, गंभीरता आ सामाजिक सांस्कृतिक संवेदनशीलता के ख्याल राख के अईसन जानकारी लईकन के दिहल जाव त एहसे ओह छात्रन के शरीर, स्वास्थ्य, आ वातावरण के लेके उपयोगी जागरूकता आ सकेला। खासकर यौन शिक्षा स्कूल में एहसे ज्यादा जरुरी हो गईल बा की जब टेलीविजन, सिनेमा , इंटरनेट आदी के माध्यम से अश्लील आ भड़काऊ दृश्य आ संवाद लगातार परोसल जा रहल बा एहिसे एह जानकारी के माध्यम से नवजवान पीढ़ी के एह्सब कुप्रभाव से बचावे में सहायक साबित हो सकेला।

एहिसे स्कूलन में यौन शिक्षा जरुर लागू होखे बाकिर एह बात के ध्यान रखल जाव की ओकर स्वरुप अश्लील ना होके अईसन होखे जवन वैज्ञानिक आ सांस्कृतिक रूप से स्वीकार कईल जा सके।

यौन शिक्षा के मतलब इ ना हो जाव की विवाद उत्पन हो जाव।

हमार आपन सोच बा की यौन शिक्षा आ चाहे यौन जागरूकता इ एगो सार्वजनिक मुद्दा ना होके व्यक्तिगत मामला बनत जा रहल बा जवन लड़िकन के मानसिकता आ स्वास्थ्य के अनुरूप अलग–अलग उमर में अलग अलग भावना के जगा रहल बा। अब जरुरत एह बात के बा की अईसन भावना उम्र के तकाजा के चलते दूषित वातावरण से प्रभावित ना होखे। अगर संभव होखे त भारतीय समाज आ नैतिक मूल्यांकन के बाद एकरा के स्कुल में लगावल जाव। हो सके त एह शिक्षा के नाम यौन शिक्षा के बजाय "स्वास्थ्य विज्ञान" के नाव से पाठ्यक्रम में राखल जा सकेला। हम त इहे कहब की यौन शिक्षा जरुर लागु होखे बाकिर ओकरा शब्दावली आ ओकरा के परोसे के तरीका साफ–सुथरा होख। एह मुद्दा पर बारीकी से गौर कके यौन शिक्षा के भविष्य तय कईल जाव त ज्यादा नीमन लागी।

आ अंत में हमेशा के तरे हम त इहे कहब की भोजपुरी पढीं, भोजपुरी लिखीं आ भोजपुरी बोलीं , प्रणाम।

राज कुमार प्रसाद
(आर. के. अनुरागी)

चिट्ठी आईल बा

३४ बरीस बाद खिलल कमल

जून वाला अंक बहुत निक लागल. खासकर के मोदी जी वाला कवर पेंटिंग खातिर अमृतांशु जी के बधाई. उन्हाके हेलो भोजपुरी खातिर हर अंक में अपना पेंटिंग के जवन नमूना पेश कर रहल बानी उ बेमिशाल बा. संपादकीय में भी दिन प दिन निखार आ रहल बा राज कुमार जी के.हम इहे सुझाव देहब की रउरा तानी पत्रिका के प्रकाशन समय प ध्यान देवे के जरुरत बा. ताकि पत्रिका पाठक वर्ग तक समय से पहुंचे . धन्यवाद्.

हरिशरण राय , पश्चिम चंपारण , बिहार

. - . - . - . - .

एह नेक काम खातिर बधाई

संपादक जी सबसे पहिले भोजपुरी भाषा के प्रति एतना लगाव आ अईसन खुबसूरत पत्रिका निकाले खातिर रउरा आ राउर पूरा टीम बधाई के पात्र बा. हम अपना चाची के ईलाज खातिर बनारस गईल रहनी , हास्पिटल में बईठल बईठल मन अगुता गईल त बाहर ईगो किताब के दोकान प गईनी की कवनो पत्रिका ले आईं टाएम पास खातिर , ओह दुकान प हेलो भोजपुरी हमरा लौउकल हालाँकि उ होली वाला अंक रहे लेकिन जब हम पढ़नी त मन खुश हो गईल . एह पत्रिका में जवन साहित्यिक रचना बा उ बेजोड़ बा, कहीं से इ पत्रिका में कवनो कमी नईखे लौकत .हम उम्मीद करतानी की रउरा पत्रिका के अईसने स्तर आगे भी बनल रही.

किरण कुमारी , सहाजितपुर , सारण , बिहार.

. - . - . - . - .

सारण के शान

हेलो भोजपुरी के जून अंक में सारण के शान अम्बिका भवानी के शामिल करके रउरा समस्त भोजपुरिया समाज के धन्य क दिहनी . लावकांत जी के रचना में आमी के एह भवानी के साक्षात दर्शन महशुस भईल . हम रउरा से निहोरा करब की कबो थावे के भवानी पर भी आलेख रउरा पत्रिका में आवे. हम एगो छोट गायक कलाकार बानी आ अम्बिका भवानी के बारे में बहुत बढियां जानकारी मिलल जवन हमरा खातिर काफी अहम बा.एक बार फेर लावकांत जी के एह सुन्दर रचना खातिर बधाई.

गायक जेपी अकेला ,बनियापुर , सारण बिहार.

. - . - . - . - .

मुंह में पानी आ गईल

हम पहिला पत्रिका देखनी भोजपुरी के जवना हर अंक में एगो अलग भोजपुरिया पकवान के चर्चा रहत बा. करईला के भरुआ के बार में पढ़ के मुंह में पानी आ गईल आ तुरंते मेहरारू से कहनी की आज करईला के भरुआ जरुर बने के चाहीं , सांझी खान करईला के भरुआ बनल आ मज़ा आ गईल . हमरा कहे के इ मतलब की एह पत्रिका के टैग लाइन बा माटी के महक , उ कहीं न कहीं पकवान वाला कॉलम के ध्यान में राख के बनावल गईल होई अईसन बुझाता. एह खुशबूदार पत्रिका खातिर पूरा टीम के बधाई .

उमेश कुमार सिंह–रुकुंदीपुर , सिवान बिहार.

. - . - . - . - .

यात्रा वृतांत आनंदमय रहल

हेलो भोजपुरी के जून अंक में यात्रा वृतांत पढ़ के आनंदमय लागल अपना देश में अईशन सुन्दर आ मनभावन पर्यटन स्थल भी उपलब्ध बा जवना के घुमला के बाद धरती पर स्वर्ग के अनुभव होखेला.

लाखो रूपया खर्चा कके विदेश घुमला से अच्छा बा की अपने देश में विदेश के मजा लिही. वर्ष सिंह जी एह मामला में भाग्यशाली बाड़ी जे उनका अईसन पर्यटन के आनंदमय सफ़र के मौका मिलल. राजेश जी के तीत शर्बत खातिर बधाई. अमृतांशु जी के कवर पेंटिंग खातिर स्पेशल बधाई.

मोहन कुमार मांझी दृसलेमपुर ,यूपी

. - . - . - . - .

भोजपुरिया माटी आ मिठास

हेलो भोजपुरी पत्रिका में भोजपुरिया माटी आ मिठास पढ़ के नीमन लागल . गजाधर जी के रचना में संचाहूँ भोजपुरी माटी के दमदार बखान बा.खासकर के लाठी के कईगो रूप में बखान हमरा नीमन लागल आ जानकारी मिलल की भोजपुरी अथाह शब्द भंडार वाला भाषा बा. एह निक पत्रिका के पढ़के हम बहुत खुश बानी आ हमरा अब उम्मीद बा की आगे भी भोजपुरिया मिठास के सुंगंध एह पत्रिका से मीलत रही. प्रणाम .

सुनील कुमार सिंह ,बोरिंग रोड पटना

भोजपुरी को संवैधानिक मान्यता के लिए एक बार फिर मांग

जय प्रकाश गिरी

हेलोभोजपुरी: भोजपुरी समाज दिल्ली' द्वारा दिनांक १० जून २०१४ को दिल्ली स्थित कांस्टीट्यूशन क्लब में १६वीं लोकसभा के नवनिर्वाचित भोजपुरी भाषी पूर्वांचल क्षेत्र के संसद सदस्यों का अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। इस समारोह में सांसद श्री

जगदंबिका पाल, मनोज तिवारी, विरेन्द्र सिंह मस्त, उपेन्द्र जी, हरिश चन्द्र दवेदी, रविन्द कुशवाहा, सलेमपुर, कुंवर हरवंश सिंह, प्रतापगढ़, छोटे लाल जी रोबर्ट्स गंज आदि सांसद उपस्थित थे। इस अवसर पर बोलते हुए श्री जगदंबिका पाल ने कहा कि हमलोग भोजपुरी भाषा को संविधान मे आठवी अनुसूची में शामिल करने के लिए पहले भी प्रयासरत थे और इसके लिए हमलोग भोजपुरी समाज के अध्यक्ष अजीत दुबे जी तथा कुछ सांसद पहले भी श्री चितंबरम् से भी मिल चुके हैं लेकिन दुर्भाग्य कि बात यह है कि सदन के पटल पर नहीं लाया जा सका। इस बार भोजपुरी प्रदेश के २० करोड़ भोजपुरी भाषियों ने स्वयं बनारस से देश के सबसे बड़े नेता तथा वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द भाई मोदी को चुन कर भेजा है और वर्तमान १६वीं लोकसभा में भोजपुरी भाषियों का बहुत बड़ा योगदान दिया है। इस बार अवश्य इस भाषा को संविधान के आठवीं अनुसूची में शामिल किया जायेगा। प्रख्यात भोजपुरी गायक, भोजपुरी नायक, तथा दिल्ली उत्तर–पूर्व दिल्ली के सांसद मनोज तिवारी ने कहा कि यह बहुत बड़ी बात नहीं है और हम सब इसका नेतृत्व करेंगे और इस बार भोजपुरी भाषा को संविधान के आठवीं अनुसूची मे शामिल करा कर ही दम लेना है। यह हमारी पहलि प्राथमिकता होगी। श्री विरेन्द्र सिंह मस्त, भदोही, के सांसद ने कहा कि पहले हम सब भोजपुरी भाषियों को अपनी भाषा को सम्मान देना होगा और मम्मी–डैडी वाला भाषा को छोड़कर 'माई–बाबुजी' वाला भाषा बोलना होगा। आज भोजपुरी भाषा किसी परिचय की मोहताज नहीं है। इसके योगदानों में भगवान श्री राम चंन्द्र से लेकर वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का गुणगाण किया जाय तो सारे ग्रंथ फेल हो जायेंगे। सांसद छोटेलाल जी ने कहा कि आज भोजपुरी भाषा का परचम सिर्फ भारत के मेट्रो शहर दिल्ली, कोलकता, मुंबई, चेन्नई में ही नहीं बल्कि विदेशों तक है। मॉरिशस, जावा, सुमात्रा, नेपाल, दुबई भोजपुरी कहां नहीं बोली जाती है। इस भाषा के लिए हमलोग तुरंत ही एक भोजपुरी भाषा मंडल भारत के गृह मंत्री से मुलाकात कर इस बात को रखेंगें। श्री मनोज तिवारी, रविनद्र कुशवाहा, और विरेन्द्र सिंह ने कहा कि भोजपुरी भाषा को आठवीं अनुसूची के अभाव में हमलोग भोजपुरी भाषा में शपथ नहीं ले सके लेकिन अगली लोकसभा में इसकि कमीं नही खलेगी।

नवनियुक्त प्रधानमंत्री श्री नरेन्द मोदी को अध्यक्ष, भोजपुरी समाज दिल्ली श्री अजीत दुबे ने एक पत्र लिखकर पहले हीं इस बात के लिए अवगत करा चुके हैं। भोजपुरी भाषा २० करोड़ भारतिय कि भाषा है और इसका विस्तार लगभग १२६ जिलों में है फिर भी यह भाषा संवैधानिक मान्यता से वंचित है। जबकि दुसरी ओर इससे कम जनसंख्या वाला भाषा उड़िया, संस्कृत, तेलुगू, तमिल। कन्नड़ व मलायालम को इसकि मान्यता मिल चुकी है और भोजपुरी सिसस सिसक कर क्रंदन कर रही है। १४ जुन २०११ को भोजपुरी भाषा को मॉरिशस कि सरकार अपने यहां संवैधानिक मान्यता प्रदान कर चुकी है। इसकी मान्यता के लिए १९६९ में चौथी लोकसभा में सासद श्री भोगेन्द्र झा ने एक प्राइवेट बिल के रुप में इस सवाल को उठाया था।

कार्यक्रम के दौरान समाज के बारे में जानकारी समाज के महामंत्री एल०एस० प्रसाद ने दी। कार्यकर्म का संचालन प्रो० संजीव तिवारी ने किया तथा धन्यवाद प्रस्ताव चंद्रशेखर राय ने दिया। समारोह में भोजपुरी समाज के उपाध्यक्ष अरविंद दुबे, लल्लन तिवारी, प्रदीप पाण्डेय, संयोयक विनयमणि त्रिपाठी, मंत्री सर्वेश तिवारी, संतोष ओझा, जितेन्द्र तिवारी, सुभाष सिंह, राकेश परमार, कार्यालय मंत्री देवकांत पांण्डेय, सांस्कृतिक मंत्री वी०पी० सिंह आदि सहित अनेक कवि, लेखक, वकिल, अध्यापक, समाजसेवी, पत्रकार व अन्य बुद्दिजीवी उपस्थित थे। कार्यकर्म के प्रारंभ में इंडियन स्कूल ऑफ म्यूजिक के कलाकारों द्वारा देशभक्ति गीत प्रस्तुत किए गए।

संविधान के आठवीं अनुसूची में भोजपुरी के शामिल होने के बाद भोजपुरिया भाषियों को इससे होने वाले फायदे की एक सूची भोजपुरी लोगों में वितरित की गई।

संविधान के आठवी अनुसूची की मांग करने के साथ साथ अलग पूर्वांचल राज्य की भी मांग की गई । समाज के अध्यक्ष अजित दुबे जी ने कहा की भाजपा हमेशा से छोटे राज्यों की पक्षधर रही है , और अटल जी के समय में चार राज्य अलग बनाये गए थे. भोजपुरी के विकास के लिए अलग पूर्वांचल राज्य की सख्त जरुरत है। और उम्मीद है भाजपा इसे गंभीरता से लेगी।

* * *

1000 रुपिया के नगद ईनाम

ज्ञान गंगा प्रतियोगिता न. 9

प्रश्न 1. वर्तमान लोकसभा चुनाव में नितीश कुमार के पार्टी जेडीयू के केतना सिट मिलल बा ..?

क. 85 ख. 383 ग. 2 घ. -90

प्रश्न 2. शीला दीक्षित कहाँ के राजपाल बाड़ी-?

क. बिहार ख. दिल्ली ग. असम घ. केरल

प्रश्न 3. गुजरात के राजधानी कहाँ ह ..?

क. पटना ख. सूरत ग. अहमदाबाद घ. गाँधी नगर

प्रश्न 4. मनोज तिवारी के पहिला भोजपुरी फिलिम के नाम बताईं?

क. परदेश ख. दामाद जी ग. ससुरा बड़ा पईसावाला घ. मर्द

प्रश्न 5. चले के लूर ना अंगनवे टेढ़......के मतलब का भईल ?

....

नांव ....

उम्र .... फोन नं. ....

पूरा पता ....

....

सभ प्रश्न के सही उत्तर लिखला के बाद आपन नांव, उम्र, फोटो, पूरा पता आ फोन न. लिख के नीचा लिखल पता पर भेज दिहीं। सही उत्तर देवे वाला विजेता के नांव लक्की ड्रॉ से निकालल जाई आ अगिला अंक में प्रकाशित कईल जाई।

सेवा में

हेलो भोजपुरी

WZ-3 , पहली मंजिल, उम्देश भवन, पालम गांव,

नई दिल्ली-110045

बिटिया के लोग काहे बुझेला पराई .

बिटिया के लोग काहे बुझेला पराई .
कबले जमाना इहां , बेटी के सताई..

पुछतानी रउरा से हमके बताईं..२
बिटिया के लोग काहे बुझेला पराई.
पुछतानी रउरा से हमके बताईं..२
कबले जमाना इहां , बेटी के सताई..

बेटी रामकृष्ण , वाहेगुरु जन्मावेली
बेटिये मोहम्मद ईशु धरती पे लावेली
.

बिना इनके सृष्टि कईसे आगे चली
पाई.
बिटिया के लोग काहे बुझेला पराई.
पुछतानी रउरा से हमके बताईं..२
कबले जमाना इहां , बेटी के सताई..

इनही से पैदा क्रन्तिकारियन के
टोलिया.
लिहलें आजादी खाके सीनवा पर
गोलिया..
भईली शहीद बेटी रानी लक्ष्मीबाई .
बिटिया के लोग काहे बुझेला पराई.
पुछतानी रउरा से हमके बताईं..२
कबले जमाना इहां , बेटी के सताई..

जेकरा से बाटे दीदी , बहिना के
नाता.
ओकरे से रेप काहे , होता ए
बिधाता .
भरल समाज इहवां , केहू दे बताई.
बिटिया के लोग काहे बुझेला पराई.
पुछतानी रउरा से हमके बताईं..२
कबले जमाना इहां , बेटी के सताई..

रहिहें ना बिटिया त के बनी माई ..
कईसे बिरेन्द्र मुंह बेटी के देखाई .
पुछतानी रउरा से हमके बताईं..२
सोंची कईसे बिटियन के करजा
भराई ...
बिटिया के लोग काहे बुझेला पराई.
..............डॉ..बी.के.मिश्रा

निर्भया ज्योति ट्रस्ट के कार्यकारिणी का गठन

देश की बहादुर बेटी निर्भया के नाम पर उसके माता–पिता द्वारा स्थापित ''निर्भया ज्योति ट्रस्ट'' की कार्यकारिणी समिति का गठन किया गया। दिनांक २३ जून को आयोजित निर्भया ज्योति ट्रस्ट के सदस्यों की बैठक में १४ सदस्यीय कार्यकारिणी समिति का गठन किया गया जो ट्रस्ट द्वारा की जाने वाली हरेक गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। आपको जानकारी होगी की दिल्ली में वसंत विहार सामूहिक दुष्कर्म की शिकार निर्भया के माता–पिता ने पिछले वर्ष सितम्बर में निर्भया ज्योति ट्रस्ट का पंजीकरण कराया था. इसी वार्स १० मई २०१४ को निर्भय के २६ वें जन्म दिवस के अवसर पर दिल्ली के मावलंकर हॉल में आयोजित एक पुष्पांजलि सभा में तेजाब हमले की शिकार लक्ष्मी ने ट्रस्ट की बेवसाईट लंच किया था। इस अवसर पर तत्कालीन विदेश मंत्री डॉ. सलमान खुर्शीद , पहली महिला आइपीएस किरण वेदी, दिल्ली की पूर्व मंत्री किरण वालिया सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे।

२३ जून को आयोजित समिति की बैठक में १४ सदस्यों के पदों की घोषणा की गई । इस बैठक में निर्भया के माता –श्रीमती आशा देवी व पिता– श्री बद्रीनाथ सिंह के आलावा राज कुमार प्रसाद , आर.एन. राय, राजेश मांझी , सबिता चतुर्वेदी लव कान्त सिंह, डॉ. एस.पी. मेहता इत्यादि सदस्य उपस्थित थे।

निर्भया ज्योति ट्रस्ट की ये नवनियुक्त टीम इस प्रकार हैं-

1. **श्रीमती आशा देवी**– ट्रस्टी व राष्ट्रीय अध्यक्ष
2. **श्री राज कुमार प्रसाद**– राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
3. **श्री बद्री नाथ सिंह**– ट्रस्टी व राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
4. **श्रीमती सबिता चतुर्वेदी**– राष्ट्रीय सचिव
5. **श्रीमती प्रिया हिंगुरानी**– कानूनी सलाहकार
6. **श्री आर.के.शुक्ला**– वित्तीय सलाहकार
7. **श्री आर.एन.राय**– राष्ट्रीय कॉर्डिनेटर
8. **श्री राजेश मांझी**– राष्ट्रीय कॉर्डिनेटर
9. **डॉ. अल्का सिंह**– राष्ट्रीय कॉर्डिनेटर
10. **डॉ. एस.पी.मेहता**– राष्ट्रीय कॉर्डिनेटर
11. **पं. रतन वशिष्ठ**– संरक्षक
12. **श्री लवकांत सिंह**– मिडिया कॉर्डिनेटर
13. **श्री मनोज कुमार राय**– सदस्य
14. **कु. रीतू साह**– सदस्य

अपील

निर्भया ज्योति ट्रस्ट की सदयस्ता पुरे देश भर में शुरू हो चुकी है . आप भी इस ट्रस्ट के सदस्य बने और अपने साथियों को भी जुड़ने के लिए प्रेरित करे ताकि एक नेक काम में आपकी भी भागीदारी सुनिश्चित हो सके। सदस्यता सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए संपर्क करे–**+91-9911085877**या हमारी वेबसाईट– www.nirbhayajyoti.com देखें । धन्यवाद ।

निवेदक–
आशा देवी
संस्थापक व अध्यक्ष
निर्भया ज्योति ट्रस्ट

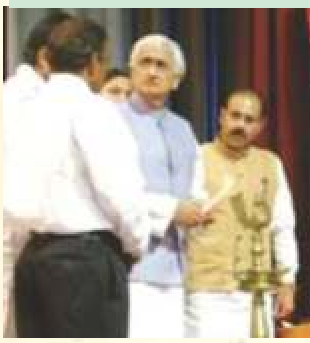

लोक साहित्य में लोक संस्कृति

अभिषेक भोजपुरिया

संस्कृति के सम्बंध मनुष्य के संस्कार के संशोधन से बा। मनुष्य निमन बनो, ओकरा भावना के परिष्कार होखे, ओकरा में देवत्व के विकार होखे आ राक्षसीपन खतम होखो, ओकर हृदय विशाल आ निर्मल होखो, ई सब विषय आ बात के संस्कृति कहल जाला।
– डा0 विश्वनाथ प्रसाद वर्मा

प्राचीन भारतीय साहित्य के देखला से ई साफ साफ पता चलता कि वैदिक काल में एह देश में दुगो संस्कृति के धारा बहत रहे।

1 शिष्ट संस्कृति

2 लोक संस्कृति

शिष्ट संस्कृति से मतलब अभिजात वर्ग के संस्कृति से बाटे, जे बौद्धिक विकास के चोटी पर बइठ के समाज के दिशा निर्देश करत रहे। जेकरा संस्कृति के श्रोत वेद बा शास्त्र रहे।

लोक संस्कृति से तात्पर्य जन साधारण के संस्कृति से बाटे, जवन अपना संस्कृति के संचय लोक से कर के लोके खातिर समर्पित बा। पंडित बलदेव उपाध्याय जी लिखले बानीं कि– ''दुनू संस्कृति के बीचे सहयोग जरूरी बा। लोक संस्कृति शिष्ट संस्कृति में सहायक होला। अथर्ववेद लोक संस्कृति के परिचायक बा त ऋगवेद शिष्ट संस्कृति के।'' एह से पता चलत बा कि लोक संस्कृति के पुरान परम्परा रहल बा, जवन संस्कृति पाली अपभ्रंस से होते भोजपुरी तक के सफर तय कइले बा।

प्रसिद्ध विद्वान सोफिया बर्ण के दृष्टि में ''लोक साहित्य लोक संस्कृति के एगो भाग ह। लोक साहित्य यदि बर के गाछ ह त लोक साहित्य ओकर एगो डेहुंगी। लोक संस्कृति अगर शरीर ह त लोक साहित्य ओकर अंग। लोक साहित्य के विकास ब्यापक बाटे। साधारण जनता जवना शब्दन में रोवेला गावेला आ हंसेला उ लोक साहित्य ह।'' ग्रीम ठीके कहले बाड़न– ''A ballad is the poetry of the people by the people for the people.''

एन्ड्रफलेचर लिखले बाड़न– ''If a man is permitted to make all the ballads, He need not care who should make the laws of nation.'' (लोक गितन के रचना के अज्ञा मिल जाव त एह बात के चिन्ता करे के जरूरी ना रह जाई कि ओह देश के कानून के बनावेला।)

भोज

पुरी के लोक संस्कृति उजागर भइल बा। भोजपुरी सोहर में एगो मंगल गीत बा– **''बाजे लागी आनन्द बधाईया गावहू सखि सोहर।''** भारत गॉवन के देश ह जवना के संस्कृति में मंगल के प्रधानता बा। तुलसी दास जर अपना रामचरित मानस में मंगल गीत के चर्चा कइले बानीं– **''गावहीं मंगल मंजुल बानी। सुनी कलख कल कंठ लजानी।।''** भोजपुरिया संस्कृति में संतान के ललसा बड़ा तीख पावल जाला। औरत लोग गावेला– **''रूनुकी झुनुकी हम बेटी एगो मांगिले, गोर जांते के पतोह ए छठी मइया।''** हमनी के देश में बिआह एगो धार्मिक प्रथा मानल जाला। जिनगी के ई पकिया संस्कार ह। बिआह भोज ला ना होला। भोजपुरिया संस्कृति में बिआह अतना पवित्र मानल जाला कि एक बेर कवनो लड़की के हांथ ऑह ध के लोग जिनगी निमाहेला। हमनी के देश में त सपना में देखल मरद से बिआह भइल बा– **''पुरइन के पात सुतल गउरा देई, सपना देखली अजगुत हे.........।''** भोजपुरिया संस्कृति में बिआह कृषि जीवन से बन्हाइल बा। लइका के सामने हरिस गाड़ल, बिआह के बेड़ा पालो पर नहाइल बतावेला कि– 'उत्तम खेती.....।' ओह समय के मंगल गीत में कृषि भावना रहेला– **''गाई के गोबरे महादेव चउका लिपाई.....।'** भईंस के गोबरे ना। गाय के महात्म ओकरा बछड़ा से जोड़ल बा– **''देश धर्म के नाता है, गौ हमारी माता है।''**

भारतीय संस्कृति के सच्चा अउर स्वभाविक चित्रण लोक साहित्य में मिलेला। एह चित्रण के नीचे लिखल कईगो भाग में कर के देखल जा सकेला–

समाजिक जीवन के चित्रण

आदर्श सतित्व के भावना :– सतित्व मेहरारू के आभूषण ह। नारी ओके जगावे खातिर सब कुछ दाव पर लगा देवे ले। एगो गीत में बटोही धन के लालच देत कहत बा–

''डाल भर सोना लेहू, मोतिया से मॉग भरू,
जदि छोरी मोरे संग लागहूँ रे की।''

सती स्त्री जबाब देत बिया–

आगि लागो सोनवा बजर पड़ो मोतिया रे,

सत छोर कइसे पत रहिहें नू रे की।

माई आ बेटी के सम्बंध :– माई आ बेटी के प्रेम असीम होला। बलूक माई में बेटी के प्रति कुछ बेसिए प्रेम होला। बेटी मन के दरद माईए से बतावेले–

भंगिआ पिसत ए अमा हांथवा खिअइलें,

धातुर मलत ए अमा जियरा अकुसइलें।

भाई-बहिन के रिश्ता :– भाई बहिन के जवना सात्विक प्रेम के वर्णन लोक साहित्य में मिलेला ऊ दोसरा साहित्य में दुलुम बा। गोधन गीत में ई प्रेम देखीं।

"गोधन भइया चललें अहेरिया,
कवन बहिना देली अशीष हे।"

लोक गीत

लोक साहित्य लोक संस्कृति के अभिन्न अंग ह। एकरा अभाव में लोक संस्कृति के अध्ययन अपूर्ण मानल जाला। एकरा के पॉच भाग में बांटल बा–

1 लोक गीत
2 लोक गाथा
3 लोक कथा
4 लोक नाट्य
5 लोक सुभाषित

लोक गीत :– लोक गीत ऊ गीत ह जवना से जन मन के मनोरंजन होत रहेला। एह गीत के स्त्री आ पुरूष सामान रूप से गावेला। बाकिर होली गीत अइसन गीत बा, जवना के खाली पुरूष लोग गावेला। गायकी के दृष्टि से लोक गीत के दू भाग में बांटल जा सकत बा–

1 एकल लोक गीत
2 सामूहिक लोक गीत

एकल लोक गीत :– एकल लोक गीत ऊ लोक गीत ह, जवना में एके व्यक्ति गावेला। जइसे शितला मइया के गीत। अइसहीं अल्हा लोड़िकायन आउर विजयमल के लोक गाथा एके आदमी गावेला।

सामूहिक लोक गीत :– एकल लोक गीत के विपरित कुछ अइसन लोक गीत बाजवन सामुहिक लोक गीत कहाला।

लोक गीत के वर्गीकरण

लोक गीत के छः भाग में बांटल जा सकत बा–

1 संस्कार गीत
2 ऋतु सम्बंधी लोक गीत
3 व्रत सम्बंधी
4 जति सम्बंधी
5 श्रम सम्बंधी
6 विविध गीत

संस्कार सम्बंधी गीत

संस्कार सम्बंधी गीतन के छः भाग में बांटल जा सकत बा–

1 सोहर
2 मुण्डन
3 जनेऊ
4 विवाह
5 गवना
6 मृत्यू

हमरा धर्म शास्त्र में सोलह संस्कार के उल्लेख बा। एमें कुछ पुत्र जनम के पूर्व के भी संस्कार बा, बाकिर अब ऊ लोप हो गइल

बा।

1 सोहर :– सोहर सम्बंधी संस्कार गीत पुत्र के जनम के समय गावल जाला। बाकिर दुर्भाग्य बा कि पुत्री के जनम के समय ना गावल जाला।सोहर के विषय वस्तु दू भाग में बांटल जा सकत बा। पूर्व पीठिका आ उत्तर पीठिका

(क) पूर्व पीठिका :– पूर्व पीठिका में पुत्र जनम के पहिले गर्भीनि के दशा के वर्णन कइल जाला।

(ख) उत्तर पीठिका :– उत्तर पीठिका में पुत्र जनम, बधाव बाजल से लेके खेलवना तक के गीत रहेला।

2 मुण्डन गीत :– बालक जब बड़हन हो जाला तब ओकर मुण्डन होला। महा कवि कालीदास राजा रघु के संस्कार के वर्णन कइले बाड़न।

3 जनेऊ के गीत :– जनेऊ के संस्कृत में यज्ञोपवित्र संस्कार कहल जाला। एह संस्कार गीतन के द्वारा ब्रह्मचारी विद्यार्थी के गुरू के निकट ले आवल जाला।

4 विवाह गीत :– धर्म शास्त्रन में विवाह के आठ गो भेद कइल बा। विवाह गीतन के द्वारा मंगल गीत के गायन होला। जवना में संस्कार गीत गाई के गोबरे से लेके विवाह गीत अंतिम पहरूआ के गवाही देला।

एही तरे गवना के भी गीत होला। जवन विवाह के बाद लड़की अपना नइहर में ही रह जाले आ फेर दुबारा ओकरा के बिदाई करावे ओकर पति आवेलें जवना में लगभग विवाह के कुछ नेग दोबारा होला ओकरा के गवना कहल जाला। आ एहमें गावे वाला गीत के गवना गीत कहल जाला। एही तरह से मृत्यू गीतन से एकर समापन समझल जाला।

ऋतु सम्बंधी गीत

एह में एक बरिस में जेतना ऋतु होला बोकर गीत गा के ऋतु गीतन के शुरूआत कइल जाला। एकर प्रारम्भ सावन के कजरी गितन से मानल जाला, जवन झुला डाल के खेलल जाला। एह गीत के बोल ह–

"कइसे खेले जाई हम सावन में कजरिया,

बदरिया घेरी आइल ननदि।"

ओइसहीं फागुन महिना में होरी गीत होला– "**सदा आनन्द रहे एही द्वारे, मोहन खेले होरी हो**" के गीतन से शुरूआत होला आ दचइत के "चइता मासे" एकर समापन होला। एगो गीत देखीं–

"आरे सांझहीं के सुतल फूटल किरिनिया हो राम,

अबो नाहीं जागे संइया अभागा।"

एही तरे बरसात महिना में बरमासा के गायन होला।

व्रत सम्बंधी गीत

धार्मिक पर्व के दू भाग में बांटल जा सकत बा। एकरा अन्तर्गत नाग पंचमी, बहुरा, गोधन, पिड़िया, छठी माई के गीत आवेला।

जाति सम्बंधी गीत :– एमें कई गो जाति के गीत संकलित कइल बा। एमें अहीर के गीत,

दुसाध के गीत, गोंड़ के गीत तेली के गीत, कहांड़ के गीत आ चमार के गीत प्रसिद्ध बा। एकर बानगी ह–

''धीरे-धीरे चलू रे कहांरवा, सुरूज डूबलें एही ठईया।''

श्रम सम्बंधी गीत :–

एहमें जांत के गीत, रोपनी के गीत, सोहनी के गीत प्रसिद्ध बा। एकरा बादो अइसन लोक गीत बा, जवन आउर रूप में प्रचलित बा। एकरा के भोजपुरी के विविध गीत कहल जाला।

भोजपुरी लोक गीत के बानगी देखल जा सकत बा। एगो सोहर के बानगी देखीं जवना में एगो सोहागिन के करेज धनकत बा–

''जइसे वन में कोइलिया बने बने कुहुकेले हो,

ए रामा ओइसे जियरा हमार कुहुकेला एक रे बालक बिनू हो।''

एही तरे से खेलवना गीत के एगो बानगी बा–

''जाहू तोरा ए भउजी होरिला होइहें तबे अइबो तोरे अंगनवा।

कंठा भी लेबो टीका भी लेबो, लेबो सब सोना के गहनवा।''

एही तरह से गवना गीत में एगो भाउक पिता के कहनाम बा–

''केकरा ही रोवले गंगा बढ़िअइली,

केकरा जे रोवले अनोर।

केकरा ही रोवले चरण धोती भिंजे,

केकरा नयनवा ना लोर।

बाबा के रोवले गंगा बढ़ियइली,

आमा के रोवले अनोर।

भइया के रोवले चरण धोती भिंजे,

भउजी नयनवा ना लोर।''

एही तरे से भोजपुरी ऋतु गीतन में कजरी बड़ा मशहूर बा। जवना के एगो बानगी देखीं–

''आहे बाबा बहेला पुरवइया अब पिया मोरा सोये ए हरी,

संइया सुतेला आधि रात देवर बरी भोरे ए हरी।''

एही तरे के एगो आउर गीत–

''सोने के थारी में जेवना परोसनी,

जेवना ना जेवे ए हरी।''

एही तरे के फागुन के होरी गीतन में–

''होरी खेले रघुवीरा अवध में''

एही तरह से चईता गितन में विरह के बानगी फूटेला–

''रामा सांझहीं के सुतल फूटल किरिनिया हो राम,

तबो नाहीं जागेला हमरो बलमुआ हो राम

रामा तोरा लेखे ननदी तोर भइया निंदिया के मातल हो राम,

मोरा लेखे चाँद सुरूज अछपि भइले हो राम।''

एही तरह से देहात में शीतला मइया के गीत गावल जाला, जवना के गंध एह तरे फूटेला–

''निमिया के डाढ़ मइया लावेली हिलोरवा कि झुली-झुली ना,

झुलत-झुलत मइया के लगली पियसिया कि चली भइली ना।''

एही तरह से बहुरा, नागपंचमी, गोधन आ श्रम गितन में सोहनी, रोपनी के गीत गावल जाला। पूरबी आ अलचारी के गीत होला।

एह तरह से भोजपुरी लोक गीत विभिन्न तरिका से हमनी के जीवन में रंग भरेला आ सभका के मिल जुल के रहे के संदेश देला आ आपन गंध बिखेरेला।

* * *

मंजिल

मंजिल है दूर, दूर है किनारा
कठिन है रास्ते, पर जीना है गवारा,
जब तक है जान तब तक है गुमान,
हौसले हैं बुलंद और चाल में है उड़ान,
कठिन राहों को करना है आसान,
आसमां को छु कर करना है नाम,
मंजिल है दूर, दूर है किनारा।
दिल में है जोश और आँखों में अरमान,
हाथों में है दम और पैरों में जान
यही राहों में लिए चलती हूँ अपने ये हथियार,
है अगर दृढ़ निश्चय दिल में,
तो नहीं है दूर मंजिल, ना दूर है किनारा
कठिन है रास्ते पर जीना है गवारा।
मुश्किलों से जीत कर पा लेगें मंजिल को,
चाहे कितनी मुश्किल हो, चाहे कितनी पीड़ा हो,
पीछे न हटेगें बस आगे बढ़ते जाऐगें,
धीरे धीरे कर के मंजिल तक पहुँच ही जाऐगें,
दिखा देगें दुनिया को नहीं है कुछ मुश्किल,
नहीं कुछ असंभव, सब कुछ है अपना,
नहीं है दूर मंजिल ना दूर है किनारा,
आसान है अब रास्ते और जीना भी है गवारा ।।

वर्षा सिंह, (नवोदित रचनाकार,दिल्ली विश्वविद्यालय)

देवघर - तीर्थ आ पर्यटन के संगम

बिरसा मुण्डा के धरती झारखंड, कुछ प्रमुख तीर्थस्थान के केंद्र बाजौना के ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्व बा। एही में से एगो स्थान बा देवघर। ई स्थान संथाल परगना के भितर आवेला। देवघर शांति आ भाईचारा के प्रतीक बा। ई शहर हिंदु धर्म के प्रसिद्ध तीर्थ–स्थल बा। इहां बाबा बैद्यनाथ के ऐतिहासिक मंदिर बा जौन भारत के बारह ज्योतिर्लिंगन में से एगोबा। हर साल सावन के महिना में श्रद्धालु 100 किमी. लंबा पैदल यात्रा करके सुल्तानगंज से पवित्र जल लावे लें जौना से बाबा बैद्यनाथ के अभिषेक कईल जाला। हर सावन में इहाँ लाखों शिव भक्तन के भीड़ उमड़ेला जौन देश के विभिन्न हिस्सा सहित विदेश से भी इहाँ आवेला। एह भक्त लोग के काँवरिया कहल जाला। शिव भक्त बिहार में सुल्तानगंज से गंगा नदी के गंगाजल लेके 105 किलोमीटर के दूरी पैदले तय करके देवघर में भगवान शिव के जल अर्पित करलें।

इ शिवलिंग के स्थापना के इतिहास के बारे में इहे कहल जाला कि एक बार राक्षसराज रावण हिमालय पर जाके शिवजी के खुश करे खातिर घोर तपस्या कइले आ आपन सिर काट–काटके शिवलिंग पर चढ़ावल शुरू कर दिहले। एक–एक करके नौ गो सिर चढ़ावला के बाद दसवाँ सिरकाटहीं के रहले ताले शिवजी प्रसन्न होके प्रकट हो गइलें आ वरदान मांगे के कहलन। रावण शिवलिंग के लंका मे ले जाए के आज्ञा माँगलन। शिवजी अनुमति त दे देलन बाकि कहलन कि अगर एह शिवलिंग के धरती पर जहां रख देबऽओही जगह इ हमेशा खातिर स्थापित हो जाई। रावण शिवलिंग लेके चल परले बाकि रास्ता में उनकालघुशंका लाग गईल। रावण उ लिंग के बैजू नाम के एगो ग्वाला के थमा के लघुशंका करे चल गइल। कुछ देर बाद बैजूओह लिंग के धरती पर रख देलस। फेर का रहे, रावण पूरा शक्ति लगाके भी ओकरा के ना उखाड़ पइलस आ निराश होके मूर्ति पर आपन अँगूठा गड़ाके लंका चल गइल। श्रद्धालु आ लोक–मान्यता के अनुसार इ वैद्यनाथ–ज्योतिर्लिंग मनोवांछित फल देवे वाला बाड़न।बैद्यनाथ मंदिर में स्थापित लिंग भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंग में से एक बा। ऐतिहासिक रूप से ई मंदिर के स्थापना 1596 के मानल जाला। कई लोग एकरा के कामना लिंग भी मानेले। बाबा के दर्शन के समय सुबह 4 बजे से दोपहर 3.30 बजे तक आ शाम 6 बजे से रात 9 बजे तक।

बैद्यनाथ के मुख्य मंदिर सबसे पुराना बा जेकरा आसपास अनेक अन्य मंदिर भी बा।सबसे निमन दृश्य ई बा कि शिवजी के मंदिर पार्वती जी के मंदिर से जुड़ल बा।बैद्यनाथ धाम के यात्रा सावन मास से शुरु होला। सबसे पहिले तीर्थयात्री सुल्तानगढ़ में एकट्ठा होखेलें जहां उ लोग अपना–अपना पात्र में पवित्र जल भरेलें। ओकरा बाद उ लोग बैद्यनाथ धाम आ बासुकीनाथ की ओर

बढ़ जाला लोग। पवित्र जल लेके जाए समय एह बात के ध्यान राखल जाला कि उ पात्र जेमें जल बा, उ कहीं भी भूमि से ना सटे पावे।

बैद्यनाथ मंदिर के अलावा आसपास में आउर भी कुछ प्रसिद्ध मंदिर बाड़ी सन जौना में बासुकीनाथ मंदिर बहुत लोकप्रिय बा।बासुकीनाथ आपन शिव मंदिर खातिर जानल जाला। बैद्यनाथ मंदिर के यात्रा तब तक अधूरा मानल जाला जब तक बासुकीनाथ में दर्शन ना कइल जाव। ई मंदिर देवघर से 42 किमी. दूर जरमुंडी गांव के भिरी स्थित बा। इहां पर स्थानीय कला के विभिन्न रूप के देखल जा सकेला। बासुकीनाथ मंदिर परिसर में अन्य कईगो छोटे–छोटे मंदिर भी बा। एकरा बाद बा बैजू मंदिर बाबा बैद्यनाथ मंदिर परिसर के पच्छिम में देवघर के मुख्य बाजार में तीनगो आउर मंदिर भी बा। इनका के बैजू मंदिर के नाम से जानल जाला। ई सब मंदिर के निर्माण बाबा बैद्यनाथ मंदिर के मुख्य पुजारी के वंशज लोग करवइले रहे। प्रत्येक मंदिर में भगवान शिव के लिंग स्थापित बा।

आसपास भी कईगो दर्शनीय स्थल बा जौना में देवघर से 16 किमी. दूर दुमका रोड पर एगो खूबसूरत पर्वत त्रिकूट स्थित बा। एह पहाड़ पर बहुते गुफा आ झरना बा। बैद्यनाथ से बासुकीनाथ मंदिर के ओर जाए वाला श्रद्धालु मंदिरन से सजल एह पर्वत पर रुकल पसंद करेलें। देवघर के बाहरी हिस्सा में स्थित बा नौलखा मंदिर।ई मंदिर आपन वास्तुशिल्प के खूबसूरती खातिर जानल जाला। प्रकृति के अनमोल उपहार बा नंदन पहाड़। एह पर्वत के महत्ता इहां बनल मंदिरों के झुंड के कारण बा जो विभिन्न भगवान के समर्पित बा। पहाड़ के चोटी पर कुंड भी बा जहां लोग पिकनिक मनावे आवेलें। कुल मिला के कहल जाव त देवघर तीर्थ आ पर्यटन के बेजोड़ संगम बा।

आवागमन

नजदीकी हवाई अड्डा राँची, गया, पटना, आ कोलकाता में बा।

सड़क मार्ग द्वारा कोलकाता से 373 किमी, गिरिडीह से 112 किमी आ पटना से 281 किमी बा।

रेल द्वारा निकटतम रेलवे स्टेशन जसीडिह इहाँ से 10 किमी बा जौन हावड़ा पटना दिल्ली लाइन पर स्थित बा। बसरू भागलपुर, हजारीबाग, रांची, जमशेदपुर, पटना आ गया से देवघर खातिर सीधा आ नियमित बस सेवा उपलब्ध बा।

इस माह के राशिफल

मेष–भाग्यवर्धक स्थितियां बनेंगी। सोच, अनुभव परिश्रम से करें।

वृष –सोच–विचार कर निर्णय लेना होंगे। समय पर सब ठीक होगा। मानसिक, वैचारिक संबल रहेगा।

मिथुन– माह में ग्रहयोग प्रतिकूल हैं। व्यर्थ में साहस दिखा पाएंगे। अनिश्चितता में निर्णय, सोच गलत होंगे।

कर्क –माह में ग्रहयोग प्रतिकूल हैं। व्यर्थ में साहस दिखा पाएंगे। अनिश्चितता में निर्णय, सोच गलत होंगे।

सिंह –स्थायित्व अनुरूप कोई बात नहीं रहेगी। जवाबदारी में उलझे रहेंगे। पारिवारिक सहयोग नहीं रहेगा।

कन्या –अनसोची समस्याएं सामने आएंगी। पारिवारिक मामलों में सावधानी रखें। प्रतिष्ठा का प्रश्न बनेगा।

तुला– इस माह में सतर्कता रखना होगी। बगैर जानकारी के जोखिम नहीं लें। अपनी ही गलतियों से परेशान रहेंगे।

वृश्चिक –नई स्थिति वातावरण, बातचीत का इंतजार रहेगा। राज्यपक्ष के कामों में आशातीत सफलता मिलेगी।

धानु– माह में प्रतिष्ठा, संतोष का वातावरण रहेगा। कामकाज भी अच्छा चलेगा। मनमाफिकता रहेगी।

मकर– छोटे–बड़े सभी काम अनुभव, विवेक से ही करना होंगे। अपना ही निर्णय, कार्य, योजना पर पुनर्विचार करना होगा।

कुंभ –इस माह में भी प्रगति बनी रहेगी। कामकाज की कार्यशैली में परिवर्तन नहीं करें। जो भी जैसी स्थिति हो उस अनुरूप आगे बढ़े।

मीन –लाभप्रद सूचना–समाचार मिलेंगे। आर्थिक मामलों में विशेष सुधार होगा। शांति–संयम से लंबी व अनसोची परेशानी से बचेंगे।

सबिता चतुर्वेदी
+91 99 9999 5833

सावन में अमरनाथ धाम यात्रा

सृष्टि का आधार ब्रह्मा, विष्णु और महेश यानी शिव शंकर हैं। ये तीन त्रिदेव ही सृष्टि के आदि, मध्य एवं अंत हैं। ये अजन्मा एवं निरंकार हैं। यह न तो जन्म लेते हैं और न ही इनकी मृत्यु होती है। सृष्टि के आरम्भ काल में यही अपनी बीज शक्ति से सृष्टि को जन्म देते हैं एवं अंत में उसे अपने में समाहित कर लेते हैं। भक्तों की पूजा एवं अर्चना को साकार रूप देने के लिए यह साकार रूप धारण करते है। इन्होने अपनी शक्ति को नारी रूप प्रदान किया है जिसे उमा, लक्ष्मी एवं सरस्वती के नाम पूजा जाता है। उमा शिव की पत्नी हैं. लक्ष्मी विष्णु की और ब्रह्मा की संगिनी देवी सरस्वती हैं। मनुष्य को पाप से दूर रहकर धर्म का मार्ग चुनने की प्रेरणा देने हेतु यह समय–समय पर लीला करते रहते हैं।

भगवान विष्णु तो अपनी लीलाओं के कारण लीलाधारी कहे जाते हैं। इन्हीं के समान शिव की लीलाएं भी अद्‌भुत हैं। इनकी लीला आज भी अमरनाथ धाम में अमर है जो अमरनाथ की पवित्र गुफा में इनके होने का एहसास कराती है. श्रद्धालु भक्तों के लिए यह अत्यंत पूजनीय स्थल हैं जहां जीवन में कम से कम एक बार जाने की इच्छा सभी की रहती है. लेकिन, यहां पहुंचता वही है जिसे बाबा अमरनाथ अपने दरबार में बुलाते हैं।

अमरनाथ धाम की कथा

माता पार्वती शिव के समान ही आदि शक्ति हैं। सृष्टि के आरम्भ से लेकर अंत तक की सभी कथाएं इन्हें ज्ञात है। एक समय की बात है देवी पार्वती के मन में अमर होने की कथा जानने की जिज्ञासा हुई. पार्वती ने भगवान शंकर से अमर होने की कथा सुनाने के लिए कहा. भगवान शंकर पार्वती की बात सुनकर चौंक उठे और इस बात को टालने की कोशिश करने लगे। देवी पार्वती जब हठ करने लगीं तब शिव जी ने उन्हें समझाया कि यह गुप्त रहस्य है जिसे त्रिदेवों के अतिरिक्त कोई नहीं जानता।

यह ऐसी गुप्त कथा है जिसे कभी किसी ने अन्य किसी से नहीं कहा है। इस कथा को जो भी सुन लेगा वह अमर हो जाएगा। देवतागण भी इस कथा को नहीं जानते हैं अतरू पुण्य क्षीण होने के बाद उन्हें अपना पद रिक्त कर देना पड़ता है और उन्हें पुनरू जन्म लेकर पुण्य संचित करना पड़ता है। ऐसे में तुमसे इस कथा को कहने में मै असमर्थ हूं। जब पार्वती शिव के समझाने के बावजूद नहीं मानी तब शिव जी ने पार्वती से अमर होने की कथा सुनाने का आश्वासन दिया।

कथा सुनाने के लिए शिव ऐसे स्थान को ढूंढने लगे जहां कोई जीव–जन्तु न हो। इसके लिए उन्हें श्रीनगर स्थित अमरनाथ की गुफा उपयुक्त लगी। पार्वती जी को कथा सुनाने के लिए इस गुफा में लाते समय शिव जी चंदनबाड़ी नामक स्थान पर माथे से चंदन

उतारा। पिस्सू टॉप नामक स्थान पर पिस्सूओं को। अनन्त नाग में नागों को एवं शेषनाग नामक स्थान पर शेषनाग को ठहरने के लिए कहा। इसके बाद शिव और पार्वती अमारनाथ की गुफा में प्रवेश कर गये।

इस गुफा में शिव माता पार्वती को अमर होने की कथा सुनाने लगे। कथा सुनते–सुनते देवी पार्वती को नींद आ गई और वह सो गईं जिसका शिव जी को पता नहीं चला। शिव अमर होने की कथा सुनाते रहे। इस समय दो सफेद कबूतर शिव की कथा सुन रहे थे और बीच–बीच में गूं–गूं की आवाज निकाल रहे थे। शिव को लग रहा था कि पार्वती कथा सुन रही हैं और बीच–बीच में हुंकार भर रहीं हैं। इस तरह दोनों कबूतरों ने अमर होने की पूरी कथा सुन ली।

कथा समाप्त होने पर शिव का ध्यान पार्वती की ओर गया जो सो रही थीं। शिव जी ने सोचा कि पार्वती सो रही हैं तब इसे सुन कौन रहा था। शिव की दृष्टि तब कबूतरों के ऊपर गया। शिव कबूतरों पर क्रोधित हुए और उन्हें मारने के लिए तत्पर हुए. इस पर कबूतरों ने शिव जी कहा कि हे प्रभु हमने आपसे अमर होने की कथा सुनी है यदि आप हमें मार देंगे तो अमर होने की यह कथा झूठी हो जाएगी। इस पर शिव जी ने कबूतरों को जीवित छोड़ दिया और उन्हें आशीर्वाद दिया कि तुम सदैव इस स्थान पर शिव पार्वती के प्रतीक चिन्ह के रूप निवास करोगो. माना जाता है कि आज भी इन दोनों कबूतरों का दर्शन भक्तों को यहां प्राप्त होता है.

अद्भुत है शिवलिंग

अमरनाथ शिवलिंग हिम से निर्मित होता. यह शिवलिंग अन्य शिवलिंगों की भांति सालों भर नहीं रहता है। वर्ष के कुछ महीनों में यहां हिम से स्वयं शिवलिंग का निर्माण होता है। स्वयं हिम से निर्मित शिवलिंग होने के कारण इसे स्वयंभू हिमानी शिवलिंग भी कहा जाता है। आषाढ़ पूर्णिमा से शिवलिंग का निर्माण होने लगता है जो श्रावण पूर्णिमा के दिन पूर्ण आकार में आ जाता है।

अमरनाथ की गुफा में हिम जल टपकता रहता है। आस–पास जमा हुआ बर्फ भी कच्चा होता है जबकि हिम से बना शिवलिंग ठोस होता है। इस स्थान पर आकर ईश्वर के प्रति आस्था मजबूत हो जाती है. इस तरह शिवलिंग का निर्माण सदियों से होता चला आ रहा है। यह भगवान के भक्तों को यह विश्ववास दिलाता है कि उनकी श्रद्धा सच्ची है. ईश्वर है तभी यह संसार है।

अमरनाथ यात्रा

अमरनाथ धाम श्रीनगर से लगभग 135 किलोमीटर दूर है। यह स्थान समुद्र तल से 13,600 फुट की ऊँचाई पर है। इस स्थान पर ऑक्सीजन की कमी हो जाती है. प्रतिवर्ष अमरनाथ यात्रा के लिए लाखों की संख्या में श्रद्धालु आते हैं। यात्रा से पूर्व श्रद्धालु भक्तों को पंजीकरण करवाना होता है। पंजीकरण के लिए भक्तों से कुछ शुल्क जमा करना पड़ता है। सरकार एवं कुछ निजी संस्थाओं द्वारा यात्रियों को यात्रा सुविधाएं दी जाती हैं।

यहां जाने के लिए दो रास्ते हैं एक पहलगांव होकर तथा दूसरा बालटाल से। इन स्थानों तक भक्तगण बस से आते हैं इसके बाद का सफर पैदल तय करना होता है। पहलगांव से होकर जाने वाला रास्ता बालटाल से सुगम है अतरू सुरक्षा की दृष्टि से तीर्थ यात्री इसी रास्ते से अमरनाथ जाना अधिक पसंद करते हैं।

अमरनाथ धाम हिन्दु मुस्लिम एकता का प्रतीक

भगवान अपने भक्तों में किसी प्रकार का अंतर नहीं करता है. इसका प्रमाण है अमरनाथ धाम. हिन्दु जिस अमरनाथ धाम की यात्रा को अपना सौभाग्य मानते हैं उस अमरनाथ धाम के विषय में बताने वाला एक मुस्लिम गड़रिया था। जिसे पशु चराते बाबा हिमानी अमरनाथ का पता उसी प्रकार लगा जिस तरह बैजू को बाबा बैद्यनाथ का पता चला। आज भी मंदिर में चढ़ने वाले चढ़ावे का एक चौथाई भाग इस मुस्लिम गड़रिये परिवार को मिलता है। बाबा इस तरह से जात–पात के भेद को दूर कर मानवता का ज्ञान दे रहे हैं। भक्तों को बाबा का संदेश समझकर जात–पात का भेद मिटाने का प्रयास करना चाहिए।

अमरनाथ धाम का महात्म्य एवं यात्रा का फल

कहते हैं जिस पर भोले बाबा की कृपा होती है वही अमरनाथ धाम पहुंचता है। यहां पहुंचना ही सबसे बड़ा पुण्य है। जो भक्त बाबा हिमानी का दर्शन करता है उसे इस संसार में सर्व सुख की प्राप्ति होती हैं व्यक्ति के कई जन्मों के पाप कटित हो जाते हैं और शरीर त्याग करने के पश्चात उत्तम लोक में स्थान प्राप्त होता है।

***

सावन के रिमझिम फुहार में, कजरी के आइल बहार

भारतीय परम्परा के आधार लोक–संस्कृति होखेला। कजरी लोक–संस्कृति के जड़ हउए। लोक–संस्कृति के फूलवारी में कजरी के स्थान महत्वपूर्ण बा। कजरी में प्रेम–विरह, पशु–पक्षी, पेंड़–पौधा ऋतु सबकुछ शामिल बा। लोक–संस्कृति के गीत–संगीत में परिवर्तन ना हो सके। एकर धुन–लय बदलल ना जा सके। काहे से कि लोक–संगीत लोक के सिधे हृदय से निकलल होखेला। आसमान के छुअत कजरी के झूला लोक जीवन के उड़ान होखेला। कजरी के मधुर गीत सुनके मोर–पपिहा–कोयली में भी उमंग भर जाला। प्राकृति के कण–कण रोमांचित हो उठेला। सावन आ भादो के घनघोर करिया बदरी भी ठिठक जाला जब किशोरी लोगन के मुख से कजरी के बोल सुनेला। ननद–भौजाई के कजरी के बोल देखीं–

कइसे खेलन जइबू सावन में कजरिया,
बदरिया घिरी आइल ननदी।
संग में सखी ना सहेली,
कइसे जइबू तू अकेली,
गुंडा घेर लीहें तोहरी डगरिया।
बदरिया घिरी आइल ननदी।

कजरी के गीतन में प्रेम–सिंगार के भरपुर समावेश देखेके मिलेला।

रिमझिम बरसेले बदरिया,
गुइयां गावेले कजरिया
मोर संवरिया भीजे ना.
वो ही धनिया के कियरिया
मोर संवरिया भीजे न.

कहल जाला सावन में नयकी दुलहिन के नईहर भेज देवल जाला। सावन में प्रेम के मिलन मना बा। आयुर्वेद के अनुसार सावन के महीना में मनुश्य के अंदर रस के संचार अधिक होखेला, जेकरा से काम के लालसा बढ़ जाला। जवना से स्वास्थ्य पे उलटा असर पड़ेला। सावन में पिया मिलन के आस तेज हो जाला। विरह के आग में तड़पत एगो विरहिणी के गुनगुनाहट सुनीं–

सावन हे सखी सगरो सुहावन,
रिमझिम बरसेला मेघ हे,
सबके बलमुआ घर अइलन
हमरो पिया परदेस हे।

एक त सावन के रिमझिम फुहार, ठंढ़ा–ठंढा हवा के झोका, कोयली– पपिहा के बोल, कदम के डाढ़ पे झूला प्रियतम के बगैर सब बेकार बा। अइसने कुछ आपन भाव व्यक्त करत बाड़ी एगो विरहिणी–

ओमप्रकाश अमृतांशु

झूलनवा लागल हइ कदमवा भौजी चलहुं झूले ना।
पियवा सावन में विदेशवा ननदो झूलनवा भावे ना।
आवे पानी के छिटिकवा भौजी ,जियरवा हुलसे ना।
मनवा कुहुँके हे ननदिया सैंया पतिया भेजे ना।

सावन के सुहावन महीना, चारो ओर हरियर–कचनार घास। आसमान में उमड़त–घुमड़त करिया बदरी जब रिमझिम– रिमझिम बरसेला तब मोर के पंख फड़फड़ा के नाचे पे खतिर मजबूर हो जाला। सावन के फुहार आ लोक–जीवन के संबंध बहुते पुरान हउए। सावन के मनोहरी घटा में झूला झूलत किशोरी लोगन के मुख से कजरी के गीत सघहूं मन में उमंग भर देवेला। आपन प्रियतम से दूर जाये के मन ना करे–

बीरन भइया अइले अनवइया,
सवनवा में ना जइबे ननदी।
रिमझिम पड़ेला फुहार ,
बदरिया आइ गइले ननदी।

अइसने–अइसने भाव कजरी के अनेकन गीतन में देखेके मिलेला। आज कजरी गीतन के भाव सिर्फ कवनो–कवनो भोजपुरी के पुरान सिनेमा में देखेके मिलेला। आज के युग में गांव से कजरी के परम्परा करीब–करीब समाप्त हो रहल बा। लोक–संस्कृति के इ जड़ खोखड़ हो रहल बा। जरूरत बा एह पारम्परिक जड़ के बचाके रखे के।

* * *

भोजपुरी में बढ़त अश्लीलता के जिम्मेवार प्रबुद्ध वर्ग बा- मंजुल

हेलो भोजपुरी-हेलो भोजपुरी पत्रिका में राउर स्वागत बा।

मंजुल जी-धन्यवाद राजकुमार जी ।

हेलो भोजपुरी-लेखन कार्य कब से शुरू कईनी ..?

मंजुल जी-लेखन कार्य त हम इ कहीं की पिछला जनम से चल रहल बा त गलत ना होइ। हां 9वी क्लास से उपन्यास आ नाटक लिखे के शुरू कईनी। दशवीं में आवत आवत हम 10–12 गो नाटक लिख चुकल रहनी। हमर लिखल नाटक एतना पसन आवे लागल की जवार भर में जेतना नाटक खेलल जाव , हमरे लिखल होखे। बाद में उ सभ नाटक पटना से प्रकाशित भईल।

हमरा मन में एकही बात हरदम उठे की आखिर उ कवन विधा बा जवना से आम आदमी से सीधा जुड़ल जा सके। त हम इहे पवनी की दुइये गो विधा बा जवना से हर आदमी के सीधा जुडल जा सकेला आ उ विधा बा नाटक आ गीत के। काहे की नाटक लोग देख लेला आ गीत सुन लेला। इ बात हम 1970.72 के बात बतावत बानी। जब हमार लिखल नाटक 'दो गज कफन ' छपल तो पटना में रंग मंच पर मंचन भईल। बहुत चर्चित भईल उ नाटक बाद में एह हिन्दी नाटक खातिर हमरा हिमाचल प्रदेश में पुरस्कार भी मिलल। ओकरा बादो हम नाटक लिखल जारी रखनी आ भोजपुरी में भी लिखनी जवना में प्रमुख रहे –**सेनुरा के लाज, ललकी किरिनिया, टकराव** । टकराव त कर्पूरी ठाकुर जी के समय में जवन अगली पिछली जाती के आन्दोलन उठल रहे ओह्बेरा त टकराव , बिस्फोट केतना जगे खेलल गईल , कई जगे त गोली भी चल गईल। बाद ,में '**सेनुरा के लाज**' पर त फिलिम भी बनल।

हेलो भोजपुरी - गीतकार के रूप में राउर पहिला एल्बम कब आईल...?

नाम दृमोतीलाल मंजुल
पिता का नाम– स्व. श्री राम लोचन प्रसाद
जन्म स्थान–ग्राम. पोस्ट–मोलनापुर , थाना–बसंतपुर , जिला– सिवान , बिहार
प्रकाशित चर्चित पुस्तक– हिन्दी नाटक– दो गज कफन, टकराव , विस्फोट
भोजपुरी नाटक– ललकी किरिनिया, सेनुरा के लाज
भोजपुरी गीत संग्रह– घुंघटा से झांकेला चान.
अप्रकाशित पुस्तक– गीत संग्रह, नाटक , उपन्यास आ लगभग एक दर्जन पुस्तक.
विशेष उपलब्धि– महशूर म्यूजिक कम्पनियन में लगभग १०००० से ज्यादा गीत रिकार्ड हो चुकल बा स्टार गायकन के आवाज में.
भोजपुरी गीत सम्राट , भिखारी ठाकुर अवार्ड, रामेश्वर सिंह कश्यप व् लोहा सिंह अवार्ड, प्रवासी रत्न सम्मान, लोक कवी सम्मान,बाबु कुंवर सिंह कला संस्कृति सम्मान, पूर्वांचल गौरव् सम्मान, गीतकार शैलेन्द्र सम्मान

मंजुल जी –हमार पहिला एल्बम रहे – झुलनी और पटना के बाबु । ओकरा बाद मैक्स से मुन्ना सिंह के गावल हमार एगो एल्बम निकलल जवना के गीत बहुत हिट भईल। उ गीत रहे– बैला के कमाई पर भईसिया काटे चानी...। ओकरा बाद हम एगो आउर एल्बम कईनी जवना के हिट गीत रहे–बचके रह बकरी हे सियरन के राज में , गाँधी बाबा रहितें त तोहके बचईतें अब केकरा से अर्जी सुनईबू समाज में , बचके ––– मुन्ना सिंह के गावल ई गीत हमरा के टी सीरिज ले गईल।

टी सीरिज में हमार पहिला गीत हिट भईल–लुटे के जब छुट मिलल बा ,त ना लुटल नादानी बा , केकरा से तू शरम करेल केकरा आँख में पानी बा....

ई गीत भी जबरदस्त हिट भईल ।ओकरा बाद भरत शर्मा जी अईलन , भरत जी हमार गीत गवलन आ ई गीत भी रिकार्ड हिट भईल.भरत जी के गावल इ गीत रहे– **गवना लेजा सईयाँ , पोरे-पोरे भईलें कचनार** ––– टी सीरिज में ओह्बेरा अजित कोहली

जी डायरेक्टर रहलें आ बाद में गुलशन जी अईलें। बाद में टी सीरिज से निकलल उ गीत रउरा आजो जरुर इयाद होई–– **जब से सिपाही से भईले हवालदार हो नथुनिया पर गोली मारे सईयाँ हमार हो...**

ओहिबेरा गौतम तूफान जी हिट भईलें आ उनका आवाज में हमार गीत हिट भईल–– **केतनो देखाई हरीहरी बोकावा बोलत नईखे...**

ओकरा बाद भरत शर्मा के– **गोरिया चाँद के अंजोरिया नियन गोर बाडू हो** ...तरुण तूफानी के सुपर डुपर हिट एल्बम –**सईयाँ मारे तहिया मछरी खियावेला जरुर.** ।आ **हिलाव रे मुसवा बैंगन के डाढ़ी ..**

ओकरा बाद हम टी सीरिज के सैकड़ो हिट एल्बम दिहनी। गुलशन जी हमरा के बहुत सम्मान देत रहनी।

एक बार गुलशन जी हमरा के बोलाके कहनी की मंजुल जी आप बताओं की किसको गवाना चाहते हो , त हम सलाह दिहनी की विवाह गीत अनुराधा पौडवाल से गवाइए ,त गुलशन जी कहनी की सोनू निगम कैसा रहेगा। हम कहनी की सर गवाना है तो सोनू निगम से होली गवाइए.

अईसने भईल आ जब रिकार्डिंग से सोनू निगम बाहर निकलले त सबका से पूछे लगले की मंजुल कौन है , हम आगे अईनी आ बतवनी की हमहीं मंजुल हई , त दऊर के हमार हाथ चूम लिहलें आ कहलें की आप कहाँ रहते हैं , मुम्बई में नहीं रहते । ठीक इहे शब्द जब हमर पहिला फिल्मी गीत रिकार्ड होत रहे दादर के श्री सुन्द स्टूडियो में –**परदेशिया से लागल पिरितिया हमार** ,ओह फिलिम के एगो गीत रहे जवन महेंदर कपूर जी के आवाज में सूट भईल –**बड़ा रे कठिन होला जिनिगी के रहिया जे , हारी थाकी बईठी जनि जईह रे बटोहिया** । रिकार्डिंग के बाद महेंद्र कपूर जी से जब हम मिलनी त उ प्रणाम ना करे दिहलें आ हमरा के गले से लगा लिहलें ।

चूँकि शारदा सिन्हा जी के आवाज में ठेंठ भोजपुरिया अंदाज ना रहे ओमे कहीं ना कहीं मिथिलांचल के मिक्स रहे त ओह्बेरा हम ऋतू चौहान ,शिला रावल के टीम रहे ओह्लोग से हम खूब गवईनी , विवाह गीत , होली गीत , देवी गीत , सोहर , झूमर , गारी , जत्सारी, कजरी छठ गीत इत्यादि। उ सभ एल्बम हिट रहे। ओकरा बाद1996 में गुलशन जी चल गईनी आ टी सीरिज में नया नया सलाहकार लोग आ गईल।

हेलो भोजपुरी-पहिले के भोजपुरी गीत में आ आज के भोजपुरी गीत में का र्फक महसूस करतानी...?

मंजुल जी– अरे भाई आज गीत कहाँ लिखाता भोजपुरी में, आ के लिखत बा , के गीतकार बा बताईं ना हमरा के , अगर आज केहू गीतकार बता दिहीं त हम ओकर पाँव चूम लेम । एगो गीतकार से हमार मुलाकात काफी दिन पहिले भईल रहे आ लागल की गीतकार केकरा के कहल जाला ओह गीतकार के नाव ह अंजन जी आ दुसरका किरण जी इ लोग गीतकार रहे , इ लोग कुछ खास गीत लिख सकत रहे। आरे गीतकार के मतलब होला जेनेरल स्टोर , मतलब जवन जे जवन खोजे उ ओकरा लगे होखे। बाकि आज त गीत थोड़े लिखाता बल्कि खाली गारी लिखाता आ ना त चोर मानिले हम, हेने से चोराके लिखी लोग होने से चोरा के लिखी लोग , केहू होने से धुन चोरा लेता केहू हेने से , हम एह लोग के गीतकार कईसे कह सकिले। एहिसे आज केहू गीतकार नइखे । आज त अश्लील तुकबंदी होता गीत लिखल कवनो बबुआ के झुनझुना नानू हटे की कहूँ बजा लिही। ह समय के मांग बा आज भेद भाव चरम प बा , लेकिन गीत लिखे खातिर काव्य ग्रन्थ के ज्ञान होखे के चाहीं , आज केकरा एह सभ के ज्ञान बा। रउरा जान के ताज्जुब ना होखे के चाहीं अभी 15 दिन पहिले भरत शर्मा से हम मिलल रनिहा , उ बतवलें की कईगो बड़का संत लोग उनका के सुझाव दिहल की रउरा मंजुल जी से गीत लिखवाईं। त अच्छाई के मांग आजो बा , बाकिर केहू देवे वाला नईखे.

हेलो भोजपुरी –भोजपुरी में बढ़त अश्लीलता खातिर के जिम्मेदार बा ..?

मंजुल जी – हमनी के भोजपुरिया समाज भी आज बिगड़ चुकल बा। जे लिखे वाला बा उ भाषा आ संस्कृति के कवनो चिंता नइखे करत। ओकरा एके बात के हवस रहत बा की कईसहूँ अश्लील लिख के हमरा हित होखे के बा। आ ओही तरे गायक लोग के भईल बा की हम गन्दा से गन्दा गाके हिट हो जाइ। अईसन पसंद करे वाला एगो कुछ खास वर्ग बा खास संख्या बा। बाकिर समाज के चिंता त होखे के चाहीं नु, हम त इहाँ बईठ के सभ दोष प्रबुद्ध वर्ग के देवे के चाहब ।

आज भोजपुरी में जवन गन्दगी फईलल बा ओकर जिम्मेवार हमरा नजर में प्रबुध) वर्ग बा। रउरा प्रोफेसर बानी , टीचर बानी , ओकील बानी रउरो त इ सुनात होई , रउरो लगे त इ सन्देश जात होइ। रउरा लोगिन आगा काहे नईखीं आवत ।

आज लईकी सभ गन्दा गन्दा गीत गा रहल बाड़ी सन, आ सभ सीमा के तुर के गावत बाड़ी सन।कहाँ कहाँ हमनी रोक लगईसन । उ लईकी जवना समाज आ समुदाय से आवत बाड़ी सन ओह समाज के फर्ज त बनत बा की उ रोखे ओकरा के। उ लोग त औरी मजा लेता की हमार लईकी स्टार बनत बिया गन्दा गावला से का भईल। त जे अनपढ़ गंवार बा ओकरा के त छोड़ दिहिन बाकिर पढ़ल लिखल वर्ग के त आगे आके आवाज उठावे के पड़ीं।

इ लेखनी जवन बा उ गैर जिम्मेदार लोग के हाथ में चाल गईल बा। त हमरा कहे के मतलब की रउरा त जिम्मेवार बानी त रउरा कहे चुप बानी , खाली मजा लिहला से ना होई., आज जवन गन्दगी फईल रहल बा ओकरा से सभका भोगे के पड़ी, जब आज रउरा चुप बानी त रउरो तईयार रहीं।

हेलो भोजपुरी-भोजपुरी में बढ़त

अश्लीलता कईसे रोकल जाव.?

मंजुल जी– आगे आवे के पड़ी तबे रुकी । देखीं आज यूपी– बिहार से लेके दिल्ली आ कलकाता तक हजारों संस्था आ मंच बनल बा भोजपुरी खातिर बाकिर केहु एह क्षेत्र में नईखे देखत त कवना काम के संस्था। एह सभ संस्था आ मंच में से एकाध के छोड़ दिहिन त ज्यादातर लोग अपना ब्याक्तिगत लाभ खातिर संस्था चला रहल बा , ओकरा भोजपुरी से कवनो मतलब नईखे। भोजपुरी के नाम पर राजनीती होता। एह सभ संस्था के नु आगे आवे के चाहीं, आरे इ लोग कला संस्कृति के संरक्षक बनके नु संस्था बनवले बा त ओह लोग के आगे आवे के चाहीं। खाली भीड़ जूटा के राजनीती कईला से का फायदा.

अब मैथिलि भोजपुरी अकादमी दिल्ली में खुलल ओहसे आम आदमी के का फायदा मिल रहल बा। भोजपुरी अकादमी के लडाई में हमहूँ रहनी बाकिर रउरे बताईं की आज तक अकादमी के एगो प्रोग्राम बताईं जहाँ हमरा के बोलावल गईल होखे। हमरा के कवनो कार्यक्रम में ना बोलावल जाला , का हम एतना गईल गुजरल बानी। हम चुप बानी बाकिर अब हम इहे कहब की मैथिलि भोजपुरी अकादमी में पक्षपात हो रहल बा ,भेदभाव हो रहल बा। कुछ गिनल–चुनल लोग के बोलावल जाला बाकिर केहु के एह अकादमी से कवनो फायदा नईखे , कुछ चुनिन्दा लोग बा जे एकर फायदा ले रहल बा। आ अब हम एकर आवाज उठाईं त कईसन लागी। हम भोजपुरी में 10 हजार से जयादा गीत , कईगो उपन्यास आ नाटक लिखले बानी जवना के आज इहे सम्मान हमरा मिल रहल बा ..? आ एहिसे हम हजार बार कहब की मैथिलि भोजपुरी अकादमी से आम आदमी के कवनो फायदा नईखे। कुछ खास लोग के फायदा उठा रहल बा। कुछ खास लोग के ही कार्यक्रम में बोलावल जाला .

ह भोजपुरी अकादमी पटना में भी बा , उन्हा जब भोजपुरी डिक्सनरी छपत रहे ओहमे भी हमर सहयोग रहल बा , हम मेंबर रहल बानी। उ अकादमी के काम ठीक बा। दिल्ली में त राजनीती हो रहल बा.

हेलो भोजपुरी – राउर भोजपुरी समाज में जवन गीतकार , नाटककार आ उपन्यासकार के रूप में योगदान बा ओकर उचित सम्मान मिलल ..?

मंजुल जी – देखीं राजकुमार जी , सम्मान त भिखारी ठाकुर के भी ना मिलल जवन मिले के चाहीं , त हमरा के के पुछेला बाकि ,हमार सम्मान त आम जनता के प्यार बा जवन लगातार मिल रहल बा.

हेलो भोजपुरी – अभी तक के रउरा स्र्फर में कवन एल्बम यादगार रहल..?

मंजुल जी – अभी कुछे दिन पहिले आईल रहल कल्पना गवले रहली ,लिगेसी आफ भिखारी ठाकुर' काफी चर्चित रहल। एकरा आलावा , पीछे चर्चा कर चुकल बानी , मुन्ना , सिंह , भरत शर्मा , गौतम तूफान, तरुण तूफानी , मनोज तिवारी सोनि चौहान इत्यादि लोग अनेको सुपरहिट एल्बम दे चुकल बा हमरा रचना के स्वर देके .

हेलो भोजपुरी– आगे के का कार्यक्रम बा..?

मंजुल जी– अभी त पिछला दू बारिस से हम प्रोजेक्ट पर काम करत बानी " **गौरवशाली बिहार**" पर । 16गो गाना रिकॉर्ड हो चुकल बा दुगो प्रोजेक्ट के , कुल चारगो प्रोजेक्ट बा प्र बिहार के इतिहास बा ओहमे, बिहार सरकार से कवनो सहयोग ना मिलला के वजह से अभी रुकल बा प्रोजेक्ट। अभी भरत शर्मा के एगो निर्गुण कर रहल बानी, ओकरा बाद कल्पना जी के दुगो ड्रीम प्रोजेक्ट बा निर्गुण के आ सोहर के। इ एह महिना के अंत तक हो जाई.

एकरा बाद एगो फिलिम पर काम कर रहल बानी फिलिम के नाम बा " **जय माँ बिन्धयवासिनी**"। हमरा सिवान जिला के ही एगो प्रोड्यूसर बाड़ें बच्चा चौहान जी – मनीष होटल वाले, उहे बनावत बाड़ें इ फिलिम उ माँ बिन्ध्यवासिनी के भक्त भी बाड़ें। इ फिलिम पियोर भोजपुरी में नईखे , कहीं कहीं भोजपुरी आ अवधि मिक्स बा बाकि हिन्दी में बा। बहुत जबरदस्त एस्क्रिप्ट बा , बाकि माताजी अगर चाहेम त फिलिम दर्शक लोग के जरुर पसंद आई.

हेलो भोजपुरी– आठवीं अनुसूची के लड़ाई जारी बा अबकिर कईगो भोजपुरिया शुभचिंतक लोग संसद में आईल बा , जवना में भोजपुरी के सुपरस्टार मनोज तिवारी भी बाड़े, का उम्मीद बा राउर एह लोग से भोजपुरी के आठवीं अनुसूची के प्रति..?

मंजुल जी–भोजपुरी के लड़ाई सालों से जारी बा। कईगो मंच से हमहूँ आवाज उठवनी , डॉ। प्रभुनाथ सिंह जी एह लड़ाई के लाड़े खातिर हरदम झंडा उठवनी। करोड़ो भोजपुरी भाषी के संगे हमरो इच्छा बा की भोजपुरी आठवी अनुसूची में जाव , आठवी अनुसूची में भोजपुरी जाई त स्कुल कालेज , सगरे भोजपुरी के पढाई होई टीचर लोग के बहाली होई और भी बहुत फायदा होइ। जहाँ तक अब्किर सांसद लोग के बात बा त हमरा मनोज तिवारी से बहुत उम्मीद बा ,मनोज तिवारी बहुत सुलझल इंसान बाड़े, आशा बा की उ आपन उपस्थिति जोरदार ढंग से दर्ज करिहे आ भोजपुरी के सम्मान दिलावे में अहम् भूमिका निभईहें। एकरा संगे संगे एगो महत्वपूर्ण बात हम कहे के चाहत बानी की सम्मान दिलावे के संगे संगे इहो कोशिस रहे की एकर फायदा सभका मिले । हर वर्ग आ हर समाज के बराबर ध्यान राखल जाव.

हेलो भोजपुरी– हेलो भोजपुरी पत्रिका खातिर का सन्देश बा ..?

मंजुल जी – एह महंगी के दौर में राउर इ प्रयास सराहनीय बा। रउरा सफलता से शिखर पर पहुंची एहे हम दिल से दुआ करब. सभे भोजपुरिया पाठक वर्ग से कहब की रउरा एह पत्रिका के खरीद के पढ़ीं ,आ आपन सुझाव भी दिहीं ताकि इ पत्रिका आउर उंचाई पर पहुंचे. रउरा हेलो भोजपुरी के पूरा टीम के एह नेक काम खातीर शुभकामना बा।

* * *

बाबुजी चलीं ना..

प्रदीप कुमार पाण्डेय

एगो मेला जाए खातीर केतना ड्रामा करेके के पड़ेला, आज ऊ सब हम रउआ लोगन के बतावत बानी। अगर रउरा कवनो मेला जाए खातीर अपना बाबु जी से पुछी तब देखी का होता। पहिले त बाबु जी कहेम की ना अभी तु लईका बाड़, तोहरा उ सब बहाना बनावल जाई, खुब फुसलावल जाई, दुनिया भर के लालच देहल जाई।

ई सब नाटक सभन लईका सन के सँगे होखेला, ई सब हमरो सँगे भईल, बाकीर हम त अपना गाँव भर के छाँट लईका जे रहनी ,हमहुँ जीद्द कईए देहनी की मेला त हमरा

जगे ना जाए के चाही, भुला जईब, उहवा लईका पकड़े वाला बोरा लेके घुमेलन सन, उ सब तोहरा के पकड़ के भाग जईहन सन। एकरा बाद भी रउरा माने वाला नईखी, तब राउर पिटाई होई, अब अगर पिटाईओ से ना मानब तब राउर ईलाज मनाई से होई मतलब कि रउरा के मनावल जाई, खुब जाही के बा ,चाहे ओकरा खातीर हमारा खेत कोड़े के काहे ना पड़े। अब देखी हमार बाबु जी भी हमरा से कम ना रहनी, उँहो के मेला ले जावे के लालच देके पियाज,बैंगन,लौका आउर खीरा सब खेत में हमरा से बोआ दिहनि आ रोज पानी भी डालवाई, आ रउरा सबे त जानते बानी की पियाज के खेत में केतना पानी डाले के पड़ेला। कहल जाला कि जब तक पीयाज के खेत में बेंग(मेंढ़क) बच्चा ना दीही तब तक ई कहल जाला कि पियाज बढ़ीया से नईखे पाटल।

हमहूँ कम ना रहनी, हमहूँ त अपना बाबु जी के बेटे नु रहनी। हम मेला जाए खातीर उ सब काम कईनी , जवन हमार बाबु जी हमरा से कहनी,कांहे से की हमहुँ लमहर

हाथ मारे के फेरा में रहनी, हमहूँ कहनी कि काम कर के मेला घुमे के बा त छोट–मोट मेला काँहे, सोनपुर मेला घुमल जाए। अईसे सोनपुर मेला त नवम्बर में कार्तिक पुर्णीमा से शुरु होखेला, लेकीन हम चार महीना पहिले से ही जोगाड़ में लाग गईल रहनी। सोनपुर मेला एशिया के सबसे बड़का पशु मेला ह। ई मेला में देश के लगभग सब जगह से लोग गाय, भैंस, बैल, हाथी , घोड़ा, सब कुछ बेचे आ खरीदे आवेला। आ हम ई मेला जाए खातिर एहसे बेचैन रहनी की हमारा ढ़ेर हाथी आ घोड़ा देखे के रहे की कईसे ओकरा के बेचल आउर खरीदल जाला। एक दिन हम बड़ा मन लगा के पियाज में पानी डालत रहनी तबही बाबु जी आ के कहनी की का हो बबुआ पियाज में पानी भर गईल, त हम कहनी की हँ बाबु जी भर गईल, त बाबुजी कहनी की जा , जा के समान सईहार ल, काल्ह सोनपुर मेला चले के बा आउर हाँ सतुआ आ हरीहर मरीचा जरुर रख लिह।

हम त ई सुनते खेत में से भगनी आ अपना मन में कहनी की चल अब पियाज बड़के–बड़के बईठ जाई। बिहान भईला सतुआ, आचार आ हरीहर मरीचा ले के हम आ हमार बाबु जी चल देहनी सन

सोनपुर के मेला। हमनी के रेलगाड़ी के टिकट कटा के चल देहनी ओ मेला में जवना में जाए खातीर पियाज पटवे के पड़ल रहे। रेलगाड़ी में चढ़ गईला के बाद हम त बेचैन रहनी की कब ई गाड़ी सोनपुर पहुँची।

लेकीन फेर सोचनी की आखीर ई मेला काहे लगेला, एकरा बारे में हम बाबु जी से पुछनी तब बाबु जी बतवनी की बहुत दिन पहिले एगो राजा रहलन जेकर नाम इन्द्रमना रहे, एगो गंधर्व(राक्षस) के सेनापति जेकर नाम हुहू रहे, ई दुनो के अगस्त मुनी श्राप देले रहले जवना कारण से इन्द्रमना हाथी आउर हुहू मगरमच्छ हो गईल रहे। एक दिन हाथी नदी में पानी पीए गईल, तबे मगरमच्छ ओकर गोड़ ध लेहलस। आ जहँवा पर

मगरमच्छ हाथी के गोड़ धइले रहे उ जगह आज नेपाल में पड़ेला। दुनो बहुत दिन तक लड़ते–लड़ते सोनपुर पहुँच गईलन सन। जब हाथी कमजोर होखे लागल तब उ नदी में से कमल के फुल सूँढ़ में लेके भगवान विष्णु के अपना प्राण के रक्षा खातिर गोहार लगवलस, तब भगवान हरि(विष्णु) प्रकट भइनी आ अपना सुदर्शन चक्र से मगरमच्छ के गर्दन धर से अलग कर के अपना भक्त हाथी के जान बचवनी। तबही से उहवा भगवान हरि के पुजा होखे लागल आउर ओह मेला के नाम हरिहर क्षेत्र मेला पड़ल। बाबु जी हमरा के ई सब बतावते रहनी कि तबे गाड़ी रुकल , बाहर देखनी त सोनपुर स्टेशन आ गईल रहे। हम त जईसही देखनी कि गाड़ी सोनपुर स्टेशन पर रुकल बा, त हम त कुद के गाड़ी से नीचे उतर गईनी, ओकरा खातीर हमरा बाबु जी से एगो थप्पड़ खाए के पड़ गईल। फेर थप्पड़ खईला के बाद हमनी के गमछा में बांहल सतुआ खईनी सन आ चल देहनी सन मेला में। सबसे पहीले हमनी सन हाथी बाजार में गईनी सन ओकरा बाद घोड़ा बाजार, गाय बाजार, पारा–पारी सब बाजार में गईनी सन।

अचानक हम एक जगे देखनी की बहुते भीड़ भईल बा, त हम बाबु जी से पुछनी कि उहँवा एतना भीड़ काहे भईल बा , त बाबु जी कहनी की छोड़ उहँवा ना जाए के , ओजा बढ़िया लोग ना जाला , त हम अपना मन में कहनी की उहँवा अईसन का बा की , बढ़िया लोग ना जाला। हम त पता लगावे के जुगाड़ में लाग गईनी, काँहें की आदमी के उ आदत होला की जवन काम मना कईल जाई उ उहे काम करेला। बाद में पता चलल की उहँवा ऑरकेस्टा बाटे जवना में लईकी सब छोट–छोट कपड़ा पहिन के नाचेली सन। ई बात हमरा के सोचे पर मजबुर कर देहलस कि पुलिस एकरा बारे में काँहे नईखे सोचत। मेला में त लोग अपना परिवार के सँगे आवेला, अगर मेला में अईसे लईकी सब के नचावल जाई तब लोग अपना परिवार के सँगे कईसे आई। जहाँ पहिले भिखारी ठाकुर जेकरा के भोजपुरी के शेक्सपीयर कहल जाला, उनकर गीत गावल जात रहे, उहँवा आज अश्लील गाना पर नाच होखत बा, आखीर काँहे ?

ई सब सवाल के बिना जबाब लेहले हम मेला से घरे आ गईनी। लेकिन रउरा सबे अबकी बार मेला में जरुर जाई, आ उ सब सवाल के जबाब ले के आईब जवन–जवन रउरा मन में उठी।

* * *

आप सभी को सावन के पवित्र महीने में अमरनाथ यात्रा की हार्दिक शुभकामानाएं

Ashok Mishra
09313575520

A.S. Transporting & Cargo System
• Custom Clearance
• Air Cargo • Freight Forwarding

Add. : A-71, 1st Floor, Street No. 6, Sewak Park, Dwarka More Metro Station, New Delhi-110059 (India) Tel. : +91-11-25332545
E-mail : astcarto@yahoo.com; astcargosystem@gmail.com

भोजपुरी सिनेमा और समाज

राजेश कुमार ''माँझी''

भारत के बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश में बोली जाने वाली भोजपुरी एक लोकभाषा है । हिंदी प्रदेश में कई बोलियाँ बोली जाती हैं जिनमें से भोजपुरी भी एक है जो न केवल दिन–प्रतिदिन के कार्य–व्यापार के क्षेत्र के उद्देश्य से पूर्ण रूप से समर्थ है अपितु प्रवासी भारतीयों को आपस में जोड़ने का सशक्त माध्यम भी है। मधुरता, सरलता–सहजता और ग्रामीण परिवेश को मुखरित करने का गुण ऐसे कारक हैं जिसके चलते भोजपुरी आम जन के रग–रग में संजीवनी की तरह बहती है । यही वजह है जिसके चलते सात समुंदर पार जाने के बाद भी भोजपुरी भाषी लोग अपनी बोली और संस्कृति को गर्व से गले लगाए हुए हैं ।

हम सभी जानते हैं कि भोजपुरी समाज अपने आप में एक अनूठा समाज है । इस समाज की बहुआयामी सभ्यता–संस्कृति और रीति–रिवाज को जानने का चाहे जितना भी प्रयास किया जाए, आकर्षण उतना भी बढ़ता चला जाता है। भोजपुरी प्रदेश में हर जगह वर्त–त्योहार मनाए जाते हैं जिसे अपने आप में किसी सभ्य समाज की थाती माना जाता है । इस प्रदेश की लोक कथाएँ, लोकगीत, लोक नाटक और लोक नृत्य वास्तव में सामाजिक–सांस्कृतिक संस्कार की धरोहर हैं । इस प्रदेश के निवासियों चाहे वह आदमी हो, औरत हो, बूढ़ा हो या जवान सबके मध्य कथा–कहानी कहने–सुनने और गीत गाने की परंपरा है जो अपने आप में बहुत ही महत्वपूर्ण बात है । इसी परंपरा के चलते भोजपुरी सभ्यता–संस्कृति को जन–जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से भोजपुरी सिनेमा का प्रादुर्भाव हुआ ।

भोजपुरी समाज में फिल्म के अतिरिक्त लगभग प्रत्येक तीज–त्योहार, शादी–विवाह और उत्सव–आयोजन के दौरान गीत गाने की परंपरा सदियों से चली आ रही है । यह बात भी महत्वपूर्ण है कि भोजपुरी सिनेमा की लोकप्रियता के पीछे उसके लोकगीतों का बहुत योगदान रहा है । उदाहरण के तौर पर कुछ फिल्मों के गीतों को देखा जा सकता है । जैसे कि फिल्म 'पिया के गॅाव ' का गीत– ए डॅाक्टर बाबू बताव दवाई......, ऑख से ऑख मिलके जे चार हो गइल, सॅाच मान जिनिगिया तोहार हो गइल................, ऑख में सुरतिया तोहरी माथ पर बिपतिया हाय कहवॉं जाईं सगरो अंहरिया हो राम.......... । फिल्म 'गंगा मइया तोह पियरी चढ़इबो' का गीत– काहें बंसुरिया बजवल......., सोनवा के पिंजरा में बंद भइली हाय राम............ । फिल्म 'गंगा किनारे मोरा गॅाव ' का गीत– गंगा किनारे मोरा गॅाव हो, घर पहुँचा द देबी मइया.........., कहे के त सब कहू आपन, आपन कहावे वाला के बा..............., जइसे रोज आवेलू तू टेर सुनिके, अइयो रे निंदिया निंदर वन से....... । इसी प्रकार 'बिदेसिया' और 'दंगल' का गीत– नीक सइयां बिन गवनवा नाही लागे सखिया.........., मोरे होठवा से नथुनिया कुलैल करेला............, पटना से बइया बुलाई द, कुम्हिला गइली गुइंया । भोजपुरी फिल्म के मधुर गीतों के इस प्रकार के अनेक उदारण दिए जा सकते हैं । ठीक इसी प्रकार फिल्म 'बिहारी बाबू' के एक गीत में समाज में बढ़ रही दहेज प्रथा पर चिंता व्यक्त की गई है । गीत इस प्रकार है–निर्धन दुखिया के बिटिया ह भइया, बिन बिहयल रहि जाय, शादी भइल अब व्यापार मोरे भइया देखीं आज के दुलहा बिकाय........। इन गीतों में गॅाव–देहात में विभिन्न अवसरों पर गाए जाने वाले लोकगीत और लोकधुन की छाप आसानी से देखी जा सकती है । पहले दो दौर की भोजपुरी फिल्मों में इस प्रकार के मधुर गीतों को आसानी से देखा–सुना और पहचाना जा सकता है । परंतु आज के भोजपुरी फिल्म निर्माताओं को इन गवई परंपराओं, लोकगीतों और लोकधुनों से कुछ लेना–देना नहीं है । उनका एकमात्र उद्देश्य है, पैसा कमाना ।

वर्तमान पीढ़ी के फिल्मकार सइयां जी दिलवा मांगेलें गमछा बिछाई के......, तोहार चढ़ल जवानी रसगुल्ला...., हमरा हउ चाहीं..., तोहार लहंगा उठा देब रिमोट से...... ,जोबना में आइल सुनामी....., लॅालीपॅाप लागेलू जैसे अश्लील गीत परोस रहे हैं । अतः हमाने सामने आज बड़ा प्रश्न यह है कि क्या ऐसे गीतों में भोजपुरी लोकतत्व का ढूँढ़ा जा सकता है । इस समय में बनी कुछ और चर्चित फिल्मों की ओर ध्यान देंगे तो हम पाएँगे कि 'पियवा बड़ा सतावेला' का गीत–काहें देहियां से देहियां रगरेलू.... , फिल्म 'फौजी' का गीत–बटनिया हो गइल टाइट....., 'सात सहेलिया' का गीत– मार के ब्लेड जींस तोहार फाड़ दी कवनो.... आदि–आदि बहुत ही उत्तेजक और अश्लील हैं और इन फिल्मों का एक ही उद्देश्य है अधिक से अधिक पैसा कमाना । द्विअर्थी शब्दों और अभिनेत्रियों को अधनग्न अवस्था में दिखाकर अश्लीलता के माध्यम से गरीब निरक्षर मेहनतकश भोजपुरिया वर्ग को नुकसान पहुँचाया जा रहा है क्योंकि इससे उनकी सोचने–समझने की शक्ति आंशिक रूप बाधित हो रही है ।

दुर्भाग्य यह है कि भोजपुरी सिनेमा के पक्षधर लोग अश्लीलता की बात को हल्के में ले रहे हैं और यह कह रहे हैं कि जब समाज बदल रहा है तो फिल्मों में बदलाव आना स्वभाविक ही है । परंतु ऐसे लोग इस बात को भूल जाते हैं कि फिल्में समाज में बदलाव लाने का हथियार होती हैं । किसी भी कला की उपयोगिता और महत्व समाज को सही दिशा देने से ही बढ़ती है न कि दिशा विचलित कर देने से । आज की भोजपुरी

फिल्मों के दर्शक जो गरीब निरक्षर मजदूर वर्ग से संबंध रखते हैं वे ऐसी फिल्में देखकर अपने जीवन पथ से विचलित हो रहे हैं। अतः जरूरत इस बात की है कि फिल्म निर्माता दर्शकों को सही दिशा देने का प्रयास करें। अगर फिल्म निर्माता इस बात के प्रति जागरूक रहेंगे तो अश्लील संवाद, गीत और नृत्य से भोजुपरी फिल्में दूर रहेंगी। ऐसा इसलिए कि वर्तमान भोजपुरी फिल्मी गीतों को सुनकर यही लगता है कि गीत लिखना महज एक तुकबंदी और द्विअर्थी शब्दों का खेल है तथा इन गीतकारों का संबंध दूर–दूर तक भोजपुरी लोक संस्कृति से कहीं भी नहीं है। इन गीतकारों के लिए लोक का तात्पर्य बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश का वह गरीब निरक्षर श्रमिक वर्ग है जो दिल्ली, मुंबई, बैंगलोर, चंडीगढ़ और कलकत्ता आदि शहरों में झुग्गी–झोपड़ी में रहता है। ऐसे लोगों के लिए 'गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो' और 'गंगा किनारे मोरा गॉव' के गीतों का कोई महत्व नहीं है तथा वर्तमान दौर के गीतकारों की लेखनी भी उन्हें चटनी ही परोसना चाह रही है।

यहॉं पर यह कहा जा सकता है कि गीत चाहे वे फिल्मी हों या लोकगीत हों वे तभी तक गीत होते हैं जब तक कि उनमें आदमी के दिलो–दिमाग को भाव–विभोर करने की ताकत होती है। जो मन को भाव–विभोर करने के स्थान पर उस बहका देने वाले तत्व को गीत कहना उचित नहीं है। गीत न तो द्विअर्थी शब्दों का ढ़ेर होते हैं और न ही किसी फटे बॉस की आवाज। वास्तव में एक प्रकार की साधना और योग का नाम गीत है जिसे सुनने के बाद कलेजे को ठंडक महसूस होती है। वर्तमान भोजपुरी फिल्मों के गीत जिस प्रकार लोगों की भावना से खिलवाड़ कर रहे हैं उससे किस प्रकार की फसल पैदा होगी इस बात को सोचकर मन कंपित हो उठता है।

आज बात केवल गीत तक ही सीमित नहीं रह गई है। वर्तमान भोजपुरी फिल्मों के दृश्यांकन के पक्ष पर नजर डालेंगे तो यही पाऍंगे कि यहॉं कैमरे का भी बहुत बड़ा कमाल है। फिल्म निर्माताओं की आज यही कोशिश रहती है कि अभिनेत्रियों की मदमस्त काया के प्रदर्शन से दर्शकों की भीड़ एकत्रित की जाए। दर्शक तो वही देख सकता है जो कैमरा दिखाता है। आज की फिल्मों में किसी नृत्य के दौरान कैमरा केवल हिरोइनों की खुली जांघ और सीने पर ही टिका रहता है। द्विअर्थी गीत और आधुनिक वाद्य यंत्रों के तड़क–भड़क धुन के बीच हिरोइनों के अधनग्न शरीर को इस प्रकार मादक रूप में दिखाया जाता है जैसे कोई नाच–नौटंकी के स्थान पर अंग–प्रदर्शन की प्रतियोगिता हो रही हो। इन गीतों में अभिनेत्रियों को छोटे–छोटे वस्त्र इसलिए नहीं पहनाए जाते कि वह भोजपुरिया गॉव–समाज का पारंपरिक पहनावा है अतितु इसलिए कि दर्शकों को नृत्य के समय अभिनेत्री के शरीर को अधिक से अधिक दिखाया जा सके और फिल्म निर्माण से अधिक पैसा कमाया जा सके।

भोजपुरी फिल्म निर्माण से जुड़े लोग आज सीना ठोककर यह कह रहे हैं कि हम तकनीकी रूप से मजबूत हुए हैं परंतु सच्चाई यह है कि पुराने जमाने की फिल्में फिल्मांकन के हिसाब से लाख गुणा अच्छी थीं। क्या तकनीक मजबूती से यही फायदा मिला कि ज्यादा से ज्यादा अंग–प्रदर्शन करवाया जाए? पहले दौर की भोजपुरी फिल्मों और आज के सिनेमा में गॉव के यथार्थ का प्रस्तुतीकरण एक समान नहीं है। यह भी सच है कि आज गॉव का यथार्थ केवल किसान और गरीब का आर्थिक शोषण से जुड़ा हुआ नहीं है बल्कि इसके कई आयाम हैं। अगर हम पॉच दशकों में बनी फिल्मों की बात करें तो इस बात को समझ पाऍंगे कि किस प्रकास समाज का बदलता हुआ यर्थाथ फिल्म की कहानी और प्रस्तुति पर असर डाल रहा है। जहॉं ' गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो ' में गरीबी, लाचारी और सामंती जीवन को फिल्म की कहानी बनाया गया वहीं 'बिदेसिया ' में समाज में फैलते जाति–पांति के दलदल में जूझते गॉव–समाज, 'पिया के गॉव ' में धार्मिक एकता और दहेज को आधार बनाकर फिल्म की कहानी रची गई तथा 'गंगा किनारे मोरा गॉव ' में प्रेम और परिवार के महत्व को दिखाने का प्रयास किया गया। इन सभी फिल्मों की कहानी, संवाद, परिवेश, कलाकार, गीत–संगीत आदि सब कुछ भोजपुरी की अपनी चीजें थीं। फिल्मों की अधिकतर शूटिंग गॉव में हुई जिनमें भोजपुरी क्षेत्र और गॉव–देहात को बड़े ही बारीकी से दिखाया गया।

नई दौर की भोजपुरी फिल्मों में शुद्ध भाषा तो दूर इस प्रदेश का कुछ भी ढूंढें तो निराशा ही हाथ लगेगी। ज्यादातर कहानी हिंदी फिल्मों की नकल कही जा सकती है। इन फिल्मों में भोजपुरी लोक तत्व का नामो निशान नहीं मिलेगा तथा गुणवत्ता के स्तर से देखा जाए तो सबसे निचले श्रेणी में इन फिल्मों की गणना की जाएगी। ऐसा इसलिए कि वर्तमान फिल्में यर्थाथ से अगल हैं और निर्माताओं का उद्देश्य कल्याणकारी न होकर मात्र पैसा कमाना हो गया है।

आज जितनी तेजी से भोजपुरी फिल्में बन रही हैं उतनी ही तेजी से उनकी गुणवत्ता में कमी आ रही है। दरअसल किसी भी क्षेत्रीय भाषा में सिनेमा का निर्माण इस बात की सोच कही जा सकती है कि हम अपनी माटी से जुड़कर अपनी बात को असरदार तरीके से व्यक्त कर पाऍं। परंतु वर्तमान भोजपुरी फिल्में इस कसौटी पर खरी नहीं उतर रही हैं। इसलिए यह कहना नितांत आवश्यक है कि हिंदी का पल्लू छोड़कर भोजपुरी सिनेमा को फिर से गॉव–देहात की भूमि से नाता जोड़ना होगा और यर्थाथ को अभिव्यक्त करने का प्रयास करना होगा। आज भोजपुरी फिल्मों को भोजपुरी प्रदेश की लोक संस्कृति और परंपरा को बचाने का प्रयास करना होगा तभी विश्व पटल पर भोजपुरी की गरिमा कायम रह सकती है नहीं तो प्रवासी भोजपुरिया लोगों के जेहन से भोजपुरी दूर होती चली जाएगी। भोजपुरी समाज, भोजपुरी भाषा, भोजपुरी लोकगीत और भोजपुरी सभ्यता–संस्कृति को बचाने के लिए भोजपुरी सिनेमा को भी अब फिर से गॉव–देहात का रूख करना होगा और वास्तविकता को दर्शकों के सामने सही ढ़ंग से दिखाना होगा। अगर ऐसा नहीं हुआ तो आने वाले समय में भोजपुरी भाषा और सभ्यता–संस्कृति की अस्मिता पर प्रश्न चिह्न लग जाएगा।

* * *

दहेजी दानव

प्रभाष मिश्रा

''लिहीं बाबूजी हई सत्तुई पी लिहीं।''

इ बात कहत मनिया अपना हाथ मे लेहल गिलास के अपना बाबूजी कावर बढ़ा देहलस। बाबूजी पहिले त अपना मेहरारू तेतरी काओर देखुवन ,बाकिर जब उनका चेहरा पर कवनो भाव ना दिखाई देहलस त उ मनिया से कहुवन– तु पीले बेटी, हमनी के छोड़ ।

अरे ली ना बाबूजी ,सबेरे से ते एहीग कुछ खईले नई खी, राऊर तबीयत आऊर खराब हो जाई।

माई तुहु ल हई ,पिले–एक गिलास अपना माई काऊरी बढ़ा के मनिया सत्तुई पिये के देहलस।

रामअसरे, तेतरी कावर देखत कहुअन कि– तु पिले,देखे तहार चेहरा झुल गईल बा।

तेतरी अपना साड़ी के आंचरा से आपन चेहरा के पोछत कहली–रऊरो बड़ी कमजोर लागतबानी। रऊरो पी लिहीं। दुनु जाना एक दुसरा के पिये के कह के ,मनिया के हाथ से गिलास ले लेहलस लोग।

मनिया दोबारा बाबूजी के गिलास में सत्तुई भर देहलस। माईयों के गिलास में भरे लागल ,बाकिर ऊ ना–ना अब ना चाहीं कह के गिलास मनिया के दे देहली।

सत्तुई पिके रामअसरे मनिया से पुछले –का बेटी , फेरू फोन आईल रहल हे?

मनिया आपन चेहरा मुरझाके ,बाबूजी के हाथ से सत्तुई के पियल गिलास ले के , धीरे से कहलस– हं आईल रहल ह।

रामअसरे–का कहत रहल हे ?

मनिया–पुछत रहले ह कि माई– बाबूजी कुछ खईलसे लोग कि ना ?

त फेर ते का कहलिस – रामअसरे पुछले ।

मनिया– ना अभी कुछ नईखे खईले लोग । आज खाना नईखे बनल। त एहपर भईया खिसिया गईले हे। आ कहुवन कि –जो , जल्दी से सत्तुई घोर के माई –बाबूजी के पियाव आ तेहु पिले। फेनु खाना बना के हमरा के फोन करिहे।

तेतरी– ओकरा जब एतने माई बाबूजी के ख्याल रहीत त, फेरू ई अईसन गलती ना नु करीत।

रामअसरे– देख मनिया,ओकर फोन आवे त हमरा के मत दिहें।आ ओकरा से कह दिहे कि बाबूजी के उनका से नईखे बतिआवे के।

मनिया अपना माई से दाल के पानी ले आवे के कह के खाना बनावे चूल्हा तर चल गईल।

आज राजू के भिसहरे फोन आईल रहुए । तबे से ई सब बवाल मचल बा । राजू के बिआह ,उनकर बाबूजी तय कर देले बारे। राजू के बिआह में उनकर बाबूजी आठ लाख रूपिया आ एगो मोरसाईकिल दहेज में मंगले रहुअन। छव लाख आ एगो गाड़ी पर बात सेटिया गईल बा।

राजू के पॉच साल पहिले रेलवई में टीटी के नोकरी लागल रहुए। एम. ए. कके ऊ तीन साल ले पटना में कोचिंग कईले रहुवन।तब जाके नोकरी लागल रहे।

जबसे राजू के नोकरी लागल रहे ,तबे से रामअसरे दहेज में खूबे भंजावे के पिंजवले

चोट

रहुअन।पांच साल से , दुआर पर अगुआ लोग छाल छील देले रहुए लोग।अब जाके मन जोगे रिस्ता आईल रहुए।रामअसरे के मन माफिक पैसा दहेज में मिलत रहुए।

बाकिर आज भिसहरा राजू के फोन आईल रहुए, ऊ अपना बाबूजी के एकदम अच्छा से बता देहुवन कि अगर उनका बिआह में दहेज लेम त उ बिआह ना करिहे। ऊ कहुए की –रऊरा एको रुपया , ना त लईकी वाला लोग से मांगेम ,ना सामान मांगेम ,आ ना लेम।

ई बात सुनी के रामअसरे एकदम धनक गऊवन।ऊ पहिले त खूबे जोर–जोर से चिल्लात् राजू के डंटुवन, फेनु उहो कह देहुवन कि– तोरा के पढ़ावे में जवन पैसा लागल बा ऊ पहिले दे , आ ओकरा बाद जवन करे के बा कर।

एहपर राजू तीर नियर अपना बाबूजी के ह्वदया पर चोट करत बाबूजी से सवाल कऊअन कि – रऊरा अपना लईका के पढ़ावे आ पाले–पोषे के पईसा लईकी वाला से वसूले के का अधिकार बा ? का रऊरा हमरा के बेचतानी?

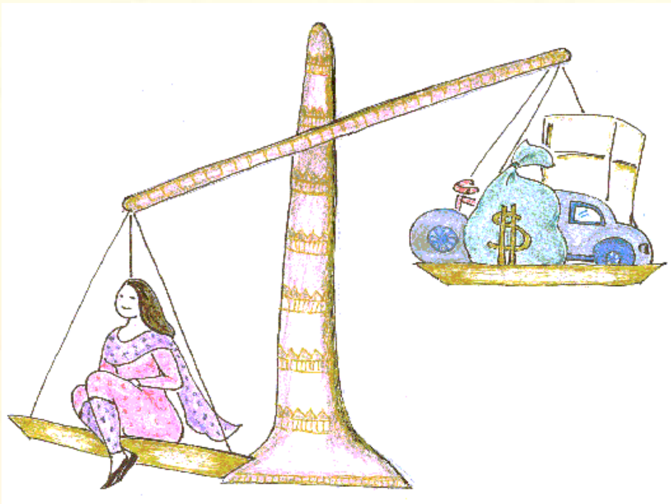

रामअसरे एह बात के सुन के कहुअन – देख ते अभी लईका बारिस , तन्नी–मन्नी पढ़ का लेहलिस तेहुँ अपना के तेज समझे लगलिस। तोहार बहिन मनिया ,के जब बिआह करे जाईब त लईका वाला पईसा लिहें की ना ?

आ देखे राजू , तहार बिआह हम तय क देले बानी , आ जेंग हम चाहत बानी ओहींग बिआह होई। हम तहार बाप हई मत भूल।

बाकिर एहपर राजू अपना बाबूजी के कहले–देखी बाबूजी, ई दहेज लेहल– देहल बड़ी खराब चीज हे ।एही से केहूँके घरे लईकी भईला पर लोग दुखी हो जाला ।लईकी सन के समाज में बराबरी तक के अधिकार नईखे मिलल।लईकी के भी पढ़ाई में आ पाले – पोषे में भी खर्चा होला।एहसे बाबूजी ,रऊरा हमार बात मान ली, ना त हमरो बात फाईनल बा कि हम शादी तबे करेम जब रऊरा हमरा बिआह में दहेज ना लेम।

इहे सब बात भईला के बाद घर में त्राहिमाम मचल बा। रामअसरे , राजू में बचपन से अभी ले भईल खर्चा जोड़ावत आ गरिआवत तेतरी से कहतरे कि –अब तहार बबूआ समाज सुधारे चलल बाड़े।अपना घर के बर्बाद क दी हीं ।एकर जवन हाल बा कर पर बसतर ना चढ़ी।

तेतरी अलाप करत बारी।उहों कहत बारी की हमहु सोचले रहनी हे कि हमार घर दहेज के समान से भर जाई। ई त निस्तनिया अईसन निकलल कि मुहं में करिखा पोतवा दी।गांव के सभे लोग का कहीं।अब गावं में मुहं देखावे लायक ना रहेब सन।सभे कहीं की हमनी के लईका हमनी के बात काट दिहलस।

ई सब बात अभी चलतेरहे तलेक ले मनिया मोबाईल पर बतिआवत चूल्हा कावर से आईल आ बाबूजी कावर फोन बढावत कहलस – ल भईया बाबूजी से बतिआव।

पहिले त बाबूजी इशारा क के मनिया से फोन ना देबे के कहुअन ,बाकिर तब तक त उ फोन उनका हाथ के जरी चहुपा देले रहुए।

रामअसरे फोन ले के कहले – ह बोले , का कह के बा?आऊरो कवनो बात बा ?

राजू बाबूजी के खिसीआईल आवाज आ झनकार समझ गईल रहुअन। उ कहले–बाबूजी ,हम अपना पूरा जिनगी में अईसन कुछ नईखी कईले जवना से कि रऊरा सम्मान में कमी आईल होखे।हम हमेशा रऊरा लोगिन के बारे में ही सोचनीं।रऊरा लोगिन के सहयोग आ आसिरवाद के बिना हम कुछुवो नईखी कर सकत। बाबूजी , पैसा त माटी ह,झणभंगुर ह ,आजु रही काल्ह ना रही।हम त नोकरी करते बानी, जमीन– जायजाद बरले बा।सबकुछ केतना सुख– चौन से चलता।जेंग मनिया राऊर बेटी बिया उहो लईकी राऊर बेटी बिया।रऊरा एगो परिवार से रिश्ता बनावे जात बानी आ शुरूए में एतना अविश्वास आ शोषण ।बाबूजी , ई हमनी के समाज के फईलल बड़हन बुराई बा।रऊरा चाहेम त एह पर लगाम लगावे के कोशिश शुरू हो जाई। रऊरा जवन सोचतानीं की गावं– जवार में राऊर बदनामी होई त उ गलत बा।रऊरा सभे लोग के बीच में एगो उदाहरण बन जाएम।शायद ,धीरे–धीरे सभे गावं –जवार के लोग एह से प्रेरित होखे ,आ धीरे– धीरे ई प्रथा खत्म हो जाव।

बाबूजी , माई के रऊरा समझाई।मनिया त हमार बात समझत बिया।

बाबूजी –देखे राजू ,ई जमाना आ समय अब तोहरे लोगिन के बा। अगर तु चाह तरे कि तहरा बिआह में दहेज ना लिआव ,ते अब ना लिआई।परिवार से परिवार के रिश्ता में सचहूँ ई एगो बाधा बा।तहार बिआह ओहीजी होई आ बिना दहेज के।हम तहरा माई के समझा देम तु निश्चिंत रह।राजू बाबूजी के गोड़ लागी के फोन राख देहुवन।

अब ऐने मनिया आ रामअसरे मिलके तेतरी के बड़ी देर ले समझवलस लोग । धीरे–धीरे तेतरी भी बात मान गईली।फेनु रामअसरे ई सब बात अपना होखे वाला समधी के बता देहुवन।ई खबर सुन के लईकी के पूरा परिवार खुशी से भर गईल।

आज सचहूँ में भोजपुरिया समाज के ,एह भयावह कुचकुच अंधार दहेजी रूपी करिखा के खत्म करेमे , राजू जवन जीवटता देखईले बारे आऊर पुरान सोच वाला अपना माई–बाप के मनवले बारे, ऊ एगो अंजोर कोना देखावत बावे ,जवन शायद पुरा भोजपुरिया समाज के एह अंधार से निकाले के कुव्वत रख तावे।आजु ,समय के बड़हन जरूरत बावे कि सभे युवा ,राजू के राहता पर चल के सही फैसला लेस आ अपना पुरनिया माई– बाप के दहेज विरोधी बिआह खातिर राजी करस।एही में पुरा भोजपुरिया सभ्यता आ संस्कृति के भलाई बा।

* * *

आवश्यकता है

लोकतंत्र की बुनियाद

(राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका)
दिल्ली से प्रकाशित, के लिए
पंचायत व जिला स्तर पर
संवाददाता, क्षेत्रीय प्रतिनिधि
की आवश्यकता है।

ईच्छुक व्यक्ति संपर्क करें।
Ph.: 09811441974, 09711441446
loktantrakibuniyad@gmail.com

TARGET–2

COACHING CENTRE

Director : B.N. Singh
Contact : 0615424201
9162864338

नोट : अब तक सौ ज्यादा विद्यार्थियों ने नौकरी पाई

Bank/SSC/Rly/ AF/Navy/
NDA/MBA/BPSC-PT/NET/BPS

Near Nagrpalika Bhawan, Siwan
B.O. : Near Shekhar Cinema, Siwan

Director
Rizwan

Co-Ordinator
Abhinav Kumar

AL.J.R INTERNATIONAL

TECHNICAL TRAINING CENTRE

Note : Online Passport, Renewal.

Raghunath Market, Near Punjab National Bank,
Sadhu Medicine Complex, Babuniya More, Siwan, Bihar-841226
Ph. : 07352868441, 9661494313 , 08083406601, 07543807786
E-mail : shaikh1788@gmail.com; jr.international1786@gmail.com

विदेश जाने के लिए संपर्क करें

कहां गईलें 'विकलांग'

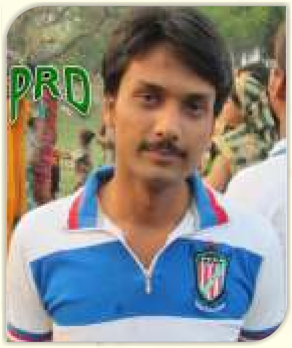

प्रिंस रितुराज दुबे

भारत जईसन देश में विकलांगन के हक मारतिया इहा के परसासन .

सरकारी नोकरी के संघे संघे हर क्षेत्र में विकलांग के बहिष्कार होता।

हम अक्सर देखले बानी की विकलांगता के प्रमाण पत्र बनवाए खातीर पईसा मागे ला लो,

जवन की मगनी (मुफ्त) में बनेला एकरा खातिर कऊनो पईसा न लागेला , झारखण्ड , यूपी , बिहार जइसन परदेस में त खुल के इ काम होला , जब हम एगो दोस्त के सर्टिफिकेट के रिनिवल करावे खातिर गईली गोपालगंज में त उहा हमनी से २००० रुपया के मांग कईल गईल , उहे सर्टिफिकेट एगो दोसर संघतिया के हम दुर्गापुर में बनवले रही त उहा एको पईसा ना लागल रहे ,जब हमनी गोपालगंज के हस्पताल में २००० रुपया के मांग कइले लो त हमनी सीधा कहनी की हम पईसा ना देम काहे की एकरा खाती पईसा ना लगे ला , त उ लोग कहल की बिना पईसा के सर्टिफिकेट बनावे में १ बरिस लग जाई , हम उहा से चल गईनी आ हमार सर्टिफिकेट उहा ना रेनेवल ना भईल , इ बात १ साल पहिले के ह .

सबसे घात तब होला जब नोकरी के इम्तिहान के समय विकलांग के चौथा , पाचवा ताला पर भेज देला लो आ पूरा फिट आदमी के निचे ही इम्तिहान खातिर बईठावे ला लोग ।

सरकारी नोकरी में छूट के झासा दे के उनकर बहिष्कार कईल जाला ,जे जे फिट छात्र बा ओहके पहिले लिहल जाला अऊर विकलांग छात्र के स्कोर अधिक बना के छाट दिहल जाला , अब बेचारा विकलांग करे त का करे ।

सबसे पहिले कदम सरकार के इ उठावे के चाही की , विकलांग कोटा के भीतर जे जे बा ओकरा के OBC आ GEN. कोटा के जईसन विकलांग कोटा रहे ,

रेलवे ट्रेन में सबसे पीछे चार गो सिट वाला एगो डिब्बा रहेला जेमे विकलांग खातिर उ रहेला बाकिर ओहिमे स्टाफ आ बाहरी लोग बईठे ला , ओकर बिरोध कईला पर धमकी मिले ला विकलांग के पक्ष में कऊनो रेलवे के पुलिस भी काम ना आवेला उत्तर भारत में सबसे अधिक इ काम होला।

रेलवे के कम से कम ३० से ३५ सिट वाला डिब्बा विकलांग खातिर देवे के चाही

जवन पूरा ट्रेन के बिच में उ बोगी लागल होखे , अऊर उ बोगी में रेलवे के पुलिस भी होखे।

विकलांग लोग के जवन पेंसन दिहल जाला उ भारत के अलग अलग परदेश में अलग अलग बा ,

केहू के उ फायदा मिलता त केहू बंचित बा , बस में यात्रा करत समय जवन छुट विकलांग के मिले के चाही उ छुट कतही मिलता त कतही नईखे मिलत , जब बस छुट खातिर विकलांक पहचान पत्र देखावत बा त ओकरा के उचित छुट मिले के चाही।

सरकार से निहोरा बा की विकलांक के जिनगी में जेतना कठिनाई मिलता ओकरा पर धेयान दिहल जाव आ ओकरा के दूर कईल जाव , विकलांग के प्रमाण पत्र बनावे खातिर उचित उपाय कईल जाव जेकरा से जल्दी से जल्दी विकलांग के ओकर प्रमाण पत्र मिल जाव अऊर ओकरा बेर बेर दउरे के ना परे ।

सरकारी नोकरी में विकलांग के उचित पद के अनुसार भर्ती कईल जाव उनकर छुट ST,SC के जईसन मिले

उनकरा खातिर अलगा से छुट के सघे सघे इम्तिहान के समय रेलवे पास दिहल जाव । ताकि उनकर मान सम्मान बचल रहे। उचित कानून बनाके के विकलांग के खातिर अच्छा अऊर उचित सुबिधा दिहल जाव ,

कुछ अईसन परदेस बा जहवा के सरकार के ओर से विकलांग के बिसेस दर्जा दिहल गईल बा आ विकलांग कहे पर रोक लगावल गईल बा। अईसन नियम हर परदेस में लागू होखे के चाही ।

विकलांग भी इ देस के सम्मान हवे , उनकर के सरकारी नोकरी से बंचित ना कईल जाव ।

विकलांग के उपहास उढावे वाला पर कड़ा कारवाही कईल जाव।

ऊपर कईगो अईसन बात लिखल बा जवना के जारी कईल गईल बा बाकिर सही तउर पर लाभ नईखे मिल पावत ।

* * *

सन्यास के नेवता

डॉ. रमाशंकर श्रीवास्तव

नेवता देखते मन चटक गइल। आहि दादा, हे भदवारी में ई बिआह के नेवता कहां से। गिरधारी भगत बहरा के नेवता जल्दी छूअस ना, दोसरे से पढ़वा लेस। अपने छूइहें त ओकरा पहिले हाथगोड़ धो के मुंह में कुछ डलिहें–मुंह मीठ करिहें तब भोले बाबा के नाम लेके नेवता के लिफाफा खोलिहें। अब त नेवता लेके आवे वाला हजाम ठाकुर लोग दुलुम हो गइल।

समाचार रहे कि गजेन्दर बाबू आपन घर–दुआर त्याग के साधू बने जात बाड़े। इलाका के जानल मानल आदमी कवनो काम करेला त होल पब्लिक के खबर कर देला। एह से हित–कुटुंब के नेवता पेठवले के अगिला दस तारीख के सभे भोज में सामिल होखो। एह नाशवान देह के कवनो ठीक नइखे, देश आ दानाई कवनो रसातल में डूबल जाला। एह छहंतरी दुनिया के देखही में उमिर तिरपन साल पर जा चहुंपल। सगरो से नेहनाता तोड़ के अब भगवान से लौ लगवले में भलाई बा। ई अनाज–पानी, धन दौलत आ बाल–बच्चा में आदमी कबले भरमाइल रही। सभे पधारो आ दावत में खा–पी के गजेन्दर जी के आसीरवाद देव जवना से उनकर संन्यास मार्ग के विधिन–बाधा दूर होखे।

बिआह के नेवता ना भइला से बहुत लोग के चित्त के शांति मिलल। ना त एह साल के कड़ा लगन में एके दिन में चार–चार, पांच–पांच गो नेवता–शगुन करे में चेट के हालत खस्ता हो जात रहे। गजेन्दर बाबू के नेवता में खाली भोजन आ संन्यास के जिकिर रहे। अब ई पता नइखे चलत कि ऊ अचानके साधू बने के काहे सोच लेहलन। परिवार में आपन मेहरारु आ लड़किन से कवनो खटपट त सुने में आइल ना। एगो बात बहुत साल पहिले पता चलल रहे कि मोकदमा में हरला के बाद ऊ इनार में कूद के जान देवे पर तइयार रहले। एगो गोड़ लटका के अबहीं ढेकुल के रसरी पकड़लहीं रहले तबे लोग देख लीहल। पांच जाना उनकरा के घींचघांच के बाहर कइलें। ओही घरी इनार से मुक्ति मिल गइल रहित त आज हई संन्यास के कवन जरुरत रहे।

गिरधारी भगत तइयार भइले। नाहियों त तीन कोस जमीन नापे के रहे। आपन मोटर साइकिल के पेट्रोल टंकी लाक करत रहे। ऊ मेकेनिक के दोकान में पड़ल रहे। पड़ोसी के जीप रहे मगर एह घरी ओह लोग से बोल–चाल बंद रहे। एह से जीप मांगल जायज ना रहे। अब आन्हार होखे लागल। तले उनकर सरपुत आपन मोटर साइकिल दउड़वले आ गइले। नया मोटरसाइकिल पा के ओकर आवारागर्दी बढ़ गइल रहे, रास्ता में केहू के ठोकर मार के फूफा के लगे लुकाए आइल रहे। गिरधारी भगत दोसरा राह से ओकरा के साथे लेके निकल गइले।

गजेन्दर बाबू के दुआर प सांझ होत–होत डेढ़ सौ लोग जुट गइल। आस–पास के साधू –संन्यासी भी कम ना रहले। साधू लोग के झुंड में निर्गुन भजन चलत रहे। अब गजेन्दर बाबू के नया गेरुआ बाना पेन्हावे के तइयारी होखे लागल। मेहरारु लोग के आंख लोर से डबडबा जात रहे। एक जानी बुढ़ियो बोलली–गजेन्दर त आपन जवानी माटी में मिलावे जात बाड़े। लोग पैंसठ साल के उमिर तक आपन घर गृहस्थी संभारेला तब कहीं सन्यासी बने के सोचेला। पता ना असली कारण का बा जे ऊ साधू बने के एक ब एक ठान लेहले।

एगो दोसर अकिला बुआ लोग के बात पर हंसली। अभी दम धरी सभे। दू दिन में सब बात फरिया जाई। अभी हड़बड़ाइल नोनिया नियर माटी मत कोड़अ लोग। ओने गजेन्दर बो भारी उदासी में डूबल रहलीं। आज उनकर हीरा नियर मरद माटी बने जात बाड़े। गेरुआ पेन्हा के कमंडल थमले ऊ दुनिया के कवन भलाई क दिहें। अपने घर में एतना काम पड़ल बा. उहां के मुंह से हमरा सामने झूठो ना निकलल ह कि तुहूं साथे चलअ। हमरा साथे सधुआइन बन के रहिहअ। बड़–बड़ साधू–महंथ लोग आपन–आपन सधुआइन साथे रखेला। आ एने आपन कानून इहें का अलगे रखीं लें।

भोज के लोग खूब अड़ंच के खाइल। हलवाई लोग के दल पूड़ी–कचौड़ी, खीर, सब्जी बनावे में जुटल रहे। तबले हल्ला हो गइल कि आसमान बदरी से लदर गइल बा। कहीं भगवान जी आ गइले त सब व्यंजन पानी में छिलबिल हो जाई। खाइल–पीअल जल्दी–जल्दी खतम करीं लोग। सभे पहिले भोजन में लागल। संन्यास के प्रोग्राम बादे में होई। संन्यास के पगड़ी, जोड़–जामा जवना

महात्मा के हाथे पेहनावे के रहे उनकरा पेट में अचके बाधा उपट गइल। पेट में खीर–पूड़ी के मात्रा चहुंप गइल रहे। गजेन्दर बाबू तीन हाली आ के उनकर हाल–चाल पूछ गइले। डाक्टरो आके कहले कि साधू बाबा के पेट से पहिले खीर–पूड़ी निकालने का उपाय किया जाएगा तब दवा दी जाएगी। खरबीरवा दवा धांय–धांय दियात रहे, बाकिर बाबा के पेट फूल के नगाड़ा भइल रहे। दरद नरम ना पड़त रहे। ढेकार भा गैस–फैस गुमसुम रहे। बाबा आंख मूंदले पड़ल रहले। एगो संतमूर्ति प्रवचन देबे में लागल रहले–मनुष्य जितना ही छटपटाता है, ममता की रस्सी उतनी ही कसती जाती है।

सवाल रहे कि गजेन्दर बाबू के संन्यास देवे के जिम्मा सुखारी बाबा के ही संउपल गइल रहे। आ उनकर हालत अइसन हो गइल। कुछ बुजुर्ग लोग बतावल कि संन्यास ग्रहन करे के जब दिन–मुहूर्त रोपा गइल बा त ई काम ओही मुहूर्त में कइल उचित होई। बेमारी प केकर बस बा। संत–साधू लोग एही तरे बेमार पड़त रहेला आ भगवान के कृपा होते उठ बइठेला। एही भोज के हउंहार में दूचार आदमी अइसनो आइल रहले जेकरा गजेन्दर बाबू से कुछ विशेष बात करे के रहे। संन्यासी बनते गजेन्दर बाबू कहीं पिछला हिसाब भुला गइले तब त भारी घाटा लागी।

गजेन्दर के बहत्तर साल के बएसी के दोसरे चिन्ता–फिकिर घुलत रहले–बबुआ, तू त साधू बनके घर से चल जइबअ। फेर कोर्ट कचहरी में तीन बीगहा खेत पर आठ साल से मोकदमा चलत बा त ओकर का होई। हमरा जइसन बूढ़ पुरनिया से अब केतना सपरी। ओने बीसनाथ चौधरी गजेन्दर बाबू के कान में धीरे से कहले–टैक्टर वाला साढ़े छ सौ रुपिया आज तक ले बाकिए रह गइल ए बाबू। एगो कुर्सी प कोना में बइठल समधी जी आंख पोंछत गजेन्दर से कहले–शादी वाला चार हजार हम छोड़े के तइयार बानी बाकिर अपने भी आपन हठ त्याग के घरे प रहीं। एह उमिर में राउर साधू–संन्यासी बनल सोभा नइखे देत। गजेन्दर सबके बात चुपचाप सुन लेहले। मुहूर्त हो गइल। दोसरा साधू के हाथ में गेरुआ वस्त्र दिया गइल। सुखारी बाबा के हालत में कवनो सुधार ना भइल। तले एही बीच पड़ोसी के भुसउल में आग लाग गइल। भगदड़ मच गइल। लोग आग बुतावे लागल। गजेन्दर के भुसउल लगहीं रहे। ओमे नौ बोरा गेहूं धइल रहे। गजेन्दरो कूद–कूद के भुसउल में बाल्टी से पानी फेंके लगले। अब दोसरे चिलफिल लाग गइल।

एगो आदमी आके बोलल–ए गदेन्दर बाबू। सुखारी बाबा के हालत ठीक नइखे। एने सन्यास लेबे के घड़ी बीतल जात रहे। केहू कहल–साधू–संन्यासी लोग घड़ी–मुहूर्त के फेर में ना पड़ेला। सुखारी बाबा के खटिया प लोटा के अस्पताल ले जाए के तइयारी भइल। गजेन्दर के मन फिकिर में पड़ गइल। संन्यास के बाना धारण करे से पहिले सुखारी बाबा के प्रान बचावल जरुरी बा। अस्पताल चहुंपते डॉक्टर कहले–अब दवा–बीरो बेकार बा। बाबा बैकुंठ लोक चल गइनी। उहे संन्यासवाला गेरुआ बाना बाबा के पेन्हाके समाधि दे दीहल गइल। लोग कहे लागल–संन्यास के नेवता सहल ना। संन्यासी के मुअले से नेवता नसा गइल। एह गांव में अइसन भोज अब कबो ना होई। घरे लउटत बेर गिरधारी भगत के मन में केतना सवाल उमड़त रहे–नेवता में कवन दोष रहल ह भाई। बूढ़ महात्मा अपना पेट के औकात से बाहर ठूंस–ठूंस के खा लेहले। पेट प अकरहर होई त मुंह–पेट चलबे करी। बाबा के मुंह–पेट बैकुंठधाम तक चहुंपा देहलस। जेकर मन भूसा–अनाज से मुक्त नइखे ओकर संन्यास सधल कठिन बा। भुसउल के आग जबले बुताई ना तबले संन्यास के संकल्प पूरा ना होई। ई बात दोसर लोग समुझत रहे मगर गजेन्दर के मन में ढुकत ना रहे।

* * *

जरे दऽ, जरल नईखे।

अभी जरता जरे दऽ, जरल नईखे।
मुआवल ह मौत से, मरल नईखे।।
प्यार में पेरा के, पागल भईल रलऽ
कवनो डाईन भूतिन के, करल नईखे।।

सुबेरहीं ठीके–ठाक रलऽ, हमरा से बात कउवे।
जाए के बेरी मिलावे खातिर, आगे हाथ कउवे ।।
हामरा तबे बुझउवे, रोग अभी पसरल नईखे ।।
अभी जरता जरे दऽ, जरल नईखे।

ओकरा प्यार के किस्सा के, गली–गली में चर्चा भईल।
जवना से प्यार करत रहे, ओकरा बियाह में बाड़ा खर्चा भईल।।
अबो लोग के चित्त से, उ उतरल नईखे ।।
अभी जरता जरे दऽ, जरल नईखे।

प्रित त पावन ह, शुरू दिल से खतम सांस पर होला।
प्रेमिका के विदाई डोली में, प्रेमि के बांस पर होला।।
इहां केहु से केहु जीद पर, अड़ल नईखे ।।
अभी जरता जरे दऽ, जरल नईखे।

हामार दोस्त रहे बचपन के, एहिसे हामरा दिल में टिस बाटे।
मुअला पर झांकियो पारे ना अईली, एकरे त हामरा खिस बाटे।।
बुझाता, ओकरा तड़प के मुअलो से, उनकर पेट भरल नईखे।।
अभी जरता जरे दऽ, जरल नईखे।

ऐ हवा बहा के लेजा खुशबू, लाश के उनका बंगला तर।
सिगांर करत होईहें बईठ के उ, आपना जंगला तर।।
चिन्ह जईहें लाश मजनूं के, अभी सरल नईखे।।
अभी जरता जरे दऽ, जरल नईखे।

–मनोज मजनूं

ब्रह्म बाबा

केशव मोहन पाण्डेय

हमरा गाँव के ब्रह्म बाबा खाली पीपर के पेड़े ना रहले, आस्था के ठाँव रहले, श्रद्धा के भाव रहले। सामाजिक, पारिवारिक आ ग्रामीण जीवन–शैली के मिलन के छाँव रहले। समूचे बहेलिया टोला के पहचान रहले। मौसम कइसनको होखे, ऊ त एगो तपसी जस अपना तप से सबके सुख चाहें। जेठ के ताप में भी ऊ अपना नवका पतई से सबके तन शीतल आ मन शांत करे वाला बेना रहले। ऊ एगो जड़ (पीपल) हो के चेतन स्वरूप में सगरो गुड़ के भंडार रहले।

हम आजु ले अपना होश में ओतना बड़का पीपल के पेड़ कहीं नइखी देखले। विशालता में भी, वैभव में भी आ विस्तार उनकर डाढ़ फइलल रहे बाकीर तना से दूब्बर–पातर। उतरही डाढ़ तीन–चार मीटर पर फिर से धरती के छुअले रहे, तब जा के बान्हा के ऊपर उठल रहलें।

कई बेर लइकाईं के नजर में बसल दृश्य जिनगी भर हीयरा में हिलोरत रहेला। हमरा आजुओ ईयाद बा कि शायद सन 1982–83 के बात होई। अयोध्या से राम लीला मंडली आइल रहे। हमरा टोला के लगभग सगरो मेहरारू लोग आ ओह लोग के साथे दीदीओ लोग रामलीला के रस लेबे जाव। सुरक्षा के खयाल क के भाइयो लोग जाव। चाचा–काका लोग के साथे भीमो बाबा कबो–कबो जास। ओह उमीर ले माई के अँचरा से हमके अलगा रहे के कवनो सवाले ना रहे। माई के अँचरवे ओढ़ना, बिछवना आ ओहार रहे। ओही से ढाँक के माई दू साल पहिले ले हमार भूख दूर करें। बतीयो त सहिए ह कि बच्चा के जनमते पहिला परिचय ओकरा माई के अँचरवे से होला। हमार लइकाईं त माई के अँचरा आ ब्रह्म बाबा के छाँव में ही बितल बा। हम आजुओ दूनू के महिमा के कायल रहेनी।

हल्दी कुँवर ब्रह्म बाबा के अस्थान पर होत रामलीला देख के लक्ष्मण के शक्ति लागल, उनके धरती पर गिरल, राम के विलाप, रावण के वध आदि चित्र एतना साफ उतर गइल कि आजुओ ईयाद बा। कबो–कबो लागेला कि शायद ओही के परताप ह कि अभिनय करे आ करावे में हमार रूचि हो गइल बा। हल्दी कुँवर बाबा नारायनी के कटान में स्वाहा हो गइले। तब सगरो जवार में हमरा दुआर पर के ब्रह्म बाबा हमरा घर, टोला के साथे हमनीओं के पहचान बन गइले।

ब्रह्म बाबा के एगो डाढ़ दखिन के ओर जाए वाला रास्ता के समानान्तर हमरा दालान के पीछे ले गइल रहे। ओकर ऊँचाई तनी कम रहे, से हम लइकन के टोली ओही डाढ़ से हो के ब्रह्म बाबा पर चढ़ जाईं जा। हमरा खातीर ब्रह्म बाबा के ऊहे डाढ़ सबसे प्रिय रहे। ओकरा अंतिम छोर पर बइठ के ऊपर–नीचे होखे के मजा लिहला के अलगहीं आनन्द रहे। ओह आनन्द के आगे बड़को लेमचूस के रस फिका लागे। हमनी के टोली ब्रह्म बाबा के ओह डाढ़ पर चढ़ल आ चढ़ के सगरो पेड़ पर ओल्हा–पाती

खेलल आपन सबसे बड़का जीत समझे। हँ, खाली पुरूब आ पुरूबाहुत हो के ऊपर के ओर गइल डाढ़ पर जाए के केहू के हिम्मते ना करे। कई बेर त दुपहरिया में खेले के जिद्द कइला पर माई कहें, – देख बाबू! दुपहरिया में ब्रह्म बाबा ओह पर आराम करेले।

ब्रह्म बाबा के बारे में एह तरे के रोज कथा–कहानी सुने के मिले। कई बेर त सुनि जा कि 'पेड़ उड़ जाला।' 'ब्रह्म बाबा पेड़वे पर बइठ के रिश्तेदारी करे जाले।' 'पहिले हल्दी कुँवर बाबा से मिले जास, अब मलाही टोला के बाबा से मिले जालन।''घर के बड़का तसला से बड़ त उनकर फूल के लोटा बा।'' छछात दुपहरिया में खना बनावेले। – एह तरे से किसिम–किसिम के किस्सा सुन के कान पाक जाव। मन में डरवो बइठ जाव। डर के ऊहे असर रहे कि हमनी के कबो पुरूबवारी डाढ़ पर ना जाईं जाँ आ ना ऊपर के कवनो डाढ़न पर भी।

पछिम के ओर, ठीक हमरा दुआरी पर, एगो धोधड़ रहे। बड़का धोधड़। एतना बड़ कि कबो–कबो आइस–पाइस खेलत हमनी

के ओही में जा के लुका जाई जाँ। हमार माई बतावस आ देखलो से लागे कि ऊ एगो मोटहन डाढ़ के चिन्हा रहे। कहल जाला कि पीपर के डाढ़ के छाँह घर पर ना पड़े के चाहीं, आ ऊ डाढ़ पछिम ओर हमनी के घर के ऊपर ले आइल रहे। एक बेर केयाम देवान सबसे नौ–निहोरा क के कटवा ले गइले। ओही रात के ईया सपना देखली कि दुआरे केहू पीअर धोती पहिनले, तन में मोटका जनेव झलकावत आइल बा। ओकर एक्के गो हाथ रहे। ऊ पीड़ा से कोंहरत रहले आ कहत रहले कि हमार हाथ कट गइल। होत फजीरे ईया बाबूजी आ लाला पर राशन पानी ले के पड़ गइल रहली।

हमरा साथे ओह धोंधड़ के एगो अलगे कहानी बा। एक बेर के बात ह। हमनी के आदत से मजबूर। आइस–पाइस के खेल जमल रहे। हम झट से दखिनही डाढ़ से होत ओह धोंधड़ में लुकाए खातीर कूदनी। कूदनी कि नीचे ध्यान गइला पर पराने सूख गइल। ओही में एगो करइत साँप बइठल रहे। शायद ऊ ब्रह्म बाबा के परतापे रहे कि हम झट से निकलनी आ अपना से तीन पोरसा ऊँचाई से नीचे कूद गइनी। माई सुनली त हमार परान बचावे खातीर ब्रह्म बाबा के दसो नोह जोड़त एगो पतुकी भाख देहली। कई शनिचर ले हम जलो चढ़वनी।

एह तरे के घटना पूरा टोला के साथे कई बेर घटल रहे आ कई बेर पतुकी चढ़ावल जाव। जल, अछत, फूल से धन्यवाद दिहल जाव। केहू के माता जी निकलें, केहू बीमार पड़े, केहू के पेट गड़े लागे, केहू के मरद खिसीआ के बहरा भाग गइल, केहू के बकरी भूला गइल, केहू के गाय–भँइस बिआइल, केहू के घरे कवनो नया काम भइल त ब्रह्म बाबा के पतुकी चढ़ावल जाय। तब देखे के मिले कि ऊ एगो खाली पीपर के पेड़वे ना हो के टोला भर के आस्था, विश्वास आ सुरक्षा के कारण आ जिम्मेदार के साथही सबके घर के आदरणीय पुरनिया लागेले। हमरा टोला के ऊ ब्रह्म बाबा कई बेर केहू के घर पर कवनो बिपत मडरइला पर ह्रदय के हिम्मत बन जाले। तन के ताकत आ आँख के असरा बन जाले।

गरमी में जब ब्रह्म बाबा के अंग–अंग से नवका पतई से स्निग्ध शीतलता भरल चमत्कार चमके लागेला आ दग्ध करे वाला सूर्य देवता के किरीन गरमी से बेहाल करे लागेले त ओह बेरा ऊ एगो विशाल मन वाला आश्रयदाता बन जाले। दिन के चढ़ते उनका छाँव में एगो विविधता आ अपनत्व भरल संसार के संरचना करे लागेलन। टोला भर के बुढ़उ लोग चौकी–खटिया डाल के देंह सोंझ करे लागेला लोग। हमनी के दुपहरिया में चढ़ल मना ह, से तरई–चटाई पर पचीसा के प्रोग्राम चालू हो जाला। जवान लोग के अलगे सभा जमेला। ओह लोग के आपन अनुभव बा। आपन चिंता बा। ऊ लोग पढ़–लिख के बेरोजगारी के चोट से अपना के असहाय बुझेला लोग। बाप–महतारी के असरा, भाई–बहिन के जिम्मेदारी आ बेरोजगारी के वास्तविकता के तलवार से घेराइल जवान भाइन के गरदन हमेशा ठेहे पर पड़ल रहेला।

कई जवान अपना के निकम्मा समझेला लोग। जवानन के ओही विचार–मंथन वाला सभा में मनोरंजन आ सृजनात्मक पक्ष के एगो नया रूप सभे देखे लागल। टोला में रामलीला मंडली बनल। पढ़ल–लिखल जवान अब दिन भर रामचरित मानस के पढ़ाई आ तैयारी के साथे अपना चरित्र के निखारे में लागल रहे लोग। चर्चा से हमनीयो के बुझा जाव कि टोला के कुछ नौजवान आपन रास्ता बदल देहले बाड़े। ओह लोग में कुछ बाउर नियत उपजे लागल बा। नारायनी के दियरा में ऊ लोग रास्ता भूला के कान्धा पर बंदूक ढोए के तैयारी में लागल बा लोग।

चिंता सबके रहे। ताश के दाँव तैयार करत बुढ़उओ लोग में। रामलीला के अभ्यास करत जवनकनों में। बेटी–बहीन के विवाह–शादी के साथे आपन दुख–सुख करत औरतो लोग में। खैर, रास्ता बाउर रहे, से केहू साथ ना दिहल। बरमो बाबा ना। परिणाम बाउरे भइल। करम के फल त भोगहीं के रहे। मिल गइल। ई ब्रह्म बाबा के छाँव के परताप रहे, या उनके औशधीय गुन, हमरा टोला में कबो केहू साँस के बीमारी के चपेटा में ना पड़ल।

भले टोला में केतनो शांति रहे, तबो ब्रह्म बाबा के लगे दू–चार आदमी लउकीए जाय। मौसम कवनो होखे। बहाना कुछू होखे। गरमी के दिन के ढलान पर हमनी के बोरा–तरई बिछा के पढ़े बैठ जाई जाँ। चौहान जी मास्टर साहेब के निर्देशन में रस बने लागे। बेल के रस। घूरा में पकावल बेल के रस। कबो–कबो हामी भरला पर हमनीयो के मिल जाव। बाबूजी, लाला, मास्टर साहेब आ भइया लोग त हिस्सा रहे लोग ओह रस–सम्मेलन के। मौका पर रहला पर बैरिस्टर मिया आ टेकमन राम मास्टरो साहेब के सम्मिलित क लिहल जाव। हमनी के पढ़ाई के बाद साँझ के बेरा नदी के ओर घूमें जाईं जाँ। घुमाई, नौकायन, स्नान आ फिर से घरे।

मौसम कवनो होखे, बाकीर बाबूजी आ लाला के ई दिनचर्या रहे कि साँझे–बिहाने रहेठा के खरहरा से दुआर बहारल जाव। गरमी में दुआर बहरला से धूरा ना उड़े से, पानी छिड़काव। जाड़ा में ब्रह्म बाबा के पतई आ चुअल चुन्नी से घूरा तैयार कइल जाव। कई बेर दऊँरी होखे त गरमी के रात में हमनी के ओही पर सुति जाई जाँ। गरमी से निजात पावे खातीर दुअरवे पर हमनी के पढ़इयो होखे। दुआर पर गाय बन्हा सं। दुअरवे पर बाबूजी के खाट लागे। अइसन कई बेर भइल रहे कि हमनी के पढ़त बानी जा तले ऊपर से करइत गिर गइल। कई बेर घोठा पर। गइयन के खूँटा पर। कई बेर रास्ता पर। एक बेर त चौहान जी मास्टर साहेब के गोड़े पर गिर गइल रहे। अइसन घटना गरमी आ बरसात में ढेर होखे, बाकीर जड़वो में बंद ना होखे। ई ब्रह्म बाबा के कृपा रहे कि कबो कवनो घटना ना घटल।

आज के राजनैतिक माहौल आ सामाजिक सोच के झरोखा से देखेनी त ब्रह्म बाबा सद्भावना आ समरसता के एगो ऊँचका आसन पर विराजमान प्रजा से प्रेम करे वाला राजा लागस। बाबूजी, लाला, माई, चाची आदि केहू में हम कबो जाति आ धरम के नाम पर कवनो फरक ना देखनी। ई व्यवस्था खाली बभनटोलीए के ना रहे। ताली कवनो हाल में एक हाथ से त बाजेला ना। जवना तरे एन्ने से कवनो भेद ना होखे, ओही तरे ओने से श्रद्धा रहे। ताश के दाँव होखे चाहे सामान्य चर्चा–परिचर्चा, भेदभाव के कवनो संकेते ना मिले। एक्के चौकी पर बइठ के बैरिस्टर मियाँ से उनका नौकरी के प्रगति पूछे लोग त, नवकी–पूरनकी ताश के बेगम के कार्ड पर टेकमन राम मास्टर के छेड़े लोग। अलगू राम के चिंता अलगे रहे

आ बिशुन के राजनैतिक विचार अलगे। चिंता, सुझाव, प्लानिंग आ व्यवस्था, एह सब के गवाह बने बरम बाबा।

ब्रह्म बाबा के आस–पास के वातावरन भी मोहक रहे। बेली, अड़हुल, बैजंती आदि फूलन के गंध, अमरूद, सरीफा, अनार, केला, आम आदि के पाकल मीठास, जोतल, कोड़ल, झोरल खेतन के तैयार भइल ढेला से उठत माटी के सोन्हउला सुगंध। एह सब से आवृत ऊ वातावरण अपना ओर आकृष्ट करे खातीर कम ना रहे। ओही वातावरण में कबो नगेसरी फुआ के ताना मारल, त कबो होरील ब भउजी के एक गाल कइल मजाक। लछमीना डोमीन जब टोला में सुपा–बेनिया लेआवस त लाला ब के लग्गे बइठे के चाहस। ब्रह्म बाबा के छाया में आपस पसेना पोंछत ऊ हम लइकन खातीर घिरनी बनावत रहस आ आपन सउदा बेंचत रहस। टोला के जवानन द्वारा कबो जहीर ब चुड़ीहारी से लाइफब्वाय साबुन माँग के लहर लुटल जाव त कबो रूप ठाकुर से दाढ़ी बनववला के चर्चा। पारस बीन के गँठल तन के कारन टकटोरल जाव त कबो भीम बाबा के सौ रोग के एक दवाई के विश्लेशण होखे। कबो बकरीदन के धागा कंपनी पर बहस त कबो बूढ़वा ब्रह्म बाबा के अथान पर सफाई के चिंता। ब्रह्म बाबा सबके साक्षी रहलन। गाँव में डकैती पड़ला के भी, रामलीला के आयोजन के भी। अनगिनत बारात के असरा दे के आव–भगत के भी। बेटी के विदाई के भी। पतोहन के स्वागत के भी। अनेक जग–परोजन उनका सहन में होखे। अनेक हर्श–अमरख के ऊ गवाह रहले। एही बीच में झगड़ा–लड़ाई, फौज–फौजदारी हमरो टोला में बढ़े लागल।

समय बदलल। घटना घटल। रामलीला बंद हो गइल। धीरे–धीरे दियारा से सटल हमरा टोला में चोरी–चमारी बढ़ गइल। नारायनी के बाढ़ से सासत होखे लागल। बलुई माटी पटे लागल। खेतन में ऊपज कम होखे लागल। गंडक के कटान बढ़ गइल। परिवार बढ़े लागल। अनाज के खपत बढ़े लागल। ऊपज घटे लागल। नौजवान भैया लोग दिल्ली, बंबई के रास्ता ध लिहले।

समय के उत्पात, जरूरत के मार, अपना पानी के रक्षा के अइसन चिंता भइल कि टोला से सभे पलायन करे लागल। टोला के दायरा सिमटे लागल, नदी के दियारा बढ़े लागल। सभे अपना चादर भर गोड़ पसारे लागल। एन्ने–ओने जगह–जमीन खरीद के झोपड़ी–मकान बनावे लागल। टोला के अधिकतर लोग तमकुही रोड में बस गइल। हमनीयो के। जमीन ओहिजा रहे। बगीचा ओहिजा रहे। बँसवार केहू कहाँ ले जाव?

बौद्धिक बल के अधिकता वाला लोग आपन दाँव हार के सुख–शांति चाहे। शारीरिक बल के अधिकता वाला लोग दोसरे भाषा बुझे। खैर, ओह परिस्थिति में भी जब हम कबो ऊहाँ जाईं त ब्रह्म बाबा के पेड़ के नीचे खड़ा हो के पसेना सूखाईं। पसेना का सूखाईं, उनका छाँव के, उनका स्नेह के, उनका आशीश के अपना में लपेट लेबे के चाहीं। हमार एक जने पट्टीदार हमरा आम के बगीचा पर आपन हक जमावे के कोशिश करें। लाठी के धौंस देखावें। मन में बड़ा क्रोध होखे। हर साल हो हल्ला। जिअत माछी कइसे घोंटाव। तब मन में आवे कि नारायनी ई सब काट लेती त सभे सबूर क लीत।

सन 2007 में नदी अपना भयंकर रूप में रहली। ओह साल खुब आम फरल रहे। नदी के कटानों तेज रहे। कहे ला लोग कि दू दिन से सिल्ली पड़ल रहे। नदी के धारा खुब गरजे। नदी के ओही प्रलयकारी रूप में ब्रह्म बाबा के पेड़ कट गइल। करीब पचास फूट ऊँचा ऊ ब्रह्म बाबा के पेड़ एक बेर गिरल त दोहरा के केहू देखिए ना पावल। उनकर चिन्हा नइखे, बाकीर मन में रहि–रहि के इयाद आवते रहेला।

* * *

हेलो भोजपुरी परिवार के तरफ से
अमरनाथ यात्रा के हार्दिक बधाई

निवेदक
राज कुमार अनुरागी
संपादक–हेलो भोजपुरी

''सदियों का आरक्षण शीघ्र खत्म हो''

प्रो0 शत्रुघ्न कुमार

आज यह सत्य जग जाहिर हो चुका है कि भारत की जति व्यवस्था ने सदियों से इस देश के बहुसंख्यक को पशु से भी बदतर जीवन जीने के लिए बाध्य कर दिया है। धर्म के मायाजाल की कपोल कल्पित कहानियों द्वारा धर्म के ठेकेदारों ने स्वंय के लिए ऐसी आरक्षण व्यवस्था लागू की जिसके उपर किसी का ध्यान ही न जाए। इसे हम 'सवर्ण आरक्षण' के नाम से जानते हैं। भारत में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, व्यावसायिक, तथा नौकरी आदि सभी जगह पर सदियों का सवर्ण आरक्षण लागू है। इसे समाप्त करने की आवश्यकता है। आज धर्म के आड़ में इसी संवर्ण आरक्षण का भाण्डा फोड हो रहा है। आशाराम बाबू के नाम से जिस संत के उपर भारत की भोली भाली जनता बेवकूफ बन कर अपना धन लुटा रही थी अब उसका पर्दाफार्श हो गया है। आशाराम के साम्राज्य को देख कर क्या यह साबित नहीं होता कि यह विशेश आरक्षण के तहत ही संभव हुआ। इस तरह के भ्रश्टाचार के उजागर से सबसे भयंकर तथ्य यह उभर कर हमारे सामने आया है कि धर्म–जाति के इसी शड़यंत्र के तहत इस देश में सदियों से ब्राहमणी आरक्षण लागू है जिससे इस देश की 90% जनता विपन्नता में जी रही है। आज इस देश के असंख्या मंदिरों में जमा संपत्ति को राष्ट्र की संपति घोषित करके देश का सर्वांगीन विकास किया जा सकता है लेकिन सदियों से चली आ रही इसी आरक्षण व्यवस्था के कारण देश बार–बार G.D.P के मामले में अपने को विपन्न साबित करता रहा है। कई वर्षों से बहुत तेजी से 'भ्रष्टाचार' की बात उठाई गई लेकिन इस भ्रष्टाचार की जड़ में कौन है उसकी तरफ लोगों का लेशमात्र ध्यान नहीं गया या यूँ कहें इस ओर जानबूझ कर ध्यान नहीं दिया गया। सदियों के दलित आंदोलन का परिणाम हमें आधुनिक युग में देखने को मिला जब कई महापुरूषों के प्रयास के बाद बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर ने संविधान के द्वारा इस देश के पद दलितों को अधिकार आरक्षणद्ध दिलाने में कामयाबी हासिल की। आज समाज का यह कमजोर तबका अपने अधिकार को लेकर समानता की राह में अग्रसर हो रहा है तब षडयंत्र द्वारा आरक्षण जिसे मैं अधिकार कहता हुॅ उसे खत्म करने के लिए खूनी आंदोलन भी किया जा रहा है। जनता को विशेष रूप से युवा वर्ग को तरह–तरह से भ्रम में डालकर इस अधिकार के विरोध में तैयार किया जाता रहा है। लेकिन जिन दलितों को पशुतुल्य बना कर उनके शारीरिक, मानसिक आर्थिक सब प्रकार से शोषण किया गया वह अब जाग चुका है। आज इस देश के वंचित दलित जन को फिर से दबाने के लिए कानूनद्ध न्याय पालिका का सहारा लिया जा रहा है। दलित जन को कानून में फंसा कर उनके विकास की गति को कुंद करने का षडयंत्र चल रहा है। लेकिन आज दलितों में बहुत सारे कानूनविद भी पैदा हो चुके हैं। वे इस षडयंत्र को भलिभॉति जान गए है। इसीलिए प्रमाण के साथ डाटा प्रस्तुत करके इस देश की संपूर्ण जनता के सामने यह तथ्य उजागर कर रहे हैं कि न्याय पालिका में किस प्रकार सदियों से ब्राह्मणी आरक्षण लागू है। इसीलिए हाईकोर्ट हो या सुप्रीम कोर्ट उसमें आरक्षण अधिकार–हिस्साद्ध की मांग शुरू हो चुकी है। आकड़े के साथ यह सब सामने आ रहा है कि कई दसक बीत जाने के बाद भी सुप्रीम कोर्ट में मात्र एक या दो दलितों को ही जज बनाया गया। आदिवासी बहुल क्षेत्रों को आधार बनाकर झारखण्ड और छत्तीसगढ़ जैसे राज्य बनाए गए जिससे वहॉ का सर्वांगीण विकास हो सके लेकिन तथ्य यह भी है कि यहॉ भी हाई कोर्ट के जज के रूप में किसी भी आदिवासी जज की नियुक्ति नहीं की गई। कई तथ्य यह भी सामने प्रस्तुत किए जा रहे है कि बड़े–बड़े दलित–पिछडे नेताओं को कानून के ऐसे दाव पेच में फंसा दिया जाता है जिससे वह समाज का कार्य न कर पाए और अपने ही उलझनों में उलझ कर रह जाए। भारत की सामाजिक समस्याओं को दूर करने के लिए किसी चिंतक या नेता के जीवन भर का प्रयास काफी नहीं। उस प्रयास को निरंतर जारी रखने की आवश्यकता है, लेकिन कानून आदि पचड़े में फंसा कर उनके कार्य में बाधा पैदा कर दी जाती है। सभी बाधाओं के बावजूद आज दलित चिंतक लेखक, शिक्षक वकील, नेता और विभिन्न कार्यकर्ता विशमतामूलक भारतीय जाति व्यवस्था के सामने बड़ी चुनौती खड़ा कर रहे है। देश से लेकर विदेश तक दलितों में आक्रोश भर गया है और वे अपने हक की लड़ाई को तेज कर रहे हैं। भारतीय चुनाव व्यवस्था की खामियों के कारण नेता पार्टियों के पिट्ठू बन कर रह जाते हैं ऐसे में जन आंदोलन द्वारा ही सदियों से चली आ रही ब्राह्मणी आरक्षण व्यवस्था को खत्म करके सबके लिए समान अधिकार को प्राप्त किया जा सकता है। ऐसे में भारत के सुविधाभोगी समाज को भी सच्चाई से ऑखे नहीं चुराना होगा उन्हें यह समझना ही होगा कि दलितों को जो संवैधानिक आरक्षण प्राप्त है वह कोई भीख नहीं न ही किसी का छीना हुआ हिस्सा है बल्कि यह दलितों का अधिकार है। सबसे दुःखद स्थिति यह भी है कि सरकार की ऐसी कई योजनाएँ बनती हैं जिसके द्वारा समान अवसर देकर बिना भेदभाव के हम सबको अधिकार दे सकते हैं, लेकिन जतिगत मानसिकता के कारण सारी योजनाएँ फेल हो जाती है। चिंता की बात यह भी है कि दक्षिणपंथी को तो छोड़ दे इस मामले में इस देश के प्रगतिशीलता का चांग पहने लोग भी इस ओर कम ध्यान देते है। एक उदाहरण से मैं इसे स्पष्ट करना चाहूँगा। इग्नू यानि

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना का मुख्य उद्देश्य था वंचितों के द्वार तक गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा पहुँचाना। इग्नू के लगभग सभी पाठ्यक्रम गुणवत्ता से युक्त हैं लेकिन उन्हें वंचितों यानि दलितों तक पहुँचाने के लिए जिन परामर्शदाताओं की नियुक्ति की गई उनमें सदियों से चले आ रहे ब्राह्मणी आरक्षण को लागू कर दिया गया। आज पूरे देश में एक लाख से अधिक परामर्शदाताओं की नियुक्ति हो चुकी है और हर दिन नियुक्ति की जा रही है इसमें दलितों/आदिवासियों एवे अल्पसंख्यकों की संख्या नगण्य के बराबर है। हमें इस मानसिकता को बदलना ही होगा। इसी समतामूलक विचारधारा को अपनाकर हम संपूर्ण राष्ट्र का विकास कर सकते हैं।

लेखक– भोजपुरी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति केन्द्र इग्नू के सूत्रधार एवं संयोजक हैं।

* * *

प्रथम उन्नति का आधार पहल

हेलो भोजपुरी। आधुनिक उपकरणों से लैस इस युग का आईना बनता अखिल भारतीय महिला जाग्रति संस्थान के प्रयासों से उजागर होता आधुनिक भारत का ढांचा जिसके प्रयासों से हजारों लाखों लोग लाभान्वित हो रहे हैं। अखिल भारतीय महिला जाग्रति संसथान द्वारा लगभग पिछले १४ वर्षों से देश भर के विभिन्न शहरों, गाओं व जिलों में हर वर्ग के लोगों को सरकारों द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की जानकारी जनहित कैम्पों के जरिये लोगों को जागरूक करने का काम कर रही है। संस्था द्वारा स्वस्थ्य, शिक्षा, कृषि व मानसिक विकास के कार्यों में लोगों का जोश व् समर्थन देखते हुए हर प्रकार से लोगों को जागरूक करने के लिए सरकारी वित्तीय सहायता द्वारा व् संस्था के कोष से समय समय पर हर क्षेत्र व् वर्ग के विशेषज्ञों द्वारा परिचर्या करके लोगों को लाभान्वित करते हैं। एक सवाल के जवाब में संस्था के सचिव मनोज कुमार सिंह ने बताया की आज हमारे समाज का ढांचा बुरी तरह से चरमरा गया है , हमारी पूरी कोशिश रहती है की किसी भी तरह से अगर व्यवस्था सही हो सके तो हम पूरी तरह से समाज को समर्पित हैं।

औरतें झूठ बोलती हैं

दरअसल हमारी पीढी की औरतें झूठ बोलती हैं
जब वे कहती हैं कि वे खुश हैं ,

छिपाना चाहती हैं वे
खुद के कमतर आंके जाने को
हर रोज आहत किये जाते मन को
अनायास ही भर आयी उन आँखों को
जिन्हें वे चुपके से नजर बचाकर पोछ लिया
करती हैं
किसी के देखने से पहले ,
बिना कहे ही समझ जाती हैं वे समाज की
कुत्सित रवायतों को
परिवार की चेष्टाओं में छिपे अनगिनत निषेधों को
,
औरतें क्यों झूठ बोलती हैं
पीड़ा सहती हैं
क्यों अपमान के बावजूद भी मुस्कुराती हैं
क्यों खुद को पुरुषों से हीन मानकर संतुष्ट रहती
हैं
जबकि पुरुषों के अस्तित्व का सच भी इनके
उन्ही अंगों से जन्मता है
जहां पुरुष सबसे ज्यादा प्रहार करता है !!

अर्चना राज

माई के मन

डॉ. आशारानी लाल

माई रे तू अईसन बात काहे कहले,,,

ना ए बचवा हम तऽ अईसे ना बोललीं हॅं।

तऽ का बाबू झूठ बोललस हऽ का।

जानतारे कि ना बाबू कबो झूठ ना बोल सके।

हम ना कहनी हॅं ए हमार बचवा।

हॅऽ तऽ हमार बेटा झूठ हऽ। उ झूठ बोलेला।

ना हो बचवा, हम झूठ बोलतानी। तोहार माई झूठ बोलतारी।

ना ई बात हम नईखीं कहत माई। हमसे घरे खेल के लवटत घरी बाबू ई बात हमसे अईसहीं बतावत रहे।

हॅं बेटा ! हम झूठी बानी। ठीक बा हम तोहार माई हंई , हम झूठ बोलतानी हम झूठ बोलतानी।

हम दोशी बानी बचवा। हम तोहार माई नईखीं, कहते–कहते झट से हत उहां से उठ पड़लीं। ना बूझ पवलीं कि झूठ का टोला का सांच का बा।

एही गोदी के लाल के पावे खातिर हम दर–दर के ठोकर खात घुमत रहत रहीं। इया दनइखे परत कि केतना देबी–देवता,साधु–महात्मा, बाबा आ फकीर लोगिन के गोड़े पर हम आपन मूड़ी पटकले रहीं। रात–दिन न कुछनीक लागे न चैन भेंटाय। इगारह बरीस ले रात–रात भ्र तपस्या कइलीं कबो भ्र नीन सुतलीं ना। जे जहां कहल, न घाम देखलीं न बरखा धउरल चलल जात रहीं खाली अपना एही पोता के पावे के चाह में। सबका सोझा आपन ॲंचरा फइलावल करत रहीं। भिखारिन त बनिए गइल रहीं अपना एह बाबू के पावे खातिर आ ओही बाबू के आज हम अइसन बात बोलले बानी कि हमरा पर हमरे बचवा विश्वास नइखन कर पावत कि ई बात हम ना कहलीं हं।

ळम पापी बानी। पापीए ना महापापी बानी,तबे त हमरा बचवो के विश्वास भ गइल ह कि उपकर माई ई बात जरूर बोलले होई। बाबू कबो झूठ ना बोली।

बत सही बा। बच्चा त भगवान के रूप होला, उ अपना दादी खातिर कबो झूठ बोलिए ना सके। एही से त हम कहतानी कि हमहीं झूठी बानी आ झूठियावत बानी। हम जरूर ठ बात असहीं कहले होइब। बाकी ए हमार बचवा हमार कहल एक बात सुनलऽ कि जब हम अइसन बात कहलीं तब उहां के–के रहे। घर आ दिवार के छोड़के ओह जगहा पर तोहार बाबू – बबुनी आ उनकरा लोगिन के साथे एगो बूढ़ी बइठल रही तब

अब हम एह बात के सफाई केकरा से दीं चाहे बताईं आ के–के आपन हिरदया चीर के हनुमानजी निया देखा दीं कि हम अइसन बात ना कहले रहीं।

ए बचवा तोहरा एही बाबू के पावे खातिर हम कंहवां–कंहवां ना गइनी। जंगल–बन, खेत–खरिहान, नदी–पहाड़ सगरो दउड़लीं आ सबसे एक्के बतिया कहलीं कि हमरा दुलहिन के गोदिया भर जाव इहे अशीसिया देईं ए देवता बाबा आ देनी भवानी लोग।

केहू कहल कि वैश्णों माई सबकर गोदी भरेली, केहू के खाली हाथ लवटावेली ना। तब ओह पहाड़ पर चढ़के उहों हम पहॅुचलीं। एहीतरे विन्ध्याचली माई, मइहर देबी, पाटन देबी, चामुन्डा माई, ज्वाला भवानी नैना देबी, चिन्तपूर्णी माई, बुढ़िया माई , कत्यायनी देबी आ अवरियो बहुते माई लोग हमके हमरा तड़प के बैचनी देख के बोलावल करत रही लोग, आ हम सबका सोझा जाके अपना दुलहिन खातिर आपन ॲंचरा पसारत रहीं। देवतो बाबा लोगिन लगे जाके इहे काम कइलीं। विश्वनाथ बाबा , बरम्ह बाबा, ड़ीह बाबा, साईं बाबा , कुरहॅस के बाबा, पंजाबी बाबा कबसे भीख मॉंगे गइलीं।

केहू–केहू इहो बतावल कि हमके पूजा–पाठ करावे के चाहीं तब रावन संहिता वाला बाबा से पूजा करावे के बारे में जाके पूछलीं आ लिखवा के ले अइलीं, पूजो करवलीं मतलब सप्रशती के सव पाठ। असहीं सोखा बाबा, फगड़ बाबा , जंगली बाबा, गुरू बाबा केकरा–केकरा लगे दउड़–धूप के हम ना गइनी। सभे कहल कि घबड़ो मत होई। हम दिन–रात राह तकित रहीं आ सोचत रहीं कि कवनो बहुते बड़ पाप काहे जमाना में कइले बानी , तबे एतना तड़प रहल बानी। हमार बचवा केतना देखी होइहन। हम उनकर मलीन मुॅह कइसे एतना दिन से देख

रहल बानी। उनके ढ़ाढ़स हम कइसे बंधाई आ विश्वास दिलाईं कि तोहरा लाल जरूर होइहन। हम सोचीं कि हमार माई बनल बेकार बा जब कि अपना बचवा के मनसा हम नइखीं पूरन कर पावत। हम कइसन माई बानी। हमार जिनगी अकारथ बा। इहे सोच हमके दिन–रात हिलावत रहत रहे।

एही बिचे एक दिन पंड़िजी बतवलन कि तोरा से तोर पित्तर लोग नाराज बा, तब उनकरो बतावल उपाय करे चल दिहलीं, गयाजी पिन्ड पारे। गयाजी में पिन्पार के फेरू राह ताके लगलीं। हम अपना सब पुर्वज लोगिन से कहलीं कि अब रएवे लोग आपन वंश बढ़ाई। हमरा से जवन गलती भइल होखे,ओके छमा करीं लोग बाकी उहो लोग बुझाइल कि हमके अनसुना क दिहल। हम तकते रह गइलीं।

थ्दन–रात त एही चिन्ता में डूबल रहत रहीं आ योचत रहीं कि एह दुनिया में रटेवाला लोग हमार मनसा जान जाता, बाकी ई देबी–देवता लोग हमरा हिरिदिया के बात काहे नइखे बुझात, कि एही बीचे बदरी–विशाल लगे जाए के मोका भेंटा गइल। उहों पहुँचली तऽ पुजारी महाराज से आपन सब दुखड़ा जल्दी–जल्दी बतवलीं, बाकी उहां के जवाब रहे कि हमरा घबड़ाए के ना चॉहीं, काहे कि बिन मॉगे मोती मिले, मॉगे मिले न भीख। का सुदामाजी भगवान से कुछु मंगले रहन। अब हमरा बुझाइल कि हमहुँ भगवान लगे पहुँचल बानी, त अब हमरो मोती मिली। उहे भईल काहे कि जब हम बदरी–विशाल भगवान के घर से लवटलीं तबे दुसरा दिने अपना बचवा आ दुलहिन साथे पजाबी बाबा लगे गइलीं जेके सब लोग एगो पहुँचल संत बतवले रहे। हमरा जाते आ गोड़ छुअते उ कहलन मांग जो मांगना चाहती है।

श्रम आपन ऑचरा पसरलीं आ कहलीं कि ए बाबा हमरा दुलहिन के गोदी भर जाव, अवरी हमरा कुछु ना चाहीं। पंजाबी बाबा आपन मुँह फेर लेलन आ कहलन कि अपना खातिर मॉगऽ न।

मुक्ति मांग–मोक्ष मांग। अब बताईं– आपन हाथ बटोर लेलीं, काहे कि मोक्ष आ मुक्ति पवला के बाद हम अपना बचवा के, लाल के, कइसे देखतीं। हमार हियरा कइसे जुड़ाइत। हम ई लइखीं कहल चाहत कि खाली हमरे कइला से हमरा बचवा के काम पूरन होईत एही से हम बेचैन रहीं। ना ई बात ना रहे। हमार बचवा आ दुलहिन त दुनू जना नोकरी में रहे लोग। ओहू लोग के जब मोका भेंटात होई तब अपना दवा–दारू आ डाक्टर–वैद्य घरे लोग जाते होई, बाकी हम माई रहीं,तऽ इहे सोचीं कि दवाई–डाक्टर तऽ ओह लोग लगे बड़ले बा बॉचल बा तऽ खाली दुआ। एही दुआ के बटोरे खातिर हमस ब देबी–देवता आ महात्मा के दुआरी–दुआरी भटकत रहत रहीं। कहेला लोग कि दवा आ दुआ दुनू जब एक साथे रहेला तबे कारज पूरन होला। इहे बात हमरा मन के हरदम सालत रहत रहे। एही के चलते हर पूरनमासी के अपना घर में पंड़ित बोलाके सत्नारायन भगवान के कथो बंचवावत रहीं। कबो–कबो इहो सोचत रहीं कि हमरा मुक्ति आ मोक्ष ना चाहीं काहे पंजाबी बाबा अइसन कहलन हॅ।हम त जबले अपना बचवा के लाल ना देखब तबले एह देवता लोगिन के पीछा छोड़बे ना करब। उ बाबा हमके का मुक्ति दीहन, मुक्ति त हमार पोता न हमके दीहन जे हमरा के अपना कान्हा पर उठाके ले जइहन। इहे कुल सोचत रहीं कि एगो हमरा के जानेचाली दोस्ते बतवली कि बाम्बे में सिद्धिविनायक भगवान के घरे जाके उनकरा वाहन चूहा के कान में तू आपन सब मन के लालसा बता द उ जरूर पूरन करिहन। अभि ई बात होते रहे कि सुने में आ गइल कि हमार बाबु अ दुलहिन लोग बाम्बे जा रहल बा।

कहबे त कइलीं कि बचवा हो सिद्धिविनायक भगवान के घरे तू मोका निकाल के जरूर जइहऽ आ मूसक जी के कान में आपन लालसा बता दीहऽ।

बचवा हमार बात मान लिहलन। मूसक जी सहाय भइलन आ हमरा करेजा के टुकड़ा चाहे हमरा ऑखी के तारा हमार लाल आ गइलन। दुलहिन के गोदी भरल। दुलहिन बेटा–बेटी दुनू पा गइली।

अब अपना ओही लाल के हम अइसन बात कइसे कहब ए हमार बचवा जेके सुनहु में हमके पाप पड़ी। तबो त कहलह कि तोहार बाबू झूठ ना बोली तब झूठ तऽ हमहीं न बोलतानी। हम पापे न कइले रहीं कि बारह बरीस ले एह बाबू के देखे खातिर तरसत रहीं। लागऽता कि अब्बो उ पापवा हमार पीछा नइखे छोड़ले, तबे न एह बीचे पड़के हमके तबाह सर रहल बा।

हे इश्वर रउवा हमके घनघोर कश्ट के सजा दीं, जेसे हमार पाप जल्दी कर जाव। अब हमार अइसन दिन लवटो कि हमार बचवा आ उनकर बाबू जे हमार लाल बान आके हमरा गोदी से सट जाव लोग।

कइसे कहीं ए बचवा कि उ सब बात झूठ बा जेके हम न अन्हें में कह पावऽ तानी। तब अब बताइ कि ओह दिने का भइल रहे। ई जरूर कवनो हमरा पिछला जनम के पाप बा जवन एगो घुमावदार पेंच अब हमके अपना बचवा के सोझा मुँहो देखावे लायक नइखे छोड़ले।

अच्छा एतनो भइला गइला पर इहे कहब कि तू लोग जुग–जुग फुलत–फरत आ सुख से लहलहात रहऽ।

* * *

किनारा

लहर हूँ मैं, वो किनारा है,
पास हो कर भी, उसे दूर से निहारा है,

मिले ही थे हम बिछड़ने के लिए...
और किस्मत ने भी हमें, ठोकरों से मारा है।

चाहत होती है उसे एक नजर देखने की...
पर शायद, मेरी किस्मत में वो पल ही गवारा न था।

मॉगा था साथ उसका हमेशा के लिए,
पर, कुछ पल का साथ ही उसे गवारा न था।

दोस्त थी मैं कभी उसकी,
पर दुश्मनों में शामिल नाम अब हमारा था,
क्या कहूँ ए दोस्त...
लहर थी मैं, वो एक किनारा था।

प्रीति सिंह,
(नवोदित रचनाकार दिल्ली विश्वविद्यालय)

शब्द
सर्वब्यापकता और महत्व

श्रीमती सुमित्रा गुप्ता

शब्दों की सर्वव्यापकता क्या है ? यह बताने आई हूँ। शब्दों का होता प्रभाव क्या ? यह बताने आई हूँ। शब्द ब्रह्म है, शब्द स्पर्श है, शब्द रूप,रस माधुर्य,है। शब्द में ही है समाया, विश्व का आकार है। शब्द ज्ञान विज्ञान,गुण दोष,शब्द से ही जगत विस्तार है। सुन्दर चयन शब्दों का हो तो ,होता तब कल्याण है। अपशब्दों का चयन करें तो ,हो जाता अकल्याण है। अक्षरशः सत्य है,शब्द की सर्वव्यापकता,सार्वभौमिकता, समाहितता, विद्यमानता–नेति–नेति।

हर वस्तु का बोध शब्द के ही माध्यम से होता है। हर एक की सत्ता 'शब्द' से ही परिभाषित होती है। रूप, आकार–प्रकार,गुणा–दोष,हानि–लाभ,जीवन–मरण,विचित्रता,गोपनीयता,वैशिष्ठयता आदि–आदि। यहाँ तक की पूरे ब्रह्मांड की सत्ता 'शब्द' से ही परिभाषित होती है।

प्रभु की अद्भुत जड़–चेतन सृष्टि में सिर्फ मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जो शब्दों की अभिव्यक्ति मुख से बोलकर, वाणी से बोलकर कर सकता है। हांलाकि अन्य प्रकृति भी बोलती है,अपनी अभिव्यक्ति करती है,पर मनुष्य द्वारा ही उन सभी को शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है। पंच महाभूतों से निर्मित जो यह मानव तन कहा जाता है–क्षिति जल पावक गगन समीरा,पंचत्व यह अधम शरीरा। और भी– गगन,समीर,अगन,जल, धरनी,इन्ह कहिं नाथ सहज जड़ करनी(रामायण,सु.कांड)

इसमें गगन यानि SPACE से 'शब्द' की उत्पत्ति मानी जाती है। और फिर क्रमशः स्पर्श,रूप,रस और गन्ध। आकाश में 'शब्द' ही तो सर्वत्र व्याप्त है। यह कहना अतिश्योक्ति ना होगी कि 'शब्द' नहीं तो कुछ भी जानकारी नहीं। उसी 'शब्द' की अभिव्यक्ति आपके समक्ष करने का मेरा एक छोटा सा प्रयास है।'शब्द' की विराटता को अपनी तूलिका में समेटना चाह रहीं हूँ।

सृष्टि का प्रारम्भ जब हुआ,तब सबसे पहला जो शब्द निकला,वह था 'शब्द' । इस सम्बन्ध में आपको एक कथा सुनाती हूँ । प्रारम्भ में सर्वत्र पानी ही पानी था। क्षीर–सागर में परमतत्व के रूप में परमेश्वर विष्णुरूप की नाभि से उर्द्धवगामी होता हुआ एक कमलपुष्प प्रगट होता है और जब उसकी पंखुड़ियां खुलती हैं तो ब्रह्मारूप प्रगट होता। उस रूप ने जब चारों तरफ अपना मुख घुमाया तो उनके चार मुख हो गये जिससे वे श्चतुर्मुखी ब्रह्माश के नाम से पहचाने जाने लगे। मैं कौन हूँ? कहाँ से आया हूँ? यह जानने के लिये वे कमलनाल से होते हुये नीचे–नीचे जहाँ जल ही जल था वहाँ गये लेकिन कमल नाल का जब अन्त ना पाया तो वे पुनः ऊपर आ गये। पानी से टप–टप हो रही थी और आकाशवाणी के रूप में उन्हें एक शब्द सुनायी पड़ा कि वत्स तप करो। हजारों वर्षों तप करने के बाद शेषशायी श्री परमेश्वर का दर्शन हुआ और उनकी प्रेरणा से विभिन्न प्रकार की सृष्टि का निर्माण ब्रह्माजी द्वारा किया गया। जैसे–ऋषि,देव, दैत्य, यक्ष, गन्धर्व,किन्नर,मानव,पशु–पक्षी,कीट–पतंग,वृक्ष,पर्वत, नदियाँ आदि–आदि अनन्त सृष्टि।

वर्णमाला के अ से लेकर ज्ञ पर्यन्त शब्दों का जब सुन्दर ढंग से समायोजन किया जाता है,तब अर्थपूर्ण और सुन्दर–सुन्दर शब्दों का निर्माण होता है। अ कार,उ कार और म कार का सुन्दर समायोजन ॐ (ओम) शब्द के रूप में अपने आप में सम्पूर्ण ब्रह्मांड को ही समेटे हुये है। 'ओम' शब्द, ब्रह्मा, विष्णु और महेश के रूप में,निर्माण,पालन और संहार को प्रतिपादित करता है। इसी तरह विश्व की सभी भाषा शब्दों से ही जानी पहचानी जाती हैं। **ENGLISH** में **GOD** शब्द का मतलब तो देखिये **GENERATOR, OPERATOR &DESTROYER**, यानि सृष्टिकर्ता,पालन–कर्ता और संहारकर्ता।

अब आप समझ ही चुके होगें कि शब्द ही ब्रह्म,शब्द ही,ग्रन्थ,शब्द ही ऋचायें,शब्द ही वेद–पुराण,शब्द ही मंत्र,शब्द ही शक्ति,शब्द ही प्रेरणा,शब्द ही ज्ञान–विज्ञान शब्द ही भावना,शब्द ही कल्पना,शब्द ही मूर्त–अमूर्त रूप,शब्द ही अभिव्यक्ति का माध्यम है। क्या नहीं है जो शब्द में ना समाया हो,क्या है जो शब्द से परे है यानि सभी कुछ शब्द मात्र ही तो है।

ईश्वर,परमेश्वर,जगतपिता,परमशक्ति,परम ज्योति आदि–आदि शब्द कह देने मात्र से ही सुन्दर छवि,सुन्दर भाव,भक्ति,श्रद्धा और ऊर्जा का संचार होने लगता है, वहीं राक्षस, दुष्ट व्यक्ति,दैत्य शब्द कह देने से बुरी छवि,क्रोध,भय मिश्रित भाव और ऊर्जा का ह्रास होने लगता है । देखा आपने शब्द का प्रभाव––

अन्त में,मैं इतना ही कहूँगी कि हमें शब्दों का चयन सुन्दर,सटीक और अर्थपूर्ण करना चाहिये। अपशब्दों के प्रयोग से बचना चाहिये। मन में भाव आ रहा है कि––

हृदय पर अमिट छाप छोड़ जातें हैं ये शब्द। जीवन को सुन्दर और कुरूप बना सकते हैं ये शब्द।

शीतलता और माधुर्य भर सकते हैं ये शब्द। ओजता और प्रखरता भी दे सकते हैं ये शब्द।।

यहाँ तक की प्रेमपूर्ण पुकाररूपी शब्द करुणानिधान,कृपानिधान परमात्मा से भी मिलान करा सकते हैं, उन्हीं में तदाकार करा सकते हैं, उन्हीं में समाहित करा सकते हैं। एक दोहा थोड़ा बदलकर कहना चाहुँगीं।

ऐसे शब्द बोलिये मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे आपहुँ शीतल होय।।

* * *

पंण्डिताई

गरमी के दिन रहे, कभी पुरुआ तऽ कभी पछुआ हावा आपन–आपन जोर आजमावत रहे, जावान आ बूढ़ लोग के गरमी खूबे उबियावत रहे बाकिर एकर असर छोट–छोट लईकन पर तनिको ना लउकत रहे....

शिवचरन के बड़की लईकी के बियाह के दिन रहे, दुआर पर लईका खुब हाल्ला हुड़दंग मचवले रहलसं, टोला–मोहाला के मानल जानल लावा बाबा आपन जावानी के एक से एक काहानी आ करतब सुना के खूब बाह बाही लूटत रहलन। रिश्ता में नाती, भतिजा लागेवाला लावा बाबा के खोदिया–खोदिया के खिसियवा देत रहे लोग। लावा बाबा रिश्ता के धेयान में रखी के आजी, नानी के लागा के मजकिहा गारी से गरिया देत रहले, लावा बाबा जस गारी देसू तस आसपास के लोग ठाहाका मारी–मारी के हंसो, बगले में हलुआई बुनिया बानावे खातिर बुन्दी झारत रहे, चार पांचगो लोग मिलके उसीनाईल आलू छिलत रहे, केहू परोरा काटे में लागल रहे, केहू लउकी छिले में लागल रहे तऽ केहू लहसून पियाज काटी के लोर बाहावत रहे, बहत लोर देखी के लावा बाबा माजा लेबे में तनिको पिछे ना रहस "कांहे रोअतारऽ ए बबुआ तोहार बियाह जल्दीये कारवा दिहल जाई" ऐही हंसी माजाक के संगे सभे आपन आपन काम में लागल रहे, टोला–मोहाला के लईकी मेहरारु नाया–नाया कापाड़ा पहीन के जूटऽतारीलो...। हाजामिन घर के मेहरारुअन के बोला–बोला के गोड़ रंगे के काम में लागल बाड़ी, पंण्डिजी के साईत के हिसाब से माटी कोड़े के समे हो गईल रहल, थोरकीये देर में मेहरारूअन के झूंड़ी गावत बाजावत माटी कोड़े खातीर बहरीयाए लागल:

कावना बने रहलू हो कोईलर
कवना बने जास ?
केकारा दुआरवा हो कोईलर
उछऽहली जासू

ऐही गीत के लय में लय मिलावत मेहरारूअन के झूंड़ आगे चलल जात रहे डाफारा लेले एगो मेहरारू एके लय में बाजावत रहे:

डम... डमा, डम.. डमा,
डम... डमा, डम... डमा......

शिवचरन के घर से तनकीये दुरी पर सारकारी स्कुल बा ओहीजा शिवचरन के घरे आवेवाली बारात के टिकावे खातिर तमू तानाईल बा अउर ओकरे बगल में गांव के पारधान जी के घरे आवेवाली बारात के बड़का रावटी लागल बा, स्कुल के आगवारी से दर्जन भर गांव के शहर से जोड़े वाला चाकर खड़ईजा के राहता बा ओह राहता से गुजरेवाला दर्जनो गांव के लोग बड़की रावटी देखी के आपन साईकिल के ब्रेक लागा कुछदेर तक ठाड़ होके देखतालो, बगले में रुदल के पान के दोकान बा उनका से पुछी देत बा लोग कि "केकर बाराती आवतीया ? कवन नाच आवता ? रुदल पनवाड़ी आवत जात लोगन के ई बातावत–बातावत थाकी जात बाड़न की "फालाना परधान के लईकी के बारात आवतीया, हांथी घोड़ा के घोरदवलो होई, खूब भारी बड़की नाच आवतीया जावना में सातगो लेडिस बाड़ीसं... रुदल के बाती सुनी के सुनेवाला के मन गदगद हो जात बा....।

शिवचरन आपन पहिलकी लईकी के बियाह करतारे ऐसे खईला पियला से लेके सेवासत्कार के ईतिजाम में कवनो कमी नईखन कईल चाहत, शिवचरन के घर के बगले में एगो दुताला माकान बिया, जवना के बड़का घर कहल जाला ओही बड़का घर में निस्वार्थ भाव से गांव सामाज के सेवा करेवाली बड़की पतोही बाड़ी जिनकर नाम बा सुरसती, इनका से बिना राय लेले लोगन के काम अधुरा लागेला, शिवचरन बाड़का घर के पतोही के बोला के सगरी बेवास्था से अवगत कारा दिहलन बड़की पतोह शिवचरन के बेवास्था देखी बहुत खुश भईली, शिवचरन के मन गदगद हो गईल बाकी शिवचरन के मन में धुकधुकी बनल रहे की जबले बेटी के बियाह ना हो जाई तबतकले मन के शान्ती ना मिली ई बात के कई लोगन से कही चुकल रहलन, बड़की पतोही उनका के धीरज बन्हवली कि "जईसे सभकर जगी पार लागेला वैसे राउरो जगी पार लागी जाई, काठरा–बर्तन के जरुरत होखे तऽ हामरा घर से मांगवालेम"

संजय ऋतुराज
(लेखक व फिल्मकार)

सांझी के बेरा रहे शिवचरन के घर के आंगना में से संख आ सतनारायन भगवान के जयकारा के आवाज चारो ओर सुनाई दिहलस, जे जांहा रहे ओहीजा दुनो हांथ जोड़ी के मुड़ी नावा लिहलस, सतनारायन भागवान काथा के अभी एकहू पाना खतम ना भईल रहे कि पारधान जी के घर से पंण्डि जी के बोलावा आ गईल, पंण्डिजी काथा के दु–दु पाना के पलऽटी–पलऽटी के बांचे लगले, जवना काथा में घंटो लागित उ बीसे–पचिस मिनट मे निपटा के सामाप्ती के संख बाजा दिहलन ओकरा बाद जवन समय लागल उ दान–दक्षिना बटोरे मे लागल, कई लोग लाईन लागा के दस, बीस, पाचास, सई से पंण्डिजी के गोड़ लागत रहे तबतक आरती के पईसा भी बटोरा गईल, पंण्डिजी पारधान जी किहें चल दिहलन... जाते–जाते शिवचरन के बोली गईलन कि आठ बजे ले दुअरपूजा करवा लिहऽ कांहे कि पारधानो जी किंहे साम्हारे के बा। शिवचरन पंण्डिजी के हं में हं मिला के गोड़ लागी बिदा कईलन।

पंण्डिजी के जजमनिका में पाचास गो से साठी गो घर पुश्तैनी मिलल बा जावना में मुअला आ जनमला के बाद इनका पातरा के बीना गाड़ी आगे ना बड़्हे, कबो–कबो लईका आ लईकी के बियाह ऐके संगे परीजाला पंण्डिजी बरियार आ कमजोर जजमान में

से कमजोरका किहें आपन चेला चापाटी के पेठा देलन आ बरियारका के अपनहीं साम्हारे के काम करेलन, बाकी आपन गांव में लईकी के बारात आवेवाला होखे तऽ एके संगे दूगो तीनगो घर आराम से साम्हारी देलन।

शिवचरन हितई–नतई से आईल नेवतरही के सेवा सत्कार में लागल रहलन तबले हाल्ला भईल की छठी माई के पोखारा पर हांथी, गोड़ा आ ऊंट के घोरदवल होखे जा रहल बा, घोरदवल देखे खातिर गांव के कोना–कोना से लोग छवरी आ खेतवानी के राहता छठी माई के पोखारा की ओर जाए लागल। शिवचरन के घर देखी के कुछ देरी खातीर लागल कि बेटी के बियाह बित गईल बा बाकिर सुरज डुबते फेरु उहे चहल–पहल शुरु हो गईल।

शिवचरन कुछ लोगन के स्कुल पर बाराती के इंतिजाम में भेजी दिहलन अउर सभे बारात के इंतजार में लागी गईल, आन्हार होखे से पहिले बारात समय पर पंहुची गईल। शिवचरन दुअरपूजा करावे के तैयारी में जुटी गईलन, बारात दुआर पर आवे में देरी देख पंण्डिजी घाबाड़ाये लगलन, जेतना शिवचरन परेशान ना होत रहलन ओ से ज्यादे पंण्डिजी परेशान होत रहलन कांहे की पारधानो जी किहें साम्हारे के रहल। बारात में से खबर आईल कि नाचवाला अभी नईखस आईल ऐही से देरी होता। थोरका देरी बाद नाचो वाला आ गईलस टेकटर से उतरतहीं पाखांवज के ताल गरजे लागल पातर–पातर दतुअन के छारका अईसन तीन गो लौंडा जोकर तिरलोकी संईया संगे स्पिरिंग के जईसे कमर के लापकावे लगलनस खिसियाईल लोगन के चेहारा पर चवनीया मुस्कान लउके लागल, लोगन के भिंड़ ऐकाठा हो गईल सभे गोलाई पारी के देखे लागल, दुलहा के गाड़ी दुअरपूजा खातिर जाये लागल ओकरा पिछे नाचवाला और बरतिहा जाये लागल, दुआरे पहूंचतहीं पंण्डिजी देरी के खीस दुअरपूजा बिधि में निकाले के चांहत रहलें बाकी लड़िका पक्ष से आईल पंण्डित पंण्डिजी के मंतर में छालांग ना लागावे दिहलस, जबले दुअरपूजा के मंतर आ बिधि खतम ना भईल तबले पंण्डिजी के नकेल कसले रही गईल।

पारधान जी किहें से आईल आदमी पंण्डिजी के लिया जाये खातिर तेजिया गईल शिवचनर पंण्डिजी के भोग लागावे के कहलन बाकी पंण्डिजी देरी के चलते पिनपिना के भागे लगलन ई कहत कि ''तोहार होगईल तऽ पूरा दुनिया के होगईल का? जातानी पारधान जी किहें आईम तऽ भोग लागा देम।'' शिवचरन के दुआर पर पाखांवज के नाच खुब जमकल रहे, पालानी वाली मेहरारु टाटी फारी के देखतारीस तऽ छतवाला छते के उपर से देखता, बाराती में आईल नचदेखेवा पार्टी नाच के आगा से हटे के नामे नईखन लेत, बरतिहा पानी पीयाला के बाद आपन टिकान पर पहुंची गईलन। बगले में आईल बड़की नाच शिवचरन के बरतिहन के बीच चार्चा के बिसे बनी गईल रहल बड़की नाच के आगे पाखांवज उरठ लागे लागल, नचदेखावा लोग जल्दी से खा पी के बड़की नाच देखे के मन बानावे लागल, पाखांवज के नाच समियाना में फिर एकबार सामा बन्हलस तबतक बड़की नाच के भोंपा पाखांवज नाच के दिगदिगावे लागल....

राती के दस बजी गईल रहे विदेसीया नाच ताल पर ताल ठोक मरले रहे, सुन्दर–सुन्दर, गोर–गोर नाचेवाली लईकी के ठुमका शिवचरन के बरतीहन पर भारी पड़े लागल खास–खास लोगन के छोड़ी के सभे बड़की नाच देखे खातिर चली गईल उहो बिना खईले,

शिवचरन के बरतिहा और हितनात खईला बिना छाट–पाटात रहे, अगुआ भी समय पर खाना ना खियावला के चलते शिवचरन पर खिसिया गईलन, शिवचरन पंण्डिजी के पंडिताई में अझुरा के निमन बाउर के भेद... भूला गईलन, पंण्डिजी के बोलावे खतिर पारधान जी किहें शिवचरन आपन आदमी भेजलन बाकी पंण्डिजी संदेश भेजलन कि अउरियों पंण्डिजी बा लोग उलोग से भोग लागवा लिंहे शिवचरन जल्दी–जल्दी में दू आदमी के अउरीयो कवनो पंण्डिजी के बोलावे खातिर गांव में भेजलन बाकी कवनो पंण्डिजी घरे ना मिलऽल लोग कुल्ही जाना पारधान जी किहें जमल रहे लो....

शिवचरन के डर सातावे लागल की पंण्डिजी ना खईहें तऽ सब अशुभ–अशुभ होखे लागी शिवचरन पहिला बार गुरुमुख भईल रहलन ऐसे गुरु जी के बिना एक कदम आगे ना बढ़ल चाहत रहलन।

ओने पारधान जी किहें पंण्डिजी लोग बंगाली मिठाई, बिदेशी खाना, ठंडा गरम खा–पी के डाकार मारतालो, कुछ लोग पंण्डिताई के ताखा पर रखी के मुरगा, मछरी आ मांसो के भोग लागा के आपन नाया आवतार देखवत बालो बाकी तबो पंण्डिताई पर आंची नईखे आवत कांहे की ई नावका जामाना के पंण्डिजी काहात बा लो।

शिवचरन गुरुभक्ति के जाली में फसले रहलन की बाराती की ओर से एक आदमी आके शिवचरन के गरियावे लागल, शिवचरन के दुश्मन पटिदार ओह आदमी के लठवस देहलस ई बाती आगी के जईसन बाराती में फईल गईल दुनो ओर से झागड़ा होखे लागल शिवचरन बरतीहा के गोड़ पर गीर के माफी मांगस बाकी बरतिहा माने पर तैयार ना रहलन बहुत समझावला बुझावला के बाद बरतीहा समियाना में गईलन तबतक ले पंण्डिजी के आगमन भईल पंण्डिजी बाती के जायजा लेबे लगलन ओने पंण्डिजी के भोग लागावे के तैयारी भईल शिवचरन पंण्डिजी के आदर के साथ भोग लागावे के कहलन ''चली ठाकुर जी के भोग लागा दिहीं'' पंण्डिजी फारमान जारी कईलन कि ''जजमान भोजन तऽ भर पेट हो गईलबा.. अईसन कर छाना बान्ही दऽ'' शिवचनर के कुछ समझे में ना आईल सब कुछ छोड़ी–छाड़ी के स्कुली पर धउरल गईलन, बगल में बड़की नाच जमल रहे: 'गाना के बोल रहे चोली के भीतर क्या है चुनरी के भीतर....' एह गाना पर पारधान जी के बाराती में नोट के गडी लूटावल जात रहे, मन मोहनी ठुमका के ताल पर दुनलिया बन्दुखी धांय–धांय छुटत रहे, ओहीजा बगले में शिवचरन के शरीर में खुन पानी बनल जात रहे..... कांहे कि समियाना में शिवचरन के छोड़ी के..... केहू ना रहे......

धतुर मलत ए अमा जियरा अकुसइलें।
भाई–बहिन के रिश्ता :– भाई

* * *

आम के आंचार

अंजु सिंह

आम सभ फल के राजा होला। आजकल आम के मौसम भी बा। पाकल आम जतना स्वादिष्ट लागेला ओतना ही स्वादिष्ट लागेला काच आम के अचार। दाल-भात-तरकारी आ चाहे रोटी-तरकारी पर तनी सा आम के अचार धा दिआओ त खनिहार चटकार से दु कवर बेसिए खा लीही। आम के अचार त पूरे देश में बनेला बाकि यूपी,बिहार,झारखण्ड के अंचार के सवाद सबले बन्हिया होला।

आई जानल जाव आम के अंचार बनावे के तरीका-

सामग्री :-

कांच आम – एक किलो
राई – 150 ग्राम
जवाइन, मंगरइल – 50 ग्राम
सौंफ – 4 चम्मच
जीरा,मरीच – 20 से 30 ग्राम
लाल मिर्चाई–सवाद के हिसाब से
हरदी – 4 चम्मच
सरसों तेल – 250 ग्राम
निमक – सवाद के हिसाब से

विधि :-

आम के खुब बन्हिया से धो लीं आ पानी सुखा लीं। ओकरा बाद आम के चार फारा फार लीं,आमे निकले वाला बिया निकाल दीं। अब हरदी आ निमक बन्हिया से मिला के घामा में रख दीं।

जब आम निमन से सुख जाए तब ओमे सारा मसाला के पीस के मिला दीं। ओकरा बाद ओमे तनी सा सरसो तेल डाल के मसाला के लटपटवा बना लीं आ 2–3 दिन तक घामा में सुखे दीं।

जब काटल आम में हल्का भूरापन रंग आवे लागे तब ओमे सरसो तेल डाल के सारा अंचार के कौनो शीशा के बोईयाममें रख दीं।

ऐही तरह से बोईयाम सहिते ओकरा के 4–5 दिन तक रोज घामा में रख के अंचार के पकाईं। ओकरा बाद अंचार तईयार बाकि 1 महीना बाद से ही ऐकर सवाद निमन लागी। खाली

इहे ध्यान देवे के होई की अंचार में पानी के लाग मत होए।

* * *

छत से गिरके पिलर पर अटकल, आर पार हो गईल तीनगो सरिया

हेलो भोजपुरी –पटना के रुबन मेमोरियल हॉस्पिटल में एगो अईसन लईकी के ईलाज कईल गईल जवना के शरीर में तिनगो लोहा के छड़ आर–पार कर गईल रह। छपरा के बसंतपुर के रहेवाली एह लईकी के नाम लवली बा। लवली एगो निर्माणाधीन मकान के छत से निचे गिर गईली , बात तब आउर खराब हो गईल जब उ छत से गिर के एगो पिलर के निकलल तिनगो सरिया पर गिरली जवना के चलते तीनो सरिया (छड़) उनका शरीर में तिन जगहा से आर–पार निकल गईल। लोहा के सरिया काट के उनका के खम्भा से निचे उतारल गईल जवना के बाद उनकर परिजन उनका के लेके छपरा आ पटना के कईगो हॉस्पिटल में चक्कर कटलें। अंत में पटना के रुबन मेमोरियल हॉस्पिटल में पहुंचला के बाद उनकर ऑपरेशन कईगो अनुभवी दोक्तरण के टीम मिलके लगभग पांच घंटा में उनकर सफल ओपरेशन कईलस। दू दिन के बाद लवली पूरा होश में अईली आ अपना परिजन से बात कर पईली ।अईसन ऑपरेशन के बाद इ कहल जा सकेला की पटना में भी ईलाज के बेहतर सुविधा उप्लाद्भ बा अगर समय पर अस्पताल पहुंचल जाव।

अमेरिका में भारतीय गणितज्ञ को पुरस्कार

हेलो भोजपुरी–युवा भारतीय गणितज्ञ निखिल श्रीवास्तव ने अमेरिका में 2014 का प्रतिष्ठित जॉर्ज पोल्या पुरस्कार जीता है। वे इस पुरस्कार के संयुक्त विजेता बने हैं। उन्होंने एक ऐसे सवाल को सुलझाया है जिसे लेकर करीब आधी सदी से गणितज्ञ परेशान थे।

श्रीवास्तव ने येल यूनिवर्सिटी से पीएचडी की डिग्री हासिल की और फिलहाल वह बेंगलूर में हैं। श्रीवास्तव उस तीन सदस्यीय टीम के सदस्य थे जिसने केडिसन–सिंगर कंजेक्टर का हल निकालने में सफलता हासिल की है। माइक्रोसॉफ्ट रिसर्च इंडिया से जुड़े श्रीवास्तव ने कहा, बहुत से महान गणितज्ञों के साथ नाम जुड़ना वास्तव में बहुत प्रेरणास्पद और प्रोत्साहित करने वाला है।

विशेषज्ञों का मानना है कि इस कामयाबी का गणित के क्षेत्र पर बड़ा प्रभाव पड़ेगा। उनकी टीम के अन्य दोनों सदस्य एडम डब्ल्यू. मार्कस और डेनियल ए. स्पीलमैन थे। कैडिसन–सिंगर कंजेक्टर को सबसे पहले 1959 में रिचर्ड कैडिसन और इसाडोर सिंगर ने प्रस्तुत किया था। जॉर्ज पोल्या पुरस्कार की शुरुआत 1969 में की गई थी।

आबादी के मामले में दिल्ली विश्व में दूसरे पायदान परादी वाला शहर

हेलो भोजपुरी– भारत की राजधानी दिल्ली विश्व का दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला शहर बन गया है। अब सिर्फ जापान की राजधानी टोक्यो की आबादी ही दिल्ली से अधिक है। इस बारे में संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के मुताबिक 1990 के बाद से दिल्ली की आबादी दोगुनी हो गई है।रिपोर्ट के मुताबिक 2050 तक भारत इस मामले में पहले नंबर पर होगा जहां शहरों में रहने वालों की संख्या सबसे अधिक होगी। शहरी जनसंख्या के मामले में भारत, चीन से भी आगे निकल जाएगा।

यूएन रिपोर्ट के मुताबिक दिल्ली 2030 तक विश्व में सबसे अधिक आबादी वाले शहर के रूप में दूसरे स्थान पर बना रहेगा। उस समय तक इसकी आबादी बढ़कर तीन करोड़ 60 लाख तक पहुंच जाएगी। टोक्यो इस समय विश्व का सबसे अधिक आबादी वाला देश है। इसकी जनसंख्या इस समय 3 करोड़ 80 लाख है। हालांकि वहां की जनसंख्या में गिरावट दर्ज की जा रही है। वर्ष 2030 तक टोक्यो विश्व में सबसे अधिक आबादी वाला देश बना रहेगा लेकिन उसकी जनसंख्या घटकर तीन करोड़ 80 लाख रह जाएगी।

यूएन रिपोर्ट–2014 के मुताबिक सबसे अधिक आबादी के मामले में मुंबई का स्थान विश्व में छठा है, लेकिन 2030 तक इसका स्थान चौथा हो जाएगा। उस समय मुंबई की आबादी दो करोड़ 80 लाख होगी। इस समय मुंबई की जनसंख्या 2.1 करोड़ है। जनसंख्या के मामले में टोक्यो, दिल्ली के बाद शंघाई का स्थान है।

ओबामा का नरेंद्र मोदी को अमेरिका आने का न्योता

हेलो भोजपुरी– अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सितंबर में अमेरिका आने का न्योता दिया है। ओबामा की ओर से निमंत्रण का यह औपचारिक पत्र अमेरिका के उप विदेशमंत्री विलियम बर्न्स ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सौंपा। प्रधानमंत्री उनके बुलावे पर विचार कर रहे हैं। सबकुछ तय होने के बाद पीएम की यात्रा की तारीख तय की जाएगी।

मोदी को लिखे इस पत्र में बराक ओबामा ने 21वीं सदी में भारत–अमेरिका संबंधों को और मजबूत करने के लिए सितंबर में मुलाकात की बात कही है। इस निमंत्रण के लिए प्रधानमंत्री ने ओबामा को धन्यवाद दिया है साथ ही आशा जताई है कि उनकी यात्रा से भारत–अमेरिका के बीच संबंधों को नई गति और ऊर्जा मिलेगी।

इससे पहले विलियम वर्न्स ने कहा कि दोनों देशों के बीच संबंधों को आगे बढ़ाने को लेकर काफी संभावनाएं हैं। उन्होंने कहा कि राष्ट्रपति ओबामा प्रधानमंत्री मोदी के सितंबर के आखिर में व्हाइट हाउस की यात्रा को लेकर उत्सुक हैं।

बर्न्स ने कहा कि यह दोनों देशों के बीच रणनीतिक साझेदारी को आगे बढ़ाने का महत्वपूर्ण मौका होगा। भारत दौरा करने वाले बर्न्स ने नई दिल्ली में विदेश मंत्री सुषमा स्वराज और वित्त मंत्री अरुण जेटली से मुलाकात की।

राजग सरकार खासकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए यह एक महत्वपूर्ण बात है क्योंकि विपक्षी दल के नेता उनपर कटाक्ष करते रहे हैं कि गुजरात दंगे की वजह से अमेरिका ने उन्हें वीजा देने से इन्कार कर दिया था, लेकिन अब अमेरिका मोदी के स्वागत के लिए बाहें फैलाए खड़ा है। नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत में स्थिर और मजबूत सरकार है ऐसे में अमेरिका नई दिल्ली के साथ द्विपक्षीय संबंधों को बेहतर बनाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ना चाहता।

नालंदा विश्वविद्यालय में एडमिशन शुरु, सितंबर से चलेगी पाठशाला

हेलो भोजपुरी–दिल्ली विवि विवाद थमने के बाद अब बाकी विश्व विद्यालयें में भी शांति और शिक्षा का माहौल पटरी पर आ चुका है।

इसी कड़ी में पांचवीं सदी में शिक्षा और ज्ञान का वैश्विक केंद्र रहे बिहार के नालंदा विश्वविद्यालय की गरिमा एक बार फिर लौटने वाली है। इस विश्वविद्यालय में इस वर्ष एक सितंबर से पढ़ाई शुरू होने वाली है। नामांकन के लिए 40 देशों के करीब एक हजार से अधिक छात्रों ने आवेदन दिया है। एक दौर में बिहार में नालंदा विश्वविद्यालय पूरी दुनिया के शिक्षा और ज्ञान का केंद्र था। पांचवीं सदी में एशिया के विभिन्न इलाकों के छात्र इस विश्वविद्यालय में अध्ययन के लिए आते थे परंतु बाद में हमलावरों ने इसे नष्ट कर दिया। अब 21वीं सदी में एक बार फिर इस प्राचीन अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय को जीवित किया जा रहा है। अंतरराष्ट्रीय नालंदा विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. गोपा सबरवाल ने बताया कि शुरुआती शैक्षणिक सत्र एक सितंबर से प्रारंभ हो जएगा। दो विषयों के लिए नामांकन की प्रक्रिया प्रारंभ कर दी गई है। स्कूल ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज और स्कूल ऑफ इकोलॉजी एंड एनवायरमेंट स्टडीज विषयों के स्नातकोत्तर में नामांकन के लिए भारत के ही नहीं, बल्कि अमेरिका, जापान, रूस, इंग्लैंड, श्रीलंका समेत अनेक देशों के 1000 से ज्यादा छात्रों ने आवेदन दिया है। अब तक इन दोनों विषयों में छह अध्यापकों की बहाली हो चुकी है। प्रारंभ में इन दोनों विषयों में 20–20छात्रों का नामांकन किया जाना है। नालंदा अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय की परिकल्पना तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने की थी। डॉ. कलाम उस समय जब जिले में एक रेल कोच कारखाने के शिलान्यास के मौके पर आए थे, तब उन्होंने तत्कालीन रेल मंत्री नीतीश कुमार से नालंदा विश्वविद्यालय को पुनर्जीवित करने की चर्चा की थी। इसके बाद से ही तैयारियां शुरु हुईं व अब शुभ घड़ी आ गई है कि इतिहास के इस कण को वर्तमान में अपनाया जाए

अब मिनट के अंदर मिलेगी चेक बुक, घंटों का काम होगा मिनटों में

हेलो भोजपुरी– बैंकों में नकदी जमा कराने या पैसा निकालने या चेक बुक लेने के लिए अब आपको घंटों या दिनों का इंतजार नहीं करना पड़ेगा। बैंकों में घंटों का काम मिनटों में कराने के लिए रिजर्व बैंक ने सोमवार को सिटिजन चार्टर लागू कर दिया है। इसके तहत बैंकों को ग्राहकों से पैसा जमा कराने या पैसा देने का काम महज 15 मिनटों में करना होगा। यदि कोई चेक बुक मांगता है तो उसे 20 मिनट के भीतर इसे देना होगा। अब तक इसमें कई दिन तक लग जाते थे।

आम जनता को जल्दी से बैंकिंग सेवा देने संबंधी इस चार्टर के साथ केंद्रीय बैंक ने अपने नियमन संबंधी कार्यो को भी एक समयसीमा के भीतर करने का फैसला किया है।

आरबीआई ने नियमन से जुड़े अपने सभी विभागों के लिए निश्चित समयसीमा के भीतर काम करने का निर्देश भी जारी किया है। मसलन, नए निजी बैंकों के लाइसेंस के आवेदन पर 90 दिनों के भीतर फैसला करना होगा। ग्रामीण क्षेत्र में स्थित बैंक शाखा को बंद करने या कहीं और स्थानांतरित करने का फैसला 15 दिनों के भीतर करना होगा। इस तरह के नियमन से जुड़े अन्य सभी विभागों के लिए समयसीमा तय कर दी गई है। ये कदम आरबीआइ ने वित्तीय क्षेत्र में कानूनी सुधार आयोग एफएसएलआरसी, की रिपोर्ट के आधार पर उठाए हैं। एफएसएलआरसी ने वित्तीय क्षेत्र के सभी नियामकों को निश्चित समयसीमा के भीतर अपना काम करने का सुझाव दिया था और कहा था कि वित्तीय सेवाओं के लिए भी समयसीमा तय होनी चाहिए।

आरबीआई के इस चार्टर के मुताबिक एक घंटे के भीतर बैंकों को डिमांड ड्राफ्ट बना कर देना होगा। विदेशी मुद्रा में बैंक खाता खोलने के आवेदन पर 60 दिनों के भीतर फैसला करना होगा। इसी प्रकार विदेश में बीमा पॉलिसी खरीदने के आवेदन पर सात दिनों के भीतर निर्णय करना होगा। राज्य व केंद्रीय सहकारी बैंक के लाइसेंस के आवेदन पर 30 दिनों के भीतर फैसला करना होगा। बैंकों की तरफ से बीमा कारोबार में उतरने के फैसले पर 30 दिनों के भीतर निर्णय करना होगा।

धामो में धाम शिव का अरेराज धाम है...

हेलो भोजपुरी - हेलो भोजपुरी में राउर स्वागत बा।

राजेश मिश्रा – जी प्रणाम ।

नाम– राजेश मिश्रा
सुपुत्र– श्री हरिहर मिश्रा
जन्म स्थान– मिश्रौली(अरेराज), जिला–पूर्वी चंपारण ,बिहार
शिक्षा– प्राथमिक शिक्षा माध्यमिक विद्यालय मिस्रावालिया से भील. आगे मैट्रिक आ ईन्टर हम राज इंटर कालेज बेटियां से कीनी. डॉ. भीमराव आंबेडकर उनिवेर्सिती से हम स्नातक कईनी

हेलो भोजपुरी - गायकी के शुरुआत कब से भईल..?

राजेश मिश्रा- अगर हम इ कहीं की गायकी हामरा दिलो–दिमाग पर हमेशा छवले रहे लईकईयें से त गलत ना होई हम संगीत के बहुत पुरान आशिक रहनी। जहाँ कहीं भी संगीत के धुन गूंजे हम आपन सारा काम–काज छोड़ के उहां फौरन पहुँच जाईं। एकरा संगे–संगे स्वर्गीय गायत्री ठाकुर , राजन साजन मिश्रा आ भरत शर्मा जी के गाना सुन–सुन के हम गावे के शुरुआत कईनी। जब हम स्कुल में पढ़त रहनी त ओह्बेरा भोजपुरी के एतना फैलाव ना रहे। तबहूँ हमनी के भोजपुरी के पसंद करीं सं । आज भी हमरा इयाद बा की ओह्समय एगो गाना खूब हिट भईल रहे "**गंगा किनारे मोरा गाँव हो घरे पहुंचा द देवी मईया** ...

ई गीत हमरा दिल के छू गईल। एह गीत के स्कुल में आ गाँव के छोट–मोट प्रोग्राम में भी गावे के मौका मिलल। धीरे–धीरे हमरा गायकी के लोग पसंद करे लागल। आ हमार पूरा तरे से झुकाव गायिकी के तरफ हो गईल। पढ़ाई–लिखाई के संगे संगे गावे के सिलसिला भी चले लागल। एह तरे आज हम रउरा सामने बानी।

हेलो भोजपुरी-गायकी के एह दौर में घर-परिवार के केतना साथ मिलल..?

राजेश मिश्रा– सांच कहीं त हमरा घर के केहू ना चाहत रहे की हम गायक बनीं , खासकर हमार बाबूजी ,जे आज अवर लाईन में कार्यरत बानी , उहां के ई ईच्छा रहे की हम पढ़–लिख के कवनो बड़ अधिकारी बनी। एहिसे उहां के लगातार हमार विरोध करीं। उहां के नजर में गायक खाली नचनिया–बजनिया रहे।

बाकिर हम जब आगे बढे के प्रयास कइनी त हमार बड़का भईया आ दादी के सपोर्ट मिलल। आज हम जवना पायदान प खड़ा बानी इ हमरा स्वर्गीय दादी के देनं ह हमरा अफसोस बा की आज हमार दादी एह घड़ी में हमरा सामने नईखी।

हेलो भोजपुरी- भोजपुरी में बढ़त अश्लीलता के बारे में का कहब..?

राजेश मिश्रा– भोजपुरी गीत ,संगीत से जुड़ल सभका से आ दर्शक लोग से भी हम इहे कहब की नजरिया बदलीं नजरा अपने आप बदल जाई. अगर दर्शक आ श्रोता एकहू अश्लील गीत आ फिलिम ना पसंद करे त अश्लील गीत आ फिलिम बनावे वाला लोग एक न एक दिन अपने आप बंद कर दिहे। हम खाली एतने कहब की अश्लील ना सुनी ना सुने दिहिं, ना देखीं आ ना देखे दिहिं। हमनी के मिलके एगो सभ्य समाज के निर्माण करीं।

हेलो भोजपुरी- राउर पहिला एल्बम कब बाजार में आईल आ अबहिंले केतना एल्बम आ चुकल बा..?

राजेश मिश्रा– पहिला एल्बम 1199 में **JMC** ज्योति म्यूजिक कंपनी से निकलल जवना के नाम रहे– **एक बेर मुस्का द**। एह एल्बम के सभ गीत संतोष भटनागर जी के लिखल रहे जवना के संगीत देले रहनी हमर गुरु श्री मोहन लाल श्रीवास्तव जी। एह

एल्बम के बहुत सफलता मिलल। सामाजिक गीत के चलते इ एल्बम लोग के काफी पसंद आईल। एकरा बाद हम पीछे मुड़ के ना देखनी। एकरा बाद बाजार में बहुत एलबम आईल जवना में जेएमसी, एंगल म्यूजिक से हमार भोजपुरी देवी एल्बम सबसे सुन्दर माँ आईल, जवना में एगो गाना रहे–**छोड़ी के आजा पहाड़ शेरावाली माँ...** एह एलबूम के लोग खुबे पसंद कइल। अबही सावन के समय बा सभे बाबा भोले के रंग में रंगल बा एही सभ के धयान में राख के हमार कांवर गीत के एल्बम आ रहल बा जवना के नाम बा ,**दीवाना भोले का' , देवघर का नजर आ अरे राज घुमा दी'** ।

एह एलबूम में एगो गाना बा जवन हमरा उम्मीद बा की दर्शक सभे के पसंद आई...**सुनिए सुनाता हूँ सच्ची दास्ताँ है, धामो में धाम शिव का अरेराज धाम है...**

एह गाना के संतोष भटनागर जी लिखले बानी। सावन के एह पावन महिना में हम रउरा सभे से इहे बिनती करब की आपन पावन प्यार आ दुलार एही तरे बनवले राखीं। जय भोले नाथ।

हेलो भोजपुरी- हेलो भोजपुरी पत्रिका खातिर का सन्देश बा..?

राजेश मिश्रा–सबसे पाहिले हेलो भोजपुरी के पूरा टीम के सभ भोजपुरिया प्रेमी लोग के सावन के पावन महिना में हार्दिक शुभकामना बा। भोजपुरी के प्रचार प्रसार आ आगे बढ़े के जवन बीड़ा हेलो भोजपुरी के संपादक राजकुमार अनुरागी जी उठवले बानी उहां के एह नेक प्रयास खातिर बहुत बहुत आभार बा। पाठक वर्ग से हम इहे कहब की भोजपुरी के एह सुन्दर आ रोचक, ज्ञान वर्धक पत्रिका के खरीद के जरुर पडढ़ीं आ आपन सुझाव दिहिन ताकि एह पत्रिका के आउर उंचाई मिले. नमस्कार जय भोजपुरिया माटी आ जय भोजपुरी प्रणाम.

* * *

पसंद

गायक– स्व. गायत्री ठाकुर जी, भरत शर्मा,
राजन–साजन मिश्रा व उदीत नारायण
गायिका– लता मंगेशकर, शारदा सिन्हा
अभिनेता– स्व. राजकुमार ,कुनाल सिंह व मनोज तिवारी
अभिनेत्री–जया प्रदा, जया बच्चन, हेमा मालिनी व रिंकू घोष
फिलिम– नदिया के पार, गंगा मईया तोहे पियरी चढईबो व जंजीर
खिलाडी– सचिन तेंदुलकर, सहवाग व कपिलदेव
शहर– पटना, दिल्ली
खान–पान–दाल भात तरकारी
पहनावा– कुरता , वमर्दानी व गेरुआ वस्त्र.

बिदाई के अवसर पर बेटी माई से

कहे के त रहलीं कहहीं नाही पवलीं
उघार बाटे जिनगी हे मोरी माई ।

चहतू त गरभे में हमके गिरवतू
दुघवे में जहर तू हमके पिअवतू
ओद सुखल गोदिये में कइके जियवलू
उपहार बाटे जिनगी हे मोरी माई ।

भइया के संगे संगे हमके पढ़वलू
गियान गुन घियान घरम सबहीं सिखवलू
हमके उठाय उपरां हथवा लगवलू
उपकार बाटे जिनगी हे मोरी माई ।

अमवा के संगहीं तुलसी ह रोपलू
सुग्गा अ चिरई देखि–देखि के अघइलू
दुनिया में नॉव हमार कारन तू भइलू
बहार बाटे जिनगी हे मोरी माई ।

पललू जे गाई दुघवा पियहीं न पवलू
जिनगी के थाती आपन दान देइ दिहलू
जिनगी से जिनगी के दियना जरईलू
उजियार बाटे जिनगी हे मोरी माई !

जोग बर हेरि के तू हमके हेरईलू
भोरे–भोरे जईसे ह गंगा नहईलू !
सेनुरवा लिलाट "मञ्जरी" के ह ई दिहलू
मल्हार बाटे जिनगी हे मोरी माई !

मञ्जरी पाण्डेय

'बाबा रंगीला' के जरिये मेरा मकसद किसी को बदनाम करना नहीं - अनुराग मिश्रा

lejthr – कई धारावाहिकों और फिल्मों में अभिनय कर चुके अनुराग मिश्रा बतौर निर्देशक भोजपुरी फिल्म 'बाबा रंगीला' के जरिये निर्देशन के क्षेत्र में कदम रख रहे हैं। उ.प्र. के बनारस में जन्मे अनुराग मिश्रा बचपन से ही अभिनय और निर्देशन से प्रेरित रहे हैं। हाल ही में उनसे 'बाबा रंगीला' को लेकर बातचीत हुई। इस फिल्म का उन्होंने नृत्य निर्देशन भी किया है। पेश है उनसे हुई बातचीत के कुछ खास अंश–

gyk Hkkstiqjh& ^ckck jaxhyk* fdl rjg dh fQYe g

अनुराग– यह फिल्म ढोंगी बाबाओं पर आधारित है। इस फिल्म में दिखाया गया है कि किस तरह से ढोंगी बाबा भोली भाली जनता को अपने झांसे में लेकर उनका शोशण करते हैं। यह फिल्म तथाकथित बाबाओं–तांत्रिकों की कई रहस्यमयी करतूतों का पर्दाफाश करेगी।

gyk Hkkstiqjh& bl fo"k; ij gh fQYe cukus dh D;k lksph vkius

अनुराग– देखिये, मेरा मकसद किसी बाबा या संत को बदनाम करना नहीं है। हमारा देश सनातन काल से ऋशि मुनियों का देश रहा है, वे हमारे मार्गदर्शक रहे हैं। मैं सिर्फ उन आडम्बरों का विरोधी हूं जहां जनता को गुमराह किया जाता है।

gyk Hkkstiqjh& vkxs fdl rjg dh fQYesa cuk;saxs vki

अनुराग– जो विशय मुझे आकर्शित करेगा। हमारे आस पास बहुत सारी कहानियां घूमती रहती हैं। फिलहाल मैं एक लव स्टोरी पर काम कर रहा हूं। इसके अलावा मेरी कुछ किताबें भी आने वाली हैं।

gyk Hkkstiqjh& vc vki funsZ'kd cu x;s g] vfHku; dks ckjs esa vc vkidh D;k lkp g

अनुराग– अभिनय तो मेरा जुनून है, उसे कैसे छोड़ सकता हूं। कोई ऐसा विशय आया जिसे लोग परिवार के साथ बैठ कर देख सकें तो ज़रूर करूंगा।

gyk Hkkstiqjh& ^ckck jaxhyk* dks ckjs esa vkSj D;k crkuk pkgsaxs

अनुराग– इस फिल्म का विशय बहुत अच्छा है, दर्शक इसे देखकर जितना मनोरंजन करेंगे उतना ही जागरूक भी होंगे। फिल्म के निर्माता विनोद कुमार चौरसिया ने इसे बनाने में किसी भी तरह का कोई समझौता नहीं किया। विराज भट्ट, सुशील सिंह, अंजना सिंह, तनुश्री सभी कलाकारों ने काफी सहयोग किया। सबके साथ काम करने का बड़ा अच्छा अनुभव रहा।

इस फिल्म का विशय बहुत अच्छा है, दर्शक इसे देखकर जितना मनोरंजन करेंगे उतना ही जागरूक भी होंगे। फिल्म के निर्माता विनोद कुमार चौरसिया ने इसे बनाने में किसी भी तरह का कोई समझौता नहीं किया। विराज भट्ट, सुशील सिंह, अंजना सिंह, तनुश्री सभी कलाकारों ने काफी सहयोग किया। सबके साथ काम करने का बड़ा अच्छा अनुभव रहा।

* * *

‘आज का फैशन ट्रेंड’ फिल्म के प्रमोशनल सांग का फिल्मांकन

lej thr – स्टूडियो साउण्ड एण्ड विजन द्वारा प्रस्तुत जेड फिल्म के बैनर तले बनी हिन्दी फिल्म ‘आज का फैशन ट्रेंड’ नवयुवक–युवतियों के लिए एक उद्देश्यपूर्ण फिल्म है। पिछले दिनों फिल्म का एक प्रमोशनल सांग नैना खेरकर और अंकिता तरे पर नृत्य निर्देशक राहुल कांबले ने गोराई और मुंबई के अन्य स्थलों पर फिल्माया। यह फिल्म शीघ्र ही सर्वत्र प्रदर्शित होगी।

ग्लैमर की दुनिया से साक्षात्कार कराती निर्माता जगन्नाथ एस. आर. और मो. जियाउल्लाह की इस फिल्म को जिया खान ने निर्देशित किया है। इस फिल्म में एक महत्वाकांक्षी मध्यमवर्गीय युवती की ग्लैमर की दुनिया में एंट्री और उसके संघर्ष यात्रा का बड़ा बेबाक चित्रण किया गया है। उसके मन में उपजी प्रसिद्धि पाने की लिप्सा को क्रमागत ढंग से अग्रसर होते दिखाया गया है। प्रोफेशन में किस तरह की प्रतिद्वंदिता, ईर्ष्या होती है। इस सब का खुलासा इस फिल्म में किया गया है। इस फिल्म के मुख्य कलाकारों में गगन निमेश, अरिश्टि सरकार, शेफाली, पूजा, ऐश्वर्या, समीक्षा भट्ट और आरिश वर्मा हैं। फिल्म के संगीतकार लव कुमार व कैमरामैन अरुण एन. है।

‘‘बाज गईल डंका’’ का पोस्ट प्रोडक्शन तेज

फाइनल पैच वर्क शूटिंग के साथ दुर्गा फिल्म्स प्रोडक्शन के बैनर तले बन रही भोजपुरी फिल्म ‘‘बाज गईल डंका’’ की शूटिंग पूरी हो गई है और इन दिनो मुंबई में फिल्म का पोस्ट प्रोडक्शन तेजी से चल रहा है। अभय सिन्हा एवं सुनीला मिश्रा द्वारा प्रस्तुत इस फिल्म के निर्माता संजय कुमार मिश्रा तथा लेखक–निर्देशक रवि भूशण हैं।

इस फिल्म की कहानी बिहार और नेपाल के सीमांत क्षेत्रों में व्याप्त अपहरण और अवैध हथियारों की तस्करी को आधार बनाकर बनाया गया है। इस फिल्म में पवन सिंह पुलिस इन्स्पेक्टर की भूमिका में हैं और विराज भट्ट ने एस.पी. का किरदार निभाया है जो बाद में किसी परिस्थितिवश कम्पलसरी रिटायरमेंट लेते हैं और पवन सिंह के साथ मिलकर समाज में फैले अत्याचार और अनैतिक कृत्य का खात्मा करते हैं।

पवन सिंह और विराज भट्ट के अलावा इस फिल्म में काजल राघानी, नवोदित सर्वजीत सिंह, सोम भूशण, आनद मोहन, माया यादव, अजय कुमार सिंह ‘मिंटू’, राहुल कुमार, संजय वर्मा, मास्टर गुल्लू, मास्टर प्रदुमन व अवधेश मिश्रा की मुख्य भूमिका है।

इस फिल्म के संगीतकार मधुकर आनंद, गीतकार प्यारेलाल यादव ‘कवि’, प्रदीप पाण्डे, आर. आर. पंकज एवं रवि भूशण, कोरियोग्राफर संजय कोर्बे एवं राम देवन, एक्शन रियाज सुल्तान तथा कैमरामैन आर.आर. प्रिंस हैं।

उम्मीद बहुत है 'बिहारी बन गईल हीरो' से -बॉबी किशन

lej thr– आपको इस बात से भले 'चला मुरारी हीरो बनने' का असरानी याद आ रहा हो, पर यथार्थ में पूरनपुर (पीलीभीत) के बॉबी किशन ने इसे सच कर दिखाया है। तराई फिल्म विकास समिति के मंच से अभिनय आरंभ करनेवाले बॉबी ने जब 'हादसा' शीर्षक से एक टेली फिल्म की, तभी उनके अन्दर का अभिनेता कुलबुलाने लगा था। फिर लखनऊ दूरदर्शन के लिये 'बोझ' और 'वजह' धारावाहिकों में काम किया। फिर दोस्तों ने कहा, हीरो बनना है, तो बाम्बे जा। और बॉबी फिर मुम्बई आ गये। यहां पर उनकी मुलाकात निर्देशक विवेक श्रीवास्तव तथा अभिनेत्री अंजना डॉब्सन से हुई और नवोदित बॉबी किशन बन गये भोजपुरी फिल्म ''बिहारी बन गईल हीरो'' के हीरो।

किशन स्वरूप सक्सेना के शिश्य बॉबी ने ''बिहारी बन गईल हीरो'' में बबलू नामक एक युवक की भूमिका निभायी है, जो फिल्मोनिया से ग्रसित है। वह सुपर एक्ट्रेस रोशनी का ब्लाइंड फैन है। संयोगवश रोशनी शूटिंग के लिये बबलू के गांव आती है। बबलू की बांछें खिल उठती हैं। नाटकीय घटनाक्रम में वह रोशनी से जुड़ जाता है, ब्वाय बनकर। फिर फिल्मी लटके–झटके और हैप्पी एंड। बॉबी के अनुसार, ''बिहारी बन गईल हीरो'' एक साफ–सुथरी फिल्म है और यह ज़रूर हिट होगी। इसके अतिरिक्त बॉबी की जो फिल्में आनेवाली हैं, उनके नाम हैं–'सेनुर पहिनब तोहरे नाम के', 'राजा परदेसी' और 'बैण्ड बजा देब'।

जोरों पर है ''इ कईसन प्यार'' का पोस्ट प्रोडक्शन

हेलो भोजपुरी–शिव फिल्म प्रोडक्शन कार्पोरेशन के बैनर तले बनी भोजपुरी फिल्म 'इ कइसन प्यार' का पोस्ट प्रोडक्शन इन दिनों पी.एन.पी. स्टूडियो में जोर शोर से चल रहा है। इस फिल्म के निर्माता उमेश चन्द्र एवं निर्देशक निहाल सिंह हैं। फिल्म के लेखक केशव राठौर, संगीतकार आशिश–डोनान्ड, गीतकार आतिश जौनपुरी व शेखर मधुर, एक्शन जॉनी, संकलन विनोद चौरसिया तथा कैमरामैन त्रिलोकी चौधरी हैं। इस फिल्म में अंजना सिंह, शिवम तिवारी, नेहा तिवारी, संजय पाण्डे, समर्थ चतुर्वेदी, जे. नीलम, संजय वर्मा एवं डांसिंग क्वीन सीमा सिंह हैं।

ऊंच नीच का प्रेम के बंधन में पिरोई गई यह फिल्म सामाजिक दायरे पर एक प्रहार है। फिल्म की नायिका बिन ब्याहे जब मां बन जाती है तो उसके पिता यह सदमा बर्दाश्त नहीं कर पाते और स्वर्ग सिधार जाते हैं। फिल्म की नायिका को जबरदस्त झटका तब लगता है जब फिल्म के नायक की मां उसकी शादी गांव के एक दबंग की बहन से करवा देती है। ऐसे में नायिका को गांव छोड़ने पर विवश होना पड़ता है। आगे देखना बड़ा दिलचस्प यह होगा कि सच्चे प्यार की जीत होती है या सच्चा प्यार अधूरा रह जाता है?

An overview of Bhojpuri Language & Literature

Rajesh Kumar 'Manjhi'

It is well known that Bhojpuri serves as a regional language which is spoken in the eastern and north-central parts of India. It is spoken in the western part of Bihar, the north-western part of newly formed Jharkhand and the poorvanchal region of UP, as well as in neighbouring region of southern plains of Nepal. Not only is this Bhojpuri spoken as a language in Mauritius, Fiji, Guyana, Suriname, Tobago & Trinidad. As for the decision of the Indian domain, including the government of India, while observing census had disagreed and had deemed Bhojpuri to be a dialect of Hindi. However, presently, the government of India has contrived to grant Bhojpuri a `statutory` status as a national scheduled language. Bhojpuri goes into halves when sharing vocabulary with Sanskrit, Hindi, Urdu and other Indo-Aryan languages of northern India. Bhojpuri and several intimately related languages, including Maithili and Magadhi, are together known as the `Bihari languages`. They are part of the Eastern Zone group of Indo-Aryan languages, which also includes Bengali and Oriya. As such, Bhojpuri literature bears an uncanny amalgamation of these various ancient lineages and their derived languages, unifying many literatures from its adjoining states.

It is also notable that there exist numerous dialects of Bhojpuri, encompassing three or four in eastern Uttar Pradesh single-handedly. The scholar and a multilingual persona Mahapandit Rahul Sankrityayan actually had had written eight plays in Bhojpuri. There have existed other composers like Prof Shatrughan Kumar, Dr Gorakhprasad Mastana, Nawal Kumar Singh Nishant, Santosh Patel, Rajesh Kumar Manjhi, Mahendra Prasad Singh, Ganga Prasad Arun, Jauhar Shafiawadi and many others who are presently penning in the language both in prose and poetry to take Bhojpuri literature to further unbelievable heights.

It is remarkable that Bhojpuri`s `gradually gathering` impact upon Indian literature is evident in that it had turned into one of the founding ground works of the maturation of the official language of Independent India, Hindi, in the past century. Bhartendu Harishchandra, who is hugely venerated as the `father of literary Hindi`, was profoundly influenced by the tone and style of Bhojpuri in his native region. Further maturation and germination of Hindi was taken up by high-flying laureates such as Mahavir Prasad Dwivedi and Munshi Premchand from the Bhojpuri speaking region. The trailblazing Dr. Krishna Dev Upadhyaya from Ballia district of Uttar Pradesh virtually had committed sixty years in researching and cataloguing Bhojpuri literature in the form of folklore. Dr. H S Upadhyaya had authored the book Relationships of Hindu Family as portrayed in Bhojpuri folksongs (1996). Together, they have catalogued more than thousands of Bhojpuri folksongs, riddles and proverbs from the umpteen districts, Purvanchal Uttar Pradesh, Bihar, Jharkhand and Chotta Nagpur districts near West Bengal. Bhojpuri literature has always persisted to be contemporary in fashion, style and mode. The literature had served as more of a body of folklore with folk music and poems persisting throughout. Literature in Bhojpuri in written format had begun in the early twentieth century.

We can forget that during the rule of British Empire in India, then known as the `Northern Frontier Province Language,` Bhojpuri language had adopted a patriotic tone and after Independence it turned into a ``language of the community`. During the later periods, following the dispirited and depressed economic development of the Bhojpuri speaking region, the literature in Bhojpuri was more tilted and inclined towards the humanitarian sentiments and conflicts and crusades of life. In the modern day era, Bhojpuri literature, folklore, art and culture is marked by the stellar presence of writers, poets, politicians and actors that have lent it an innovative and novel dimension, a kind of `revivification`. Notable contributors to this trend consist of Hira Dom, Mahender Misir , Bhikari Thakur, and others in India.

It also relevant to say that the Bhojpuri-speaking region has been historically served with its rich and affluent tradition of creating leaders for building post-independence India, just like the celebrated and respected first President of India, Dr. Rajendra Prasad. Bhojpuri

literature was also instrumental in possessing further more personas, following the first President, as in several eminent politicians and humanitarians like Dr. Krishna Dev Upadhyaya, who never did fall short of `intellectual prominence`, which is evident in its literary masterworks. Bhikhari Thakur, acknowledged as the `Shakespeare of Bhojpuri`, has also dished out theatre plays, including the classics of Bidesiya. The trailblazer Dr. Krishna Dev Upadhyaya from Ballia district devoted 60 years to researching and cataloging Bhojpuri folklore. Dr. H. S. Upadhyaya wrote the book Relationships of Hindu family as depicted in Bhojpuri folksongs (1996). Together they have catalogued thousands of Bhojpuri folksongs, riddles and proverbs from the.

Now a days Bhojpuri literature is marked by the company and presence of writers and poets like Prof Shatrughan, Dr Gorakhprasad Mastan, Naval Kr Singh Nishant, Rajesh Kumar Manjhi, Pramod Tiwari, Santosh Patel and Raj Kumar Prasad, Editor of the popular Bhojpuri magazine Hello Bhojpuri publishing from New Delhi. By their literary works they are trying to express the deepest fillings of Bhojpuri speaking society. The formation of Maithili-Bhojpuri Academi in New Delhi is also helping in the development of Bhojpuri language and literature.

It is obvious that Bhojpuri-speaking region, due to its rich tradition of creating leaders for building post-independence India such as first President Dr. Rajendra Prasad followed by many eminent politicians and humanitarians like Dr. Krishna Dev Upadhyaya, was never devoid of intellectual prominence which is evident in its literature.

We have to accept that Bhojpuri became one of the bases of the development of the official language of independent India, Hindi, in the past century. Bhartendu Harishchandra, who is considered the father of literary Hindi, was greatly influenced by the tone and style of Bhojpuri in his native region. Further development of Hindi was taken by prominent laureates such as Mahavir Prasad Dwivedi and Munshi Premchand from the Bhojpuri-speaking region. Bhikhari Thakur, known as the Shakespeare of Bhojpuri, has also given theater plays including the classics of Bidesiya. Pioneer Dr. Krishna Dev Upadhyaya from Ballia district devoted 60 years to researching and cataloging Bhojpuri folklore. Dr. H. S. Upadhyaya wrote the book Relationships of Hindu family as depicted in Bhojpuri folksongs (1996). Together they have cataloged thousands of Bhojpuri folksongs, riddles and proverbs from the Purvanchal U.P, Bihar, Jharkand and Chotta Nagpuri districts near Bengal.

As far newness in literature is concerned, Bhojpuri literature has always remained contemporary. It was more of a body of folklore with folk music and poems prevailing. Literature in the written form started in the early twentieth century. During the British era, then known as the "Northern Frontier Province language", Bhojpuri adopted a patriotic tone and after independence it turned to community. In later periods, following the low economic development of the Bhojpuri-speaking region, the literary work is more skewed towards the human sentiments and struggles of life.

* * *

Poem

Eternal Power....

Eternal power, love and care's shower
Harder than a diamond, softer than a flower
Clamorous like the sun, composed like moon
She is a woman - the fire in the fuel

A mother, a wife, a sister
The blessing, the strength, the acquitter
Happiness maker, problems taker
Nation's strength, home's best friend
"Start from a scratch" is how she inaugurates
"We can go to the top" is how she motivates
Takes good to the top and bad to the ground
She is a woman - the vibes in the sound

But do we take her dreams to the top?
Do we let her happiness hop?
Do we respect her love and care?
Doesn't she deserve it for what she shares?

We live in a nation where we call it our mother
But do we take a woman's care? Do we even bother?
No is the time, when else will it come?
Stand up and do it, dont be numb!
Respect her, love her , do all good that you can do
For she is a woman - the goodness in the blues.

Anchal Rani

A.R. Films
&
Entertainment India
FILMS
Arif Ansari
(Producer)
नये गायक कलाकार फिल्म व एलबम
बनवाने के लिए सम्पर्क करें
Regd. Off. : F-6 H.No. 49, Sultanpuri, New Delhi
E-mail : arfilms786@gmail.com Mob. : 09871529901, 09161426366

MS
M S INSTITUTE &
COUNSELING CENTER
(A Name of Confidence)
1 वर्ष में Graduatin* करें
UGC. AICTE, DEC & GOVT. APPROVED
COURSES
B.A., B.Com, B.Sc.,
BBA, BCA, B.Tech.,
LLB, LLM, M.A.,
M.Com, M.Sc., MBA,
MCA, M.Tech, M.Phill
Ph.D., JBT, B.Ed., &
Diploma, ETC.
10वीं, 12वीं, CBSE/OPEN से करें
C-83, PREM VIHAR, NANGLI DAIRY, NAJAFGARH,
NEW DELHI-43, 9540908200, 8010603484

श्री लक्ष्मी आर्ट
डिजिटल स्टूडियो
सुंदर व आकर्षक
फोटो के लिए
सम्पर्क करें।
प्रो. सुरेश पंडितः 09470656697
मिडिल स्कूल मोड़ से उत्तर
जनता बाजार सारण (बिहार)-841224
फोन : 06155-261456, 09931740532
ई-मेल : shrilaxmiart7@gmail.com

Starts With
Website
Rs. 4999/- Only

About us

Stationed in New Delhi, Daana Software Developers is the home to plethora of affordable web hosting services to enhance your medium and large scale businesses. We make sure that our innovative services evolve with your business needs, so that you gain the optimum. Our team of extremely proficient IT professional will efficiently guide you through the latest IT solutions to meet your business needs.

WEB SOLUTION

SOFTWARE DEVELOPMENT

DOMAIN, WEB HOSTING

GRAPHICS SOLUTION

ONLINE DIGITAL MARKETING

BULK E-MAILING

Daana Software Developers:

F-103, First Floor, Plot No :3, Sudeep Plaza, Pocket-4 Market, Sec-11, Dwarka, New Delhi-75

Skype : daanaonline | BBM : 2B1A45D6 | Sales IVR: +91-9810081084 | Email:info@daanaonline.com